

मनुष्य परो स चमार होता है न कि जम स। यह कहकर भिक्षु प्राग बढ़ चला।

यदि तूने मुझे धक्का दिया तो तूरो जान स भूगा। —सज्जन ने चिल्लाकर कहा। स्तनी ही देर में लामडा का गवन वाला दमाराभ आता महंग और भया आसि वह रामनिवास में अपना जगह स नीचे फूटकर भिक्षु के रास्ते में आ खड हुआ। झट्ट उन लोग के निश्चय की दृष्टि का जानता था। उन यह भा पता था कि अगर वह भाग बढ़ गया तो उनमें लड़ने का हिम्मत न हाथी पर दखना क्या है कि उसका माँ जिमन लिए उसने यह सब करने का साहस किया था पहुँचे ही पाछे मुट चुकी था और उा पुकार रही था— वग भिक्षु—बेठा सोर था।

पर भिक्षु यह गावन गया कि आज तक तो उनमें यं अपमान सहा नया तो आज हा क्या सह ? उन्होंने उन गाँव का मिट्टा पर चलने में मना नहा किया चाह बट मन्दिर में बसा नहा जा सका और उसका माँ क्या दुःख उठाए ? वग हमलिए कि उसने मदक के लिए पत्थर लाए हैं ? अब उनमें निश्चय कर लिया कि मदक बनाएगा चाह दूसरे उगकी सन्धयता करें या न करें। उसका प्रवृत्ति में हठ का जो तत्त्व था और जो उनमें स्पष्टि जावन के तुम हा था उनमें उसका हाथ-परा का एक भजाय मृगतापुन गाहा में भर दिया। वह भजन घड में अपने आपका भाग घकन्ता रहा और वे सब दान हाथी में उा पाछे घकल रहे थे।

मर बट ! —उरमा चीग पहा जग हा उनमें दगा कि भिक्षु न उनका दृष्टि और वे सब उा घकल रहे हैं।

धुनाहि सबरगार का मदका जिमन उम्मा का भाग अपने धौगन में न-ब-तुन सी था—गोबर बाहर था गया। डोटकर आता—'तू काहे का न-न कर रही है ?—तुझे क्या पता चल जाएगा कि क्या हा रहा है। वे हम मन्दिर में नहीं जान देंगे और भिक्षु पीछे लौटगा

नही। —लक्ष्मण यह कहकर अपने पिता को बुलाने चला गया। तब तब पक्वोडा जसी नाक वाला लक्ष्मणसिंह घटनास्थल पर पचा भिक्षु सजातीय हिन्दुओं को ऊँचे पत्थर की चौकी तक सज्जद करा था और यह सब उनके पास और तमाकों के आक्रमण के हात हुए भी हुआ। तब दर धूलिसिंह रक्षकों के पास खड़ा हुआ इस सब सच को सब भुक्त सा देखने लगा। भिक्षु का माँ ने उससे आत्मा स्वर में कहा— इन्हें अलग कर दो वरना ये उसे मार डालेंगे। उसे क्षमाकर दो क्योंकि वह मरे ही कारण नष्ट रहा है।

पक्वोडा नाक वाले ने कहा— कराहना बन्द कर और वह मंदिर के पत्थर की ओर चित्नाता हुआ आगे बढ़ा।

आमसूलागा। सज्जन ने चीखकर उत्तर दिया। अपने सरक्षित को वापिस बुलाते— उस गौ भक्षक चमार की। सड़क पर पत्थर कूटने के लिए भेज दे इसको।

धूनीसिंह ने बड़बड़कर कहा— अरे दुष्टा! और उसकी बड़बड़ से उन सब के चेहरो का रंग बदल गया। धलीसिंह ने कहा— भिक्षु गौ आ— इनकी जान मत मत ये सब कायर हैं। चार चार अकेल का मुकाबला करते हैं— और फिर मार खाते हैं। आ जा हम वस आ हो सब जहर बनाएंगे।

लक्ष्मण बोली— भिक्षु बटा— यदि तू इहं प्रम करे तो ये भी स्वीकार करेंगे कि इन लोगों ने कितना अनुचित व्यवहार किया है। यह सुनकर जम हा भिक्षु पापल के पास से वापिस लौटने लगा लाल टमाटर जस मुह वाले जमींदार ठाकुरसिंह की तीखी और साफ आवाज सुनाई दी—

‘टहर जाओ दोना— न्नि-दहाड़े के चोरो। यह गाँव घरोहर की जो मरे कृष्ण का देवताभा से मिनी थी और तुमने इसे खान से पत्थर चुराकर दूषित कर दिया।

‘यह भिक्षु अपनी माँ के साथ मंदिर को अपवित्र करने वाला

या । मन्त्र न मुचिन्तित्वा ।

तस्मात्तु नूनमिदं न जायते मृतमस्ति नैव परं न जायते वा
 उत्तरं नित्यं— नैव मृतं कश्चिद् न तु मृतं वातं कश्चिद् वाहता—कश्चिद्
 तु न जायते वा—अथ तु न नित्यं वा हा हा वा वातं वा
 हा ? मृतं वा कश्चिद् नैव वा उत्तरं दत्तम् ।”

निम्न क मृतं न धूम्रमिदं वा पक्षी वा वाहता न कश्चिद् प्रति जा
 मीत्यनन्तरं कश्चिद् न नित्यं वा हा हा वा वातं वा हा वा वातं वा

नहीं। — तदमण यह कहकर अपने पिता को बुलाने चला गया। अब तक पक्की जमा नाक वाला तदमणमिह घटनास्थल पर पचा भिक्षु सज़ातीय हिंदुआ को ऊँचे पत्थर का चौकी तक सड़क चला था और यह सब उनके घसे और तमाओ के आक्रमण के डान हुए भी हुआ। लवर धार धूलोमिह लदमी के पास खड़ा हुआ उस सब मघप का मत्र-मुग्ध सा देखने लगा। भिक्षु का मा ने उससे आत् स्वर में कहा— यह अलग कर दो वरना य उसे मार डालें। उस क्षमाकर दो क्याकि वह मेरे ही कारण नड रहा है।

पक्की नाक वाले ने कहा— बरान्ना बदकर और वह मंदिर के पत्थर की और चिल्लाता हुआ भाग बना।

धो मूख लागो। सजनू ने चीखकर उत्तर दिया। अपने सरक्षित को वापिस बुला न— उस गौ मदाक चमार को। सड़क पर पत्थर कूटने के लिए भेज दे उसको।

धनीमिह ने बड़बड़कर कहा— अरे दुष्टा। और उसकी बड़बड़ से उन सब के चेहरों का रंग बदल गया। धलीसिंह ने कहा— भिक्षु नोट आ— उनकी जान मत ल य सब कायर हैं। चार चार अकेल का मुकाबला करते हैं— और फिर मार खाते हैं। आ जा हम कस भी हो मडक जफ़र बनाएंगे।

लम्मा वाली— भिक्षु बटा— यदि तू यह प्रभ कर तो ये भी स्वीकार करेंगे कि इन लोगों ने कितना अनुचित व्यवहार किया है। यह सुनकर जम हा भिक्षु पापन के पड से वापिस लौटने लगा लाल टमाटर जस मट्ट वाले जमींदार ठाकुरसिंह की तीखी और साफ आवाज सुनाई दी—

'ठहर जाओ दोना— न्नि-दहाडे के चारा। यह गाँव धरोहर थी जो मेरे कुटुंब का दंडताआ में मिली थी और तुमने इसे गान में पत्थर चुराकर दूषित कर दिया।

'यह भिक्षु अपनी मा के साथ मंदिर को अर्पवित्र करने चला

था । सज्जन न सूचित किया ।

लगरदार धूलीसिंह ने जो अपन सरल्यण म उसे परे ले जा रहा ना उत्तर दिया— मैं इस मन्त्र के बारे म तुमस बान करना चाहता हूँ—अगर तुम भी चाहो तो—पर अगर तुम चिल्लात ही रहोगे ता बातचीत क्या होगी ? सड़क तो कस भी हो जरूर बनेगा ।

भिक्षु क मन म धूनीसिंह की पक्कीड़ी सरीखी नाक क प्रति जा सौंदर्य-सबधी अगचि यी उसका दबाकर वह उसके आगे-आगे चल दिया ।

कहत कबीर सुनो भई साधो

भिक्षु मन-ही मन में बड़ाबड़ाया—जस हां वह गाँव स चुपक स निकलकर उन पत्थरो क ढर की ओर चला जा वह और उसके अछूत भाई खान से लाए थे। जुनाहे और सत कवि कबीर को गावधन क अछूत पूजते थे। उसके दोहे भिक्षु को सबेरे उठते ही स्वाभाविक रूप से याद हो आते थे क्योंकि घघ जो सेतो का ढक लती थी मनुष्य को प्रायना करने पर बाध्य करती थी और फिर भिक्षु क दिल में टमाटर जैसे मुह वाला ठाकुरसिंह से सभावित मुकाबल क भय स कुछ उत्तजना भी थी। दीवान रूप कृष्ण क भविष्य जातक विचार सजातीय हिंदू अछूतो द्वारा पत्थर उठान और तोन्न क विरुद्ध कवन इसलिए ही नहीं थ कि व अछूता द्वारा खादे हुए पत्थरा को छूना नहा चाहत थ बल्कि इसलिए भी कि व इस बात स भी स्पष्ट थे कि अछूत लोग सरकारा ठेका पर काम कर क रुपया कमाए—जस बिजगी के तारा क लिए खाने लगाने से। उच्च वर्ग क योग निम्न जाति वाला क साथ अपना धर्म नहीं जाहना चाहत थ। उन्होंने आज तक अछूता का सेता पर तो काम करने दिया पर अनाज क बदन में और भूमि उनको एक-दूसर स जोन्ती रहा पर यह एकता आज नष्ट हो गई क्योंकि बतन धन क रूप में बन्न गया। अपनी सामा में बन्बडाता हुआ चोरी स इधर उधर दस्तता हुआ और प्रात की भूमि की माटा-भीठी सुगंध के प्रति सचेत भिक्षु अपने से पूछ रहा था आखिर कबीर अपने अनुयायियों

को क्या समझना चाहता था ? और उस क्वार क शिक्षात्मक गद्य उसकी गीत में याद आ गए ।

भक्ता ! साधा-साधा अध्यात्म यहाँ है कि ममार में ईश्वर का प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति का आन्वय में देखा और लब्ध रहा । इस पृथ्वी का देखा जिन पर आस की वृत्ति एक समवर्ती हैं जस जवाहर । नान आकाश का देखा जिन पर सूरज लब्ध होता है और दूर जाना है और वह जो माकार प्रकाश है उसका पूजा करो । भिक्षु के सुप्तकवि हृदय में इन विचारों में सम्मति थी पर अपना तन्मयि का विश्वास कर और ईश्वर का विचार अस्तिष्क में दूरवर उमन जुताह मन का एक और वाणा दानार्थ । काम-ही-काम वर्ग जाया भक्ता क्याकि काम में सार पाप धुन जात हैं—मिहरी और पमान में ।

इस प्रकार मोचन हुए वह तेजा में धनीमिह के मन में पट पत्यरा के त्वर तक पहुँचन के लिए वह चला जहाँ उमन अपने साधिया का भित्त के लिए वह दिया था । वह माहम का अभिनय तो कर रहा था पर उसे अपने आवापन का भी आभास था—उस पृथ्वी पर ही निनका वह प्यार वर्गता था और जिनकी वह मस्तान था । क्याकि वह जानता था कि पृथ्वी माता उमका नष्ट नहीं भर मवगा यदि मजनु महन और रामनिवास मजदूरी के बार में बदला नन का प्रपल नन छागें और वभा भी माडिया में उस पर टूट पडेंगे । वजन उसका बाज-वन और उमक भाई ही उमका बचा सक्त हैं । उस इस बात में कोई सन्देह नहीं था कि मजानीय मिह उसका पत्यर ताज के काम गुन नहा करन देंगे ।

अपने अवनपन में उनकी आँखें चारा और धूम गद और जस वह उमन बार में अपना बपना का यथायता की पुष्टि कर रहा था उसकी आँखें कुछ पर गनी तान स्थिया में जमागर ठाकुर मिह का लडका स्वमणा का जिनका रग गदू का तरह भूग था तन्म करन सगी और वही नजर पडन ही उसन उन्हें दूसरी तरफ कर दिया क्याकि

उस पता था कि यदि उसके प्रति उसका अधःपतन कायमय प्रेम कही उसकी आत्मा की वारा पर ठनक पड़ा तो उस दुःख भवना होगा। वह ऐसा विचार मन में तान का माहिस हा कस कर सकता था ? पर उत्ताना के उस चरम क्षण में उसने अपने मन से पूछ हा तो लिया—
 ऐसा क्या नहीं हो सकता ?—अवश्य हा सकता है।

फिर भिक्षु ने कुछ वं साथ पड़ खाट के धूल के ढेर के चारा तरफ चक्कर लगाकर लवरलार धूनीसिंह का जमीन पर उठी एक काटदार भाड़ी उठा ला। वह पकौड़ी जसी नाक वान घुलामिह की जमीन पर पर रखते हा मुरखित अनभव कर रहा था क्योंकि दोनों पहाडिया की खान से लाए हा पत्थरो के ढेर लवरलार धूनीसिंह के खत में हा पड़ थे। वस एक बार मारे अद्भुत किमो नी चान से वहा पहुच भर जाए। सब-कु-सब गूठ कुन वान हिंदुओ की हिंसा से बच जाग्य। घनामिह ने सात हाय चीनी जमीन मजक बनान के लिए अपनी जमीन में से दो था इस लिए व किसी भी आक्रमण के डर से मुरखित थे क्योंकि अपना सरक्षक के सेन में ही तो काम करेंगे। सारी अद्भुत बिरादरी यौवन की गक्ति और स्फूर्ति से उफन रही थी—इस आगा में कि सटक पर काम करके व अपने पतन की गहराई से उठकर जावन के धरातल पर आ सकें—गाव का अद्भुत आवाग के नरक से ऊपर।

जम ही उसने घनीसिंह की जमीन पर पर रखा और नरा देखा कि कहा कोई उस देख ला नरा गहा उसका दृष्टि पन्ति सूरजमनी की मफन गन्धी पर पड़ी जा अपना पीतन की गडवा में पानी भर रहे थे और हरि ओम हरि आम बडबडा रहे थे। फिर दुर्भाग्य कि पुजारी ओ न उस दख लिया क्योंकि व उस नाम लेकर पुकार रहे थे।

आ भिक्षु—अर आ भिक्षु। और उसके सामने पन्थ पत्थरा के दर—मून और वीरान। जिन माधिया न उसके साथ पत्थर तान की प्रतिना की थी उनमें से का भी अभा तक वहा नहा पहुँचा था। उसका मा न हमेगा उसे बताया था कि सबरे-सबरे ब्राह्मण का मुह

दखना तुरा गबुन होता है ।

जम-जस बन् कुए व पास जा रहे ये चमकानी छाटा गडवी पडित
(सूरजमनी क हाथ म चमक रही थी । उन्हान औरता म कहा— राम
राम—ज राम जा का बगी मुझ थाप पाना तो द । जमीनार ठाकुर
सिंह की लडका स्वमणी जसे ही वह अपने पातन व घडा का अपने मिर
पर रखन वाली थी एक क्षण रुकी । उसने ब्राह्मण के कुए व पास आन
की प्रतीक्षा की ।

पण्डित सूरजमनी न निष्टा स जनरु को कमर स निकाना और
कंधे से ल जाकर बाय कान पर ठीककर के रख दिया जहा वह पहने
से ही गीच के लिए लपटा हुआ था । इतने समय म उनको इतना अव
सर मिन गया जिना कि स्वमणी व गरीर की बनावट को परखने क
लिए आवश्यक था । जम ही उमन कुए का एक ओर स अपने घडे
का पण्डित जी व पातन व वतन म पानी डारने क लिए गडा किया
पण्डित जी आखी म हल्की बनावटी मुस्कराहट लिए उसे देखते रह ।
स्वमणी भेंप-भी गई ।

अपन पिता को कह देना कि भिकवु धूसीमिह व खेत को गया
है । उन्हान कहा । य चमार लडक गरास्त पर तुल हैं ।

स्वमणी ने अपन घूघट से अपना आग्रा का लजा स ढक लिया
और अपने घडा की आर मुड गई । पण्डित सूरजमनी की आखों ने
धुवती व गरीर की रक्षाभा का बढावस्था का एकाग्र कामुकता स बढ
प्यार स गपन किया और फिर सुनात हुए मुह म बढबढान लगे—
राम ! राम !

‘ज राम जी को । दो बूला औरतो न जा वहाँ पर यो पण्डितजी
को वहाँ स चरना करन व लिए तपाक म कहा क्योंकि उनकी
औरतों का पाछे स बनखियो स ताकन का आन्त तो गाव के सब लोगों
के बीच म ऐसे प्रसिद्ध थी जम कोई पौराणिक कथा । पण्डित जी पर
उनके विदा करने के नहज का कोई प्रभाव न पडा पर उन्हें निधारित
रीति पर चरने की चिंता थी—इसलिए धोती व मिरे को पकड मिर

को ढक वे चल दिए क्योंकि जगल पानी को जाने हुए गरीर के इस आदरणीय भाग को प्राकृतिक तत्वों के समुल्लेख से कस छोड़ सकत थे ?

सहज बुद्धि से उन्होंने कुए के किनारे से अपने आप को बचाया । छोटे जोहड़ से भी जहाँ जानवर पानी पीते थे जिससे कि उसका ध्याया पवित्र पृथ्वी पर न पड़े जो कि हरे रंग की तो न होगी पर पेड़ों से परे और जंगली झाड़ियाँ के बीच व के रंग की जरूर होगी । उनका चाल का गति से उनकी काय की गीघ्रता पता चलती थी और वे अपने पुर्ताने नये पावों से जल्दी-जल्दी चल रहे थे—अपने परा के तना म छोटा-छोटा घाम पर पड़ी आस की बूँद का अच्छा अच्छा स्वाद अनुभव करत हुए । गायद उनका आपस का दृष्टि कुछ तोष हा जाय यदि कबल व एक-दो मान नगी घास पर चल सकत क्योंकि उहाँन सुना था कि बुझती आस ओस व स्पश और सूर्य का प्रथम किरणा स शक्ति प्राप्त करती हैं । सूर्य की पहली किरणों की उपादेयता का विचार आते ही उहाँन मुह सूर्य की ओर उठाया जो कि पूव क छार से उदय हो रहा था पर अचा नव उनको ध्यान आया कि गीघ्र जात हुए सूर्य मा चन्मा की देखना एक धर्म भ्रष्ट काम है । उनका यह विस्वास हा चला कि उनकी बन्त साँ मुमीबतें अपना कमवाण छोड़न व कारण हैं । व पुराहिन व उनको ता दूसरों के समक्ष एक उदाहरण बनना चाहिए था । व धार्मिक पद्धति का भूल कस सकत व / फिर उह याद आया कि पिछले कुछ दिना स उन्होंने विचार पवित्र रखने की कोई चिन्ता नहीं की—जस उह भिक्षु का नाम लेकर नहीं पुकारना चाहिए था अथवा कुए पर स्त्रियो से नहीं बानना था—क्योंकि सता म प्रात गमन व समय तो पूण गति हानी चाहिए । कनियुग व समय म जब धर्म नियम खण्डित किए जा रह हैं विनोपतया नाची जाति व योगा द्वारा कार् ध्यक्ति भी हर समय इस धर्म खण्डन से नन् बच सकता । दुभाग्य स कमवाण की अवहेलना बिना दण्ड के तो की हा नहीं जा सकता—और अद्वैत तो अभिगप्त हाग ही । दुजन भिक्षु और उसन चकर भाई उनकी धर्म व प्रति

अत्यंत सावधान पूर्ण आस्था को जानत थे और इसके पहले कि वे उनके पूजार्थ की देवताओं व कोप का भय दिखाए व उन पर पत्थर फेंक देते। पण्डित जी में शारीरिक बल इतना न था कि उन धूर्तों से लड़ सकें। पर देवताओं के डर से वह अपनी शरारत रोक देते थे। पण्डित जी ने चारों तरफ देखा कि वही उनमें से तो कोई वहाँ नहीं है। कोई नहीं था। मदान साफ था वस एक ऊट बाँटोंगर भाड़ी को दातों से कुतर रहा था—घर के बाईं तरफ जहाँ सड़क बनाने के लिए मिट्टी जमाकर रखी गई थी।

पण्डित जी की उम्र मध्य व लिए जमा की हुई मिट्टी में एक लाभ दिखाई दिया। वे पीटिया ने घासल की नमक की और वहाँ के बिला की मिट्टी के प्रयोग में वच सकते थे—और इस प्रयोग के कारण अपवित्रता से। पर वह यह भी पता था कि यह मिट्टी अछूता द्वारा इकट्ठी की गई है और उनका स्पर्श से अपवित्र हो चुकी है। अपने काम से उठकर वह कोई अच्छी मिट्टी ही खोजना चाहिए। वह अपने बायें हाथ में अभी कुछ अच्छी मिट्टी बसा न उठा ल चले? वस तब ही वह हाथ गीच काय के अग्र अंग व काम न था सवंगा क्याकि उनका विचार था कि यदि गायों हाथ गिरार में मन माफ करने के काम में लिया गया तो उसका बीज लग जाणगा। वे अच्छी मिट्टी अपने पास जमा कर रख लेंगे—अगर वह वह भिन्न जाय। पर चारों तरफ रेत-ही रेत इतनी थी कि गरी प्रकार का मिट्टी दूर तक नजर नहीं आती थी—वस सिमाय उम स्थान के जहाँ मड़क बनन वाली थी।

पण्डित जी का दिल मिट्टी के डर में अपने बायें हाथ की मुट्ठी भर लने का लक्ष्य था। उस समय वह कोई नहीं देख रहा था—पर व जमे ही उस पर मुँह कि उन्होंने हाथ साव लिया, क्याकि उनका दिल तजा से धड़कन लगा, और अपने धड़कन हुए दिल का लिए वे अपायुध भाड़िया की धार भाये—उस घमघमट काम से धबराते हुए जा भवभराती था और छाटी-छोटी बातों से बचने के अर्थ विस्मृत,

व खासी तंगी से दौड़ पड़। उनको वह सब जल्दी हा करना चाहिए था जिसने त्रिए व वहाँ आए थे और कुएँ पर जाना चाहिए था स्नान करने को—शरीर की बाबा मन मिटाने का। उनका बदन में इतना पानी था कि अपने परो पर विविधपूर्वक छोटे द सकें। अरे दाँता में बबाने और उन्हें साफ करने के लिए वह दातून तो भून हा गए। पर नहीं उनका पास इतना समय कहा था कि कौकर या तीम के पड़ से एक टहनी तोड़ सकें। अचानक व एक करकन की तरह जो अपनी ही छाया से डरता हा भाडिया के पीछे भाग पडे। उन भाडिया को जो उनकी सफद दागी और मिट को छिपा सकता थी।

तीन

रक्मणा व चेहर का भासापन घबराहट व गम-गम साल रग म रग गया था और इमा अवस्था म वह अपना घर का द्वार चली जा रही थी। वह असमजस म थी कि अपने पिता का एकलम वह सब कुछ जो पणित सूरामनी न उससे कहने के लिए कहा था कम बना सबगा। उसका गाव व नौजवाना का नाम जवान पर लाना ठीक न था और प्रकृत नौजवाना का ता विसा भा अवस्था म नहीं। फिर रक्मणा की कल्पना न उसका भिक्षु का दया—उसको जिसने रक्मणी को कभी नहीं चाहा। जिसका ग़रार लचीला और जवान था और जिसका रग पक्का और चेहरा ममतन था। उसका हाठ कापन लग। उमा अवल मन म एक हल्की-सी व्याकुलता की प्रतिध्वनि उठी जैसे वह भिक्षु की उसका प्रति अवगा व विचार स जन पड़ा हो। रक्मणा का अपने चेहर को वह छाया जो उसका पिता व छोटा दपण म तिराई देता था याद आई और वह अपने प्रति ही कामल-सी अनुभव करने लगा। विगतया अपनी बड़ी-बड़ा आँखा व प्रति उसने साचा—आज वह बरत पर व तवे की कानिमा थोड़ तेज म मिलाकर अपना पलका म लगाएगी और उसने अपने शरीर का चत-चतन एक द्वार झुकाया जिसमें उसमें एक नृत्य की सी सय-तान आ जाय। इस क्षण उस नाम हुआ कि उसकी कभीक का पीला रंग पीला पड़ गया है और उसके ताल बाँधर से मन नहीं खाता और ना ही नील से रंग व पल्लु स। इन रुद्धो रंगरेन व पास भेजना होगा पर वह सब सभी हो सकगा जब

उसके पिता उमकी सगाई के बारे में मोर्चे । पर इन सब कपड़ों में इस समय सराहे जाने में कितना आनंद है जबकि वह सत्रह साल की है । जवान है न कि तीस साल का बुढ़िया । अपने समुद्र के घर फिर उमकी कल्पना के सामने किताब का जल्मा से घूमता चित्र आया जो रात के समय उससे जबरदस्ती कर रहा है—और मन-ही मन उमने निश्चय कर लिया कि वह कभी विवाह नहीं करेगी । पर फौरन उसे यह सोचना पड़ा कि वह तो एक बकरी है जिसके हाना हान का दिन निश्चय ही एस आ जाएगा जैसे गिन का मूय उन्मत्त हुआ है । आज तक उमका हाथ किसी के हाथ में बस इसलिए ही नहीं दिया गया कि उसके पिता के पास दहेज के लिए पर्याप्त धन न था । उमने अकसर रात को अपने माता पिता का आपन में इस बारे में बातें करत सुना था जब वह बरामन् की धुन रमाई में बतन माफ कर रहा होता था और उन्हा यह निश्चय था कि पहले उससे एक मान छोटा भाई की हा गानी होगा क्योंकि उसकी बहू गपन साथ जो दहेज लाएगा वह हो रक्मणा की उला के साथ चला जाएगा । रक्मणा के हाथ अपने होन बान पति के विराध के बिचारका बस गए और फिर उमने अपनी गाल ठहरी हुई दृष्टि के सामने भिक्षु का मति माकार करने का प्रयत्न किया । महज बुद्धि से उमने अपनी आग बन्दूक का और उमने जम कि एक रहस्यमय मुन्नेराह उसका हाथ पर उतर आता हो । वह हल्की हल्की हो आई और मन्होनी की मा अवस्था में आग बन्दूक जम कोई मोरनी हो जिसका चेतना पक्षा में आकाश में घीरे गये डूब रहा हा । अचानक उमका दाया पर एक बड़े पत्थर में आ टकराया । उमकी कमनाय चान टूट गई पातन के घड़ मिर पर गिन उठ और थाग पाना छूट गया । वह डर से पीनी हो गई—उन गानिया का विचार आता हा जो उम पर पडना यदि घन वास्तव में गिर जान और उमने गये पड जान । और फिर उमने उस अछूत नडक के प्रति आन उभर आया जिनसे उसको तबाह हो कर लिया जाता । उमकी मा के आगगा

तब गल उसका कान में गरज उठे—‘इन गद्दे आत्मियों की नजरो में बचो। मत भूलो कि तुम गोवधन गाँव के जमींदार का लटकी हो। हम धनीर सश्रीय जानि के हैं—राजपूत हैं—मगवान कृष्ण के बगल और हमन कभी मुमलमान या फिरंगी के सामन मिर नहा भुवाया। म्ही के पाम एक बहमून्थ उपहार है और यह उस दन के लिए बचा रखना हाता है जो उमे धर्मनुसार पाएगा—गहर का औरतों के चरित्र का लक्ष नहीं जो बाजाग में सहन वाली वामना का गनी में कूट करकट की तरह फेंक दी जाती है।

पर उमरा अपने मन में पूछा कि वह उसको कम दयाकर रखे तो कि दापहरी के बाल की नील में गरीर की यम प्रसन्नता में पाद हो जाना है और जो सवरे जागन में पहन के सपना में सताता है। जय ठाड़ी समीर गार स निपटती है जो हाथ अपने आप ही तकिय को पकड़न के लिए फर जात हैं और स्तनों के कापन हुए मौम को दवान के लिए उस परग पर उठी अवस्था में सटनी पड़ता है। अब तक स्वयंशी अपने में बहुत चीन चुका थी। उमन उठता हुई मूरज की किरणों को दावकर आप भवना हाग का मिकाडा और निश्चय में कहा—वह एक हरिजन है। मैं तो उमरा कल्पनातक का नहीं दू सकती। पर उठी क्षण उमरा निन दूब गया—इस निराग विचार से कि उमन किसी ऐसे पुरुष की प्रत्याकार किया है जिसने कभी आग उठाकर ग्यकी धार लाता तब नहा। पर य सब तो नाच हैं चमार हैं जो मुग जानवरा की गारें राख करत हैं और रम्मिया बनान हैं। बनि इन। म गुज भगी भी तो हैं। बस भवन भिन्न है तो भवना है जो गाता है और कवित रचता है।

एक बार फिर उमन उमरा प्रति अपने विचार का निराग किया और अपने निश्चय का और पक्का बनान के निमित्त कहा—अपने मन में मैं पवित्र हूँ—जमींदार का लटका जा हूँ। इन भिन्न के चहरे में उज बहृत परेगान किया है। वह अवसर मामा वगावाम भगार में

खड़ा दिखाई दिया है अपनी बाँहें कसे गहरे भूरे रंग के चेहरे पर चमक लिए और अपनी आँखें झुकाए उस अफगन दीवान रूप कण्ठ के सामने जिसने पिछले सान से गाव में आना शुरू किया है। अपने घर का दहलीज पारकर उसने देखा कि पिता जी चारपाई पर बैठ चुका पी रहे हैं। उसे पता था कि पिताजी यह सब अपने पेट के भीतरी तत्त्वा को गतिशील करने के लिए ऐसा कर रहे हैं—क्योंकि वह हुक्के के धरा तल से उठी गड़गुड़ाहट के बिना कहाँ टस से मस होते हैं। पिता के हुक्का गुड़गुड़ाने की आवाज ने रुक्मणी को कुछ गति पटुवाई पर उसने देखा कि वह उसे कनखियों से देख रहे हैं—जैसे-जैसे वह भाग बट रही है।

सज्जनू को मा—इस लड़की को अब कुछ पर मत जाने देना। रुक्मणी के पिता ने उसकी मा से कहा— खुद जाओ या किसी और को ।

किसको भेजू ? —मा ने पूछा ।

पर जमींदार ठाकुरसिंह के पास कोई उत्तर न था। वह हुक्का गुड़गुड़ाने लग ।

हो सकता है कुछ भगडा हो जाय अगर यह चमार लड़क पत्थर तोड़न पर अडे रहे ।

रुक्मणी ने एक एक करके सारे घड़े लकड़ी के स्टैंड पर बरामदे में रख दिए। फिर उसने अपने पल्लू से चेहरे का पसीना पछा और बिल्कुल साफ आवाज में कहा— पंडित सूरजमणी ने कहा है कि अपने पिता से कहना कि भिक्षु धूनासिंह के खत पर गया है। उसे क्या जसे जितनी गुस्सा की भाग उमके गरीर में भिक्षु के विरुद्ध थी वह एक एक कण उसने उगन दी है। वह हाथ-परो को ढीनाकर रसोई में अपनी माँ के पास सुविधा से बैठ गई पर फौरन जैसे ही वह बठी उसे अनुभव हुआ जैसे उमका मिर मूर्छा में चकरा रहा हो और उसका चेहरा तम तमा गया—एक अपराध की भावना से—उस व्यक्ति के विरुद्ध गिका

यत स जा निर्दोष था । और जब कि उसे यह तक मालूम न था कि सुरजमना क्या उससे ऐसी बात कहलाना चाहता था । उसकी आत्मा का हृन्त उसकी इच्छा व विरुद्ध हो गया क्योंकि भिक्षु तो सारे अद्वैता में सर्वोत्तम गिना जाता था—भोजी और सुचरित्र ।

य सब दीन मनुष्य हैं और हमें अपनी नजर हमारे सामने भुकाए रखते हैं । —रक्मणी ने कहा ।

मैं भी आज तक इसी भ्रम में रहा हूँ । ठाकुरसिंह ने कहा । आज य हमारे मुह से रोगी छीन रहे हैं । धूलीसिंह की सहायता से पत्थर तोड़कर ये लोग सरकार का खुन करने की भाशा करते हैं और पर्याप्त धन बमान की भी जिससे य श्रेष्ठ जाति के स्तर को खरीद सकें । पहले ही इनके पास आवश्यकता से अधिक धन है—और हमारे पास धन कम होता जा रहा है ।

—और जम इन गंगा से उसे स्वयं ही प्रेरणा मिली हो वह हुक्का छोड़ घर से बाहर निकल गया ।

तीन

पकौड़ी जसी नाक वाला खबरदार धूलीसिंह अपने खत के गांव के हुए बाने सिरे पर खड़ा अपनी छिजाब नगी मूछा स खल रहा था—कुछ घबराहट के कारण और कुछ अपने राजपूत पूवजों के साहस की बगान के लिए और उस सपप के लिए जो हुए पर गुरु होने वाला था। अब तक उमन बेचन औरतो को आते जाने देखा था—सिवाय एक पणित सूरजमनी के जो खत से हुए पर नहाने वापिस आ रहा था पर उसको—धूलीसिंह को—देखकर जिसने अपनी दिना पसट दी थी और घर की ओर चले पड़ा था। धूलीसिंह का पता था कि यह धूत ब्राह्मण कुत्ता ही सार भगडे की जड़ था। यह साबने लगा यह बगुला भगत है जिसके हाथ में माना रहती है और जो गांव के किसी भी आदमी से दुगना खाता है। जो गांव वाला का मरघु की बपगांठ पर—जो हर दिन किसी न किसी घर अवश्य हा होती है—दावतें उडाता है और दो अर्थों वाली बातें कहता है। यह मन्वार ब्राह्मण के रूप में लोमड़ी धूलीसिंह के भाग भव चुका है पर दूसरी तरफ टमाटर से तान तान ठाकुरसिंह के माय भितकर पण्यत्र रचता है। काग ! कि गांव की औरतें स्तनी आमांनो से थोड़ा में आती। व तो उसका सन स्वभाव की गपय खाता है। गांव के नन्का न एक बार उसका आन हाथा लिया था। उन्होंने भर हुए वन की हनिया उमर चौक में डान दो जय कि वह योगी की तरह समाधि लगाकर बना हुआ था। पर मुजातीय नन्का न भिक्क और दूसरे अद्वत नन्का का नाम लगा लिया और सूरजमनी

ने उनका निवायत पचायत स की। य उच्चवर्गीय नौजवान कायर थे—
स्वयं मूरजमनी के नडक भी पत्यर तोड़न और सडक बनान म
बाई कठिनाई न होती। वे अछूत नडका के साथ बेगव खेते थे—जब
उनके घर के बड़े न दख रह हा पर जहाँ काम या परिश्रम का प्रश्न
आया य मव पवित्र हिंदू बन जान थे। जम में एव पवित्र हिंदू न होऊँ।
सार शारीरिक और नस्तिव कायर जल्दी ही पिछ जाएँगे। वेवन
वे एव जो भिक्कु का तरह शरीर और मन स स्वस्थ हैं गप रहगे और
भाग बनें। और अब उनके मामन एव गूय था। मूय ऊपर चन्त.
भा रहा था। धूनीसिंह की इच्छा थी कि ठाकुरसिंह आए और एकदम
नडकर फमना हो जाय या फिर वह महायता करने का वचन दे।

उसन एक ऊँच स्थान म पीछे देवा भिक्कु और दूसरे अछूत नडक
काम पर जुटे हैं। उनके हथौडा की चोट की गूज पाम की छोटी पहा
डिया स टकराकर नीट आती थी। वे सन एक महीने से कम समय म
ही काम समाप्त कर जेंगे और सडक को समतल करने वाला इन्जन
आ जाएगा उनक मारे पत्यर तोड़ने से पहल-पहले ही और फिर पत्यर
तोन्न और इन्जन का काम माय-माय बन मवेगा। पर वे तो वेवन
सात प्राणा थे जब कि दीवान दपकण और इन्जीनियर तुलसीराम का
बहना था कि उन्हें तीस वे तयभग काम करन पाना की आवश्यकता
है—यदि क्या आरम्भ हान से पहन काम समाप्त करना है। उनकी
प्राँनें आकाश की धार उठ गई और उमने बापु-मंडन की गम-गम हवा
का गीम से अदर सींचा जमे यह जांच रहा हो कि मूय म इतना ताप
कत समा सकता है। उम गर्मी के तत्वा को परस्पर जो अप्रल म
आकाश म नीचे गिर रही थी वह बला मक्ता था कि मानमून नी जल्नी
ही आने वाली है। प्रात के मूय की मुगध उमकी मोनी नाव थ नयनों
में भारी भारी धुएँ की कुडनी बनाकर चढ़ गई। गर्मी म कुछ विशेष
चिनगारा ज्वाला न दी। इसमे ता मानमून जल्नी धुन होने वाली
मामूम होती थी। जून के अंत में या जुलाई के शुरू-शुरू में ही

धायी । मुना जाता है बड़-बड़ अणु बसा ने मौसमा का उलट-मुलट कर दिया है ।

मुझे धावाज दे नना—अगर तुम्ह दो भजवूत बाहा का जरूरत हो । भिक्षु न पुकारकर बहा—जम हा हथीडा उठान हुए उसकी बाहो म गकिन का प्रसार हुआ ।

और मुझे भी —बाबू चिल्लाया । बाबू वह जो गकिन म भिक्षु से हाड करता था—सुंदर था । ठाठा स दुबन लगता हा यह बान दूसरी है ।

यदि भक्तिवां तुम्ह तग करेगी नबरदार धूनीसिंह तो मैं बुहारो उठाऊगा । दगरय ने चिन्ताते हुए कहा था औरो स अधिक कोमल सुस्त और बानक था ।

नबरदार धलीसिंह ने कहा— और तुम क्या कहते हो ? पाटुधन बाने गिवराम बूटे बापू और गराबी गकर—मव खुप हो ? और धूनी सिंह न सोचा कि कुछ धादमी तो केवल भाग बढने को सन्सार म आए हैं और कुछ के भाग्य म पीछे रहना ही बना है । भिक्षु के सिवा बाकी सन अनपत् हैं और पीछे रह्य । भिक्षु गा सकता है पत् सकता है बातचीत कर सकता है और साय-भाय काम भी । धूनीसिंह न मन-ही मन साचा कि कही नाम क पड की गीतनता क नीचे य नाद की गाद म न लुक्क पडे ।

नबरदार जी तुम गाग हम धमारा का खत म काम देते आए हा । बाबू ने गुस्ताखी से कहा । हम हखी खान के कुत्त जो हैं ।

दगरय न कहा— क्या बहुमूल्य गद है ।

नबरदार न सहमत होकर कहा— 'बाबू' गान के प्रयोग म काम करन म अधिक दम है । खुजनाए कुत्त की बात पर तो यह अनुचित समय पर भाक रहा है ? दखना है यह जमानार ठाकुरसिंह का स्वागत कम करता है ।

भिक्षु बाला— निचय ही कहेगा— आपका ही सबक किसी और

का दास नहीं !'

नबरदार ने टिप्पणी की— यह जानता है कि जो काम करता है बादगाह की नाइ खाता है और इसी में इसकी शक्ति है न कि इसने मन्त्र हाथ-मरो में ।

मबन कहा—“हा हाँ ।

‘ये सारे-बै-मारे काहिल हो बन रहते हैं—जब तक कि य तुम्हारे

ममक्ष न आए—तुम जो उनके मालिक हो । दारय बोला ।

इस बात को सुनकर बाबू उठ खड़ा हुआ और हथौड की हाथ में

आश्रतात्मक ढंग से उठाए दारय पर झपटा

ओह बदमाश अपनी सारी नेखी बदकर । पकौडी नाक वाले

न चित्नाकर पहा । उसे मत छेड़ दुष्ट । किसी ऐम को क्या नहा

नलकारता जो तेरे बराबर हा ? ठाकुरसिंह का उडवा तुम कुन्नी में

पल भर में चित्त कर दे ।

बाबू अपने पत्थरो के डेर को नीट पहा ऐसी मुग्धा मजसे वह उल्टा

नीटने पर शोधित हो । उसकी समझ में न आता था कि वह धीरा से

झनना ऊँचा होने पर भी सबका घणा-पात्र क्या है ।

नबरदार धूनीमिह ने बाबू के दिल में असताप को पहचान

निया और उसे सात्वना देने का प्रयत्न किया दा प्रकार के

इमान होने हैं । एक वे जो बहुत कम बोलत हैं—अपना काम करते हैं

पर जिनके मन में गहराई है । दूसरे वे जो बहुत बोलत हैं और काम

कबल इसलिए करते हैं कि उन्हें खप-पसे का हिसाब नगाना है । यह

मडक एक नया काम है जो बिना ज्यादा वेतन के करना है—पर यह

हम सब का इम्तिहान भी है ।

‘पर और क्या साम है—यदि धतन कम है ? बाबू ने साने के

सहज में कहा ।

ओह गये । गाँव का दूध बाहर में ले जाया जा सकेगा और गाँव

वाता के पास अधिक धन आया । नबरदार ने कहा । ‘मैं अपनी

उन यात्राओं के बा पार जो मैंने दीवान रणकण की मजबूत जीप मात्र में देहली तक की हैं वह सकता हू कि सड़कें और अधिक सड़कें और बिजला ही हैं जो सुहाली आएगी ।

निश्चय ही । — भिक्षु ने कहा । तुम्हारी बुद्धि तो एक अपूर्व वस्तु है—अमृत का तरह—पर य सब नष्ट हो आया बाहा में नष्ट पमो से खरीने लाबीज पहनते हैं । यह चाहिए मोटी माटी मजदूरों—अब और इस समय—न कि दूध पर अधिक नाम जो यह में होगा ।

बाबू धाना— अब हम मिट्टी में गोदों वान सत व मजदूर नहीं हैं ।

नबरदार न कहा— तुम लोगों को हाथ में आई एक बकरी दर की नस की अपेक्षा अधिक प्रिय है । पर मैं नहीं चाहता कि तुम अधिक अधिक वतन का खोज में खता से दूर चले जाओ ।

इतने में ही ठाकुरमिह की आवाज सुनाई दी— तुम कुछ समय के बाद ही इनकी पीठ जान जाओगे । तुम जिसे मक्खन समझ हो वह रत निकलगा ।

ओ हो ! नबरदार न सोचकर कहा और वह टमाटरी रंग के ठाकुरसिंह का भाग्य के पार से सामना करने को मुड़ा ।

ठाकुरमिह ने तानाशाह कहकर कहा— अपने मत से निक्कन आ और मुझ बता कि कहीं भाग और रू भी साथ-साथ रहे जा सकते हैं ?

नबरदार धूनीमिह ने अपनी मूर्खों के एक सिर को चबाते हुए— जम वह इत का जवाब परवर से देने में जान-बूझकर थोड़ा सकोच कर रहा था उत्तर दिया— भया ठाकुरसिंह यह काम तो करना ही होगा । मैं व बनगी—और य नष्ट हो य काम करेंगे । तुम तो जानते हो कि बार्ड मा ऊपर बैठकर छाटे से दरवान में नहीं जा सकता ।

अब धूनी उठ चले का और मुर्गी खान को—तुमने हम सबको धावा दिया है । ठाकुरमिह न कहा । अभा उस दिन तो तुम दाधान रणकण का गाड़ी में आए थे—घाय थे न ? और गांव आने से पहले-पहल उससे उतर गए । हमारा गांव स्वावलंबी था हम

पहले कि सरकार व अफसरो न महा दखलदाजी गुम् की । पहले ये चमार हमारे लिए काम करते थे और अब य भजदूरी कमाते हैं और हमारी सारी सुजातीय विरादरी के कलेजे पर भूग दलत है । क्या तुम्ह दतना पान है कि तुम्हे अपनी लटकी की गादी एक चमार स करनी पड़ेगी और लडके की एक भगन से ?—अगर तुम इसी रास्त पर अट रह तो ।

मरा घंटा ता तुम्हारी तरफ है । नबरदार धूलीसिंह न उत्तर निया । गावद उस ता तुम अपनी बेटी न ही दोग । रही नडकी का बात तो वह गिरे हुओ से प्रम क्या करने नगी ? और मैं तुम्ह यह मम भाता हू कि नई सरकार की तुम्ह इसलिए महायता चाहिए कि बाजार म अनाज व दाम न गिरें । धनीसिंह मन म जानता था कि ठाकुरसिंह को उसने खरी लरी और मस्त बातें कही हैं पर उस अपना उम शक्ति का पान भी था जिमका सात उसका स्वाभाविक प्रत्यक्ष भावनाओं म था और जिसकी पवित्रता व बन पर वह ससार व सार छल कपट का सामनाकर सकता था । वह भगड की अन्धा समझता था—ठाकुरसिंह की तरह मन म धुरे विचारा की बसाकर अदर अन्तर जनन की प्रपक्षा ।

जमीनार ठाकुरसिंह जिसका चेहरा चमक रहा था आगे बढ़ा । उसन कहा— ता तुम इन नीब लोगो की कन्तर करते हो ?

भिवन्दु अपना हथौडा छाडकर भाडी तक आ गया । और अछूत नी पीछे पीछ आ गए ।

सब के सब पीछ ह जाओ —धूलीसिंह चिल्लाया । कोई भगन नही होगा । और यह कहकर ठाकुरसिंह का आर मुड़ा और वाता— तुम्ह अपने बछन के दांत भी ता मुनहगी निखार नेत हैं ।

मुक्त मद है तुम्ह दुष्ट पर और तरे माधिया पर । ठाकुरसिंह न कहा— तुम्ह दवताओं का गाप लगगा—धर्म व सन्नकता और इस मुन्ही गांव में फूट व बीज बान बाल ।'

'ठाकुरसिंह तुम चाहत हो कि जब मर्जी आए सोओ और जब जी

चाहे उठो। पनौड़ी नाक वाल धूलीसिंह ने कहा। और तुम्हे इस बात की स्वतंत्रता हो ता समझते हो कि सारा गाँव सुखी है पर इन चमारा व सोचन का ढग दूसरा है क्योंकि इनके पाम कोई जमीन नहीं और सान म कवन चार महीने काम मिलता है। यह कहकर धूलीसिंह अपने सेत की ओर मुड़ा। जमान ताप स कराह रही थी। मूय की चकाचौंध रागनी ने उसको मधा-मा कर लिया और उस गगा जस भनसान वाली गर्मी से उसके गरीर व राम रोम म मिर्चों की मनभना हट भर गई हा।

मठा तो ने एक बदजात औरत की तरह अपनी डोली व पाछ गरण स रखा है पर आखिर तो तुम्हे इसी गाँव म रहना है—जात विरादरी के साथ। ठाकुरसिंह न कहा।

तुम्हे तो पथायत न पहले ही दोषी ठहरा दिया है। धनीसिंह न उत्तजित हाकर कहा—अमे कि वह ठाकुरसिंह के गगा के निगायक महत्व का जान गया हो। पर मैं यह जानता हू कि जब कि हमारा मजानाय विरादरी थोडा बहुत ला गती है इन चमारा म म बहुत स एम ३ जा दा बार अचार स भा राटी नहीं ला सकत।

तुम्ह न गधा की अपना मतनब साधने के लिए जरत तो है। ठाकुरसिंह न चना चने चो करत हुए कहा पर याद रखना गधे गधे ही होत हैं घा नही। और वह कुए की तरफ धीरे धीरे चल लिया—जहाँ औरतें यह सब दमकर पाना भरत भरत बीच म ही रक गई थी और ठाकुरसिंह और धनीसिंह व बीच तकरार पर चितारमक ढंग स ठाडिया पर हाय रखकर बानाफूमा कर रही थी। ठाकुरसिंह औरता की महानुभूति स और भी व्याकुल हो उगा। उसकी छाँलें क्रोध से गाली हा गई और दाँत पीसता हुआ और अपनी मूछ के बाएँ सिरे पर हाय फरता हुआ ठाकुरसिंह—जिसका तरह-तरह व सदहा और चिगने वाल विचारा न घा दवाचा था—गाव का चौने गती म स्थित अपनी हवनी का आर चन लिया।

जमीनार ठाकुरसिंह का चेहरा पके हुए टमाटर की तरह चमकता था—तभी तो उसका नाम टमाटर में मगधित कर लोग ने रखा था। उसकी धाँसें भुका भुका थी और जान में अस्थिरता थी। उस इसका पदचात्ताप था कि वह नवरदार धूनीसिंह और अछूत लडवा में दात करन गया ही क्या? वह मोचता था उन सबन उसको नीचा दिखाया। तबतार में उचित ही अनुचित-सा नगन लगा। या तो धूनीसिंह सरकार के बदन पर ही ऐंठ रहा था। इस बात पर कि वह सबनदार था और गीवान रूपदृष्ट जा नया सामूहिक विकास-वृद्ध अधिकारी था उसका पीठ पर था। बल्कि पुलिस भी धूनीसिंह की रक्षा के लिए बुलाई जा सकती थी। धूनीसिंह का इही सबका भरोसा था।

और फिर सरकार ने गाँव का महयोग नन के लिए किया ही क्या है? अपनाए गए अंग्रेजी जवान में बातचीत की—आपम में हा—जस मारे विचार उनके मस्तिष्क में हा हा। और पचायत से केवल मन्त दाम पर मजदूरी की माग की और उन सब के लिए नवरदार सब कुछ था। सबनदार ने भी जरूर डाग मारकर कहा होगा कि मारा गाँव उसका पीछे हैं। व धान में आ गए और रास्ते में मन्क गए और जब अछूत लडवा ने केवन नाम-मात्र के बतन पर काम करने का मान दिया तो उन्हें बिदनाम आ गया होगा कि उच्च जाति के श्रमिक भी आप-ही आप रास्ते पर आ जाएंगे।

बाली माँ का अभिगाप उस मोटी नाक बान पर पड़। लामड़ी मगाने मुह दात दयाराम ने कहा पर इस समय क्या भगडा है? यह मध्य श्रणी का किसान जमीनार ठाकुरसिंह का एक तुच्छ चापलूम था इसलिए वह भी उसकी तरफ ज्यादा ध्यान न देता था।

मनुष्य को अपने देवताओं को नहीं नूलना चाहिए केवन इसलिए कि राजा उससे खुश है। ठाकुरसिंह ने सविष्ट रूप से कहा। मनी में गहरी औरता ने अपने धूपट बाढ़ लिए और दुपट्ट के नीचे बढबढाने लगी।

वह—धूनीसिंह तो अपना रा के साथ उगता-बटता है। जवाहर

चाहे उठो। पकौड़ी नाक वान धूलीमिह ने कहा। और तुम्हें इस वान की स्वतन्त्रता हा तो समझत हो कि सारा गाँव सुन्नी है पर इन चमारों के सोचने का ढंग दूसरा है क्योंकि इनके पास कोई जमीन नहीं और सान में वन चार महीने काम मिलता है। यह कहकर धूलीमिह अपने स्वत की ओर मुड़ा। जमीन तोप से बरस रही थी। मूय को चकाचौंध लागनी न उसका भया-सा कर लिया और उसे जगा जस भलसाने वाली गर्मी से उसका गरीर के रोम रोम में मिर्चों की भनभुना हट भर गई हो।

धन्दा तातून एक वन्जात औरत का तरह अपना डपोंग के पाँछ गरण ल रमा है पर धाँवर ता तुम्हें इसा गाँव में रहना है— जात विराटों के साथ। ठाकुरसिंह ने कहा।

मुझ ता पचायन न पहले हो दोषा ठहरा दिया है। धन्दासिंह ने उत्तजित हाकर कहा—जस कि वह ठाकुरसिंह के गाना के निगायक महेश्व की जान गया हो। पर मैं यह जानता हूँ कि जस कि हमारी मजानीय विरादरा थोड़ा जहन खा गती है इन चमारा में से बहुत से ऐसे हैं जो दा वार अचार से भी रोग नहा खा सकत।

तुम्हें इन गंधा की अपना मतनब साधन के लिए जरूरत ता है। ठाकुरसिंह ने चना चनन चोत्र करते हुए कहा पर याद रखना गंधे गंधे ही हात हैं घात नहा। और वह कुए की तरफ धीरे धीरे चन लिया— जहाँ औरतें यह सब देखकर पाना भरत भरत बीच में ही रुक गई थी और ठाकुरसिंह और धूलीसिंह के बीच तकरार पर चितात्मक ढंग से ठानिया पर हाय रखकर कानाफूमा कर रही थी। ठाकुरसिंह औरतों की महानुभूति से और भा व्याकुल हो उठा। उसकी आँखें क्रोध से गाना हा गन और दाँत पीसता हुआ और अपनी मूख के बाएँ सिरे पर हाय फरता हुआ ठाकुरसिंह—जिसका तरह-तरह के सदेहों और चिन्तने वाल विचारों ने आ देवाचा था—गाँव का चौड़ी गनी में स्थित अपनी हवना का भार चले लिया।

सिंह न कहा। उसके पास डढ़ सी बीघा जमीन था और वह पाच ग्रामियों की सभा का सभासद था जिनका पंच ठाकुरसिंह था।

खास महेरा ने टिप्पणी करते हुए कहा— आग स खन रहा है—
घास न !

मुझे जसी आँख वाले रामनिवास ने जिसकी पंचाम बीघा जमीन था और जो अपनी ऊपर उठी मूछा और मुघम स उसकी अच्छी रखवाला करता था—बड़ा वह नरक की वासा म जलगा।

जमींदार ठाकुरसिंह न बन्ग पर इस समय ता उमन अपने गाँव के सारे जिनो म आग लगा रखी है। गावघन तो सुनहरी धूप म नहा रहा था और उसका जीवन गति स खन रहा था कि बड़ अपनी गुमता दुनपा और नाक-बनाक की बकवास ले घाया और चमारा के निमाग म पप का जहर भर दिया। और य अछूत और सेत म काम करने वाले मजदूर जिनके प्रति हम इतन उदार रहे हैं—अब किसी की नही सुनन। इन्होंने हमारा घम नष्ट कर लिया है।

वह इन अछूतों को छूकर नाती न हो जाय ता कहना। उसके नडके सज्जन ने बन्ग। उमक चहरे पर बेचक के निगान ऐसे चमक रहे थे जस एक एक निगान गुस्म म भरा एक एक आँख हा।

मैं ता घम का आदर करता हूँ। जमीन्दार ने कहा। मुझ इसी म स्वर का बरतान मित्रता है। वस उसका हुक्म-मानी बन करना है अब। और यह कहकर वह औरता के बीच म म खन लिया। उसका पाछ औरता न अपना हल्का-हल्का कानाफूसी की गानिया तक पहुँचा दिया और जमीन्दार ठाकुरसिंह अपना हो घृणा की आग के धुएँ म से जिमम गाव की गानिया की धूप भी मिन गई थी गुजरता हुआ मन्त्र की आर जा रहा था।

गाँव के आवारा कुत्त छाटा-छाटा छनोमें लगाने हुए और अपनी दुम हिलाते हुए उमक पीछ हा लिए पर जमीन्दार की मन स्थिति ऐसी वहाँ थी कि कुत्तों की प्रीमाहन दना। उमने उन सबको जोर से 'हट'

चिलाकर तितर बितर कर दिया ।

इस हिंसात्मक वातावरण ने ठाकुरसिंह के होश-हवास भस्त-व्यस्त कर दिए और उसकी कल्पना शक्ति को धुंधला दिया । उग्र व्याकुलता के धुएँ से वह लगभग अंधा हो गया और अपने मकान वाली गली के किनारे बंधी बकरा की रस्सी से टकरा गया । उसकी पगड़ी अपने स्थान से हिल गई और उसने नीघ्रता से उस ठीक किया । वही ऐसा न हा कि ऐसी सम्मानहीन अवस्था में कोई उस देख सके । अपनी हज्जन का बचाए रखने के प्रयत्न में वह भूल गया कि वह वही जा रहा था और अपने घर के दरवाजे में ही घुस चला । डायीडी में पर रखते ही उस हाग आया कि उसे तो मंदिर जाना है—यदि धूलीसिंह के विरुद्ध धर्मा नुसार कामवाही करनी है । वह भटका-सा पीछे मुड़ा पर उसका लटक सजनों ने उसे देख ही लिया ।

बापू ! —बटन बाप का पुकारा—बाप जो गहर सताप में था । लेकिन तब तक वह उस चौक की ओर मुड़ चुका था जहाँ मंदिर के मार्ग की ओर था ।

मुनी रसाई में सक्कमणी ने पूछा— बापू ये क्या ? सस्सी तमार है उनको ठण्डा करने की—शुना ल न उह । गन्या को मक्खिया ने तगकर दिया और उसने अपनी पूछ पत्रकारों । देख बने लगी है मेर आकर ।

हमें बकरी की तरह में में करती रहती है । सजनों ने कहा बापू तो शोध की ज्वाला में भस्म हो रहे हैं और तुम्हें अपना चेहरे की पड़ी है । और वह अपने बूढ़े पिता के पीछे-पीछे गनी में चले दिया ।

विष्णु भगवान के मन्दिर के अंदर पवित्र आश्रय-स्थान में पन्ति मूरजमनी । एक छोटा साटा-सा घण का कुण्ड बनाया हो था । उसका शरीर—वेबम नगाड़ी से ढका जान का अपराधी शरीर—पमीन में भीगा था ।

मंडन के उच्च स्थान पर गुणगतिमान भगवान की रमणीय कपड़ों में सुगन्धित मूर्ति गुणान्वित थी और वानावरण में धूप की सुगंध भरी थी ।

जमींदार ठाकुरसिंह न उस सुगंध और अपन विद्याभुवन मन स्थिति के वग होकर मूर्ति के आग पूज्य भाव से हाथ जोड़ दिए और उम बड़े घुण में एक आवास भरा—इस आग में कि आग उमक मन में जा असतोष था वह कुछ गात हा जाय । दीध आस से उसका कुछ जा-सा मिचाने लगा पर वह अपन थूक का निगमन गया और आपत्ति को टाल-मा गया ।

जमींदार ठाकुरसिंह को मन्दिर के अखियारे बातावरण में गति तो अवश्य मिलती थी पर विष्णु की मूर्ति उसमें कोई विश्वास या साहस की भावना उत्पन्न न कर सकती थी । महाराज कृष्ण जो सामन दावार के चित्र में अपनी प्रमिका राधा की बांहों में बांह डाल थे उसको अकसर अपनी ओर खींचते थे और जब कभी वह मन्दिर में आता तो कृष्ण को ही विष्णु के अवतार के रूप में अपने मन में बसाकर लाता । अपनी मुखावस्था में हर-हर महादेव की ध्वनि पर उसका मन बड़ा भक्ति भाव से भर जाता था—वह महादेव जो आंधिया के देव गिव थे जब कि उसकी ग्रहणी काली-महाकाला विकराल गिव का अर्द्धांगिनी की पूजा करती रहती । पर पूज्या के धर्म के अनुसार तो विष्णु को ही सर्वोपरि देवता का स्थान था और इसी धर्म में वह पला । फिर पंडित मूरजमनी भी वल्लभ भजन ही गाता था इसलिए विवग होकर उसे अपनी माँ के आँखें मानने पड़ने । सारे अवतार उम परम पिता परमेश्वर का अभिव्यक्ति हैं । हम तो उसी देवता की पूजा करनी चाहिए जा हमारे मन को भाता है—और आखिर तो अपने कम ही हैं जा कुछ भय रपत हैं न कि पुराहित का पाठ ।

पंडित मूरजमनी ने अपनी पूजा आरम्भ की । मूर्ति के चरणा पर पुष्प चढ़ाए और पीतल की थाली में रख तन के लिए स मूर्ति के चारा ओर घटियाँ बजा-बजाकर आरती उतारा और मुह से आरती आरता गल उच्चारित किए । कम सब कायकम का देखकर मन्दिर के एकाकी भक्त ठाकुरसिंह का बड़ा उकताहट अनुभव हान लगा और

उक्ताहट भी कसी ? निस्सीम ! क्याकि वह जिस काय क लिए मंदिर में आया था उस कस मूल सकता था ? मोटी नाक वाल धूलीसिंह को जाति से निवालेन का निश्चय करना था पर फिर भी हर वीतन वाल क्षण के साथ त्रोध की लपटें उसके गरीर में पसान की बूदा के रूप में परिवर्तित होकर च रही थी । एक क्षण तो घप की सुगंध और घुए से उसकी विचार गति अस्त-व्यस्त हो गई और वह अपनी आत्मा के भीतर चिन्ता उठा—

‘चाहे कुछ भी हो मुझे अपना उद्देश्य नहीं मूरना है । मूरजमनी ही क्या न सदा की तरह बुराई के साथ समझौता कराने का प्रयत्न करे मैं चन से न बढूंगा । उसने अपने आत्मबल को और ठोस बनाने के लिए अपना ध्यान दवता की मूर्ति पर केंद्रित करने का प्रयाम किया पर विष्णु के चारा ओर तो सब कुछ बडा दयापूर्ण, सहनशील और दण्ड रहित था इसलिए उसका जी चाह रहा था कि वह हर हर देव महा देव का जयकार कर सके और उस ताडव देव शिव के नाम में जो उमा है अपने प्राप में भर सके ।

पर अचानक उसके हृदय के अधकार में एक विचार का प्रकाश कौंध गया । उसने सोचा सारे जीवन भर तो उसने धर्म से सबंध जोडा नहीं और अब धूलीसिंह को नीचा दिखाने के लिय दवतामा की सहायता मांग रहा है । यद्यपि पुरोहित जो कि अपने जीवन निर्वाह के लिए उच्च जाति के कुटुंब पर निर्भर है उनकी ओर हा जाएगा और सवरदार का जाति से निक्कवाने पर राजी हो जाएगा—देवता तो उसके साथ न होंगे ? यह सावकर वह कुछ बोला पड गया । मरकारो अपभर और देवता दोनों का आग्रय एक माय छोड देने से वह अकेला रह जाएगा—इसलिए उसे समवत धूलीसिंह से कुछ-न-कुछ समझौता कर सना चाहिए । अब वह मूरजमनी से उसे विरादरी से निवानन के लिए न कहेगा बल्कि कहगा कि उसे समझाए कि सवरदार अपने जाति वाला के साथ रहे न कि अछूता के साथ, और तब वह सरकार के

साय भी बातचीत चला सकता है। पत्थर भी कुछ धार्मिक रीति से गूँद किए जा सकते हैं और दयाराम और रामनिवास अपने लडका और दूसरे किसानों को उनके तोड़ने के लिए कह सकते हैं। वे सब वेतन कमा सकते हैं और अछूत सेतो में नाम कर सकते हैं—अगर वह चाहें तो।

चरणामृत तत्ता । पंडित मूरजमनी ने अपने पाठ के बीच में ही कहा और वह अपने दाए हाथ में पीतल के चम्मच में पवित्र जल को लिए भग्न हुए । जमादार ठाकुरसिंह ने अपने दोनों हाथों की हथेलियाँ फनाई और पुरोहित से चरणामृत लेकर पी लिया । ठाकुरसिंह ने भवसर पाकर कहा— मैं धनीसिंह के सन्तान में यहाँ आया था ।

पण्डित सूरजधनी ने अपनी आत्मा का आधी मूढ़ दिया और अपनी प्रायना के गानों का उच्चारण करन के माय-माय सिर को ऊपर-नीचे हिलान लगे । ठाकुरीसह कुछ न समझ सका कि पुरोहित क्या अपना मिर हिता-उला रहा है पर यह समझकर कि उसने अनुमति दे दी है कि वह अपने हृदय की बात कहे उमने वहना गुह किया— जैसे कि आप जानत हैं पण्डित जी

पतिन जी ने अपना हाथ ऊपर उठाकर प्रार्थी को ग्रात होने के लिए आदेश दिया और उन पीतन की धारिणी की ओर आगारा दिया जिन पर मङ्गली कङ्कणा सुमर और गर क चित्र खुदे थे । पूजा करत पाना समझ गया कि य सब तो विष्णु के प्रतीक है और पूजा अभी चन रही है । एम समय म नई भी बाधा उस धार्मिक कृत्य म कम हा सकती है ? अचानक जमीनार ठाकुरमह का मन उस भारा वानावरण ॥ जिनम पुराहित का कगार बढरडाहट और धूप की गाना और गभार दुगध भरा थी धबरा उगा । बन् हताग हातर मन्त्रि स तेजा म बाहर निवन आया नद न मन् म कामना हुआ— यन् मन्सार तो प्रत्य को प्राप्त हा जाय ता न्दा । तम कि यन् आजकन चले रगा है—धन ना कनियुग आ गया है । धमनिष्ठ व्यक्ति भी अब अपने स्थान स गिर

चुके है।

उधर उसका पुत्र सज्जन अपने मित्र सवरत्नार धूलीसिंह के लडके लक्ष्मण से मिलने निकल गया। उसके हृदय में अपनी चाल में पूर्ण विश्वास से उत्पन्न हुई उग्रता थी। गोवर्धन गाँव के इन दो बड़े खानदानों में इस बारे में कभी कोई बातचीत नहीं हुई पर यह बात स्वयंसेद्ध माना जाता था कि दोनों खानदानों में लड़कियों का आश्रय प्रदान एक न एक दिन अवश्य होगा। दोनों लड़के अपनी पारस्परिक मित्रता का नाम उठा एक-दूसरे के घर चले जाते और अपनी हानि वाली दुल्हनो का भलकर पान का प्रयत्न करते। लड़कियाँ कई बार अनजान ही सामने आ जाती। उनका शरीर में कई बार चरें होतीं जैसे कि वे जानती हों कि किस प्रकार के संवध-भूत में उन्हें बचना है। दूसरी ओर इस याज्ञानिक प्रतिपादो असहमति भी थी क्योंकि इस प्रकार का विनिमय हिंदुओं की अधिकांश जानियाँ में बूढ़-श्रमाट की तरह ही घणा की दृष्टि से लिया जाता है। पर फिर भी लड़कें तो मनी मरुत में जुड़ के और साथ ही हानि वाले बहनामों की तरह भी। यहाँ तक कि उन्हें एक दूसरे का माना विनाश के बुनान में आनन्द आनन्द रहा। उनके माता पिता अवश्य यह कहते थे कि इस आनन्द वाले संस्कार का अधिक पुनः प्रदान न करें—पर वे मुनने किमकी थे? माना पिता को कुटुंब की नीचा के कमजोर पड़ जान का डर भी न था जिसके मूल में लक्ष्मण का कभी-कभी मित्रता जाना था। धीटिया या गहल की मक्ति-प्रो की तरह में मौजवान अपने पितामहों का डक मारकर मौत की गोद में मुना देने का उद्योग थे। सज्जन ने दम्बा कि लक्ष्मण धूलीसिंह के घर में पशुओं के छान कोठे में मरुतों के लिए चारा काट रहा है।

— वहाँ से आ रहा है—और बिधर चल लिया? लक्ष्मण सिंह ने बुल्लो, वो ऊपर उठाकर सज्जन की ओर देखकर कहा।

सज्जन ने उत्तर दिया— मेरे आन्धों हा आन्धी के पास आता है। पहाड़ मोटे ही पहाड़ तक चलकर जाता है।

साथ भी बातचीत चला सकता है। पत्थर भी कुछ धार्मिक रीति से गुड़ किए जा सकते हैं और दयाराम और रामनिवास अपने लड्डू को और दूसरे किसानों का उनको तोड़ने के लिए बह सकते हैं। वे सब बतन बना सकते हैं और अच्छे सेतो में काम कर सकते हैं—अगर वे चाहें तो।

चरणामृत ले लो। पंडित सूरजमनी ने अपने पाठ के बीच में ही कहा और वह अपने दाएं हाथ में पीतल के चम्मच में पवित्र जल का लिए भक गए। जमादार ठाकुरसिंह ने अपने दोनों हाथों की हथेलियाँ फनाई और पुरोहित में चरणामृत नकर भी लिया। ठाकुरसिंह ने धबधब पावर कहा— मैं धूनीसिंह के सबब में यहाँ आया था।

पंडित सूरजमनी ने अपनी आँखों को आधी मूढ़ लिया और अपनी प्रायश्चित्त के गणना का उच्चारण करने के साथ-साथ सिर को ऊपर-नीचे हिलाने लगे। ठाकुरसिंह कुछ न समझ सका कि पुरोहित क्या अपना निरहिता बना रहा है पर वह समझकर कि उसने अनुमति दे दी है कि वह अपने हृदय की बात बड़े उमने कहना शुरू किया— जैसे कि आप जानते हैं पण्डित जी

पण्डित जी ने अपना हाथ ऊपर उठाकर प्रार्थना को ग्राह्य होने के लिए आदेश दिया और उन पीतल की घातियों की और गंगा दिया जिन पर मढ़ली कटुआ मूँघर और गेर के चित्र खूब थे। पूजा करने पाना समझ गया कि यह सब तो विष्णु के प्रतीक हैं और पूजा अभी चल रही है। एक समय में काई भा बाघा उस धार्मिक कृत्य में क्या कर सकता है? अचानक जमादार ठाकुरसिंह का मन उस भारी धानारण से ज़िगम पुरोहित की कठार बरखाट्ट और घुप की गंगा और गभीर दुग्ध भरा था घबरा उठा। वह हताश हाथों में तला में बाहर निरुत्तर आया न न म न म कामना हुआ— यह संसार तो प्रलय का प्राप्त हो जाय तो धब्दा। तब कि यह आजकल चल रहा है—अनना कनिष्ठ भ्रा गया है। घमनिष्ठ व्यक्ति भा अब अपने स्थान में गिर

लक्ष्मण ने नई फुर्ती से कुल्हाड़ा चलाते हुए कहा— तेरी कमजोर धावाज से मुझे शक्ति मिलती है ।

सज्जनू ने पीड़ा से विरोध करते हुए कहा— राक दो इमे साल ।

लक्ष्मण ने कुल्हाड़ा गिराने हुए कहा— मनुष्य की सन्तरता भातर की होती है और पशु की बाहरी ।

हा —सज्जनू न कहा । पकौड़ी नाम वाला चला गया है और ।

और क्या ? लक्ष्मण ने गत स्वभाव से कहा ।

और वह भिक्षु का माय न गया है और लडका का भी— अपनी जमीन पर वे सब खान से जाए पत्थरा का ताड़ रह है । वह हमारे धम का लडन कर रहा है और तुम्हें नष्ट । अब मेरे पिता स्वमणी का विवाह तुम्हारे साथ करने की कभा राजी न हाग ।

अच्छा पर तू एस अनुम गत क्या बानता है ? लक्ष्मण न बात काटकर कहा । मैं जाता हूँ और बापू का समभाता हूँ ।

यह सब इसलिए कि इन चमारा का तो ईश्वर या मनुष्य का कोई भय है नहीं । मेरे बापू न भी बड़ा प्रयत्न किया—तुम्हारे बापू का राह पर लाने का पर वह माटी नाक बाना ता अपना बात पर अडा है और उन अछूता का उत्तजित कर रहा है ।

बूटा ता पागन हो गया है ।

आत्मा म पाप का हाता—भूमे म अग्नि की तरह है —सज्जनू ने उपदंगात्मक उहज से कहा । तुम्हारे बाप को भिक्षु और अछूता से सस्ती मजदूरी मिल जाती है और एस प्रकार वह सरकार का सगवर सबता है ।

‘नहा वह एतना धूत नहा जितना कि उगार और अछूत दुनय का है । और फिर बापू एतना कमठ है कि उस ता हर क्षण बुद्ध-न-बुद्ध करना हा है । वह ता मडक बनावर हा रहगा ।

अपनी जानि और दूसरा का धम आवर भी यन्ति उसन यहा माग अपनाया है ता वह माना का भी भिक्षु से क्या न ब्याह द ।

तदमन ने अपने मित्र को भयपूर्ण विस्मय से देखा। उसकी चुनौती में कोई दुराव न था और जो मत्त कहा गया वह उस अपमान में जा इस ताने में निहित था। अधिक गंभीर था कि सजनू अब उसकी बहन से विवाह की अभिनाया न करता था। रक्मणी तो उससे छिन हा जाएगी और अब वह ।

'क्या कुटुंब है तुम्हारा ? तुम स्वयं ही पत्ति मूरजमनी में धूना करते रहो। तुमने अपनी माँ की गिल्ली उड़ाई जब वह प्रायना कर रहा थी और अब तुम जानि विरादरी के नाम पर आठ आठ आसू बहा रहे हो।

मृत भी बुद्धिमान समझा जा सकता है यदि वह न बोलता। —मरजू ने ताना कसा।

सम्पन्न ने उत्तर दिया 'तब तो बुद्धिमान का वह काम पहात ही कर लेना चाहिए जो वह मूल से वाद में करा के लिए कहता है।

'लबित यहाँ तो मूर्खों की फसल बिना सींचे फल रहा है—पकौड़ी नाक पान की और तुम्हारी। सजनू ने घणा से कहा।

सम्पन्न जो कि अपने पिता के प्रति वफादारी और रक्मणी का पान की हल्की-सी आँगा के बीच संघर्ष में फसा था अन्त उठा।

प्रोह ! चुप हा जा। अगर तूने मेरे सानदान का कुरा बना कहा तो मैं भी तुम्हें यानी दूँगा। यह मत समझ कि मैं अपने बंठार पिता को धामाना में ढीब कर सकता हूँ जब कि तू अपने पिता के सामने अपनी आवाज़ भी ऊँची नहीं कर सकता।'

पकौड़ी नाक पान अपनी मति का बटा है।' सजनू ने कहा।

मैं जानता हूँ—यदि मेरा यह विचार है कि तू जगह सम्पृयता में धमकी और ना गवता है। यह पक्की बात समझ कि हम उसे जाति से निकाल देंगे और फिर एक चीज रह जाता है—उस छोड़कर अपनी

मा और माता व साथ हमारी तरफ चल आना । यह कहकर उसने नरमण को हाथ से ऊपर उठाने का प्रयत्न किया ।

अपने मानसिक अतद्वद के वेग से भड़क हुए नरमण ने तड़ककर कहा— मरा बाह छाड़ दे ।

तो जा तू भी अछूतों में मिल जा । सजनू ने कहा—उसका पीला चेहरा उस निराशा में चमक रहा था जो उसे नरमण से हमेशा के लिए विदा होना पर होती । उसने अपने गरीर से चलने को कहा ।

दूरे ठहर—जरा मैं माँ से तो बात कर लूँ । नरमण ने कहा । सजनू चन्ते-चन्त बोला मेरा जाना मरे आने से अच्छा है । तू अपना रास्ता चुन ले ।

अपनी कौठरी के भिन्नभिन्न अंशों में से नरमण की उदास आँखें अपने मित्र को देखती रह गई । उन आँखों में कोई भाव नहीं था—बस सूनी थी । दो बच्चे पास लड़े अपनी जुगाली करते हुए अपने ही ढग से धीरे धीरे धारा चवान की आवाज कर रहे थे और नरमण को देख रहे थे ।

नरमण का आवास में जो मय की गहरें थीं वह भवर-सा बनाकर अब उमक वन में उतर गई थी । उसका दम घुटने लगा । वह उस भीतरी अनाज का काग्रा से उठकर बाहर आ गई जहाँ वह अपने पिता के लिए तस्मा और माँ के लिए मकान बना रही थी । उसने अपना भकी पसकी की रानाया व नाच सं बापू को बड़ी चिंता में बाहर जात देखा था और उसका अनाज था कि वह—उसका बापू—उसका माई व मित्र के पिता व बार में चितित था—जिसका नाम वह अपनी जुवान पर न जा सकती थी । क्योंकि उमक खानपान में हा तो उसकी सगाई नगमग हो चुकी थी । पर उमक निर्दोष चेहरे पर किसी ऐसे सत्य के ज्ञान का चिह्न नहीं था जिसका सबब होने वाला मानवी बलह व बबडर स हो और जो उमक पिता व चेहरे पर पूरा तरह छाया था । नरमण की आर सबका

व्यवहार धज्झा था बस केवल उसकी माँ कभी कभी अपनी टी वेवे स्वतंत्र मन की किसी अरुचिपर बाह्य अभिव्यक्ति से रूष्ट होकर डाट देती— तेरे मिर से तेरा पल्ला हमें ग्रा हटा ही रहता है और इन बेहूदा चमारों की ननवाई आखें तुझे धूरती रहती हैं ।

रुकमणी को पता था कि रात की देर तक उसके माता पिता उसी के भविष्य के बारे में झी बात करते रहने । पहले तो दहेज का प्रश्न था । महीनो तक वे यह निश्चय न कर सके कि रुकमणी का दिवाह निकोहपुर के जमीन्दार के बेटे के साथ कैसे करें क्योंकि उनके व मा बाप पाँच हजार रुपये मांगते थे । फिर एक दिन अचानक सज्जन ने लड़कान में अपने मित्र लछमन के नाम का प्रस्ताव रख दिया और दोनों घरानों को लड़कियाँ का नेन-देन कुछ ऐसा शुभ काय लगा कि दोनों घरों में यह विचार जम-मा गया । पर अब ' दोना मुटु बा में आपस के मतभेद का विचार उसके दिल में दगती मा काटता हुआ मातूम हुआ ।

"अपने हाथ में आ जा रुकमणी । माँ ने चिल्लाकर कहा । तू घर में एक टका घरावर तो है पर अपने पिता तथा भाई का कष्ट दे रही है । हम नहीं मातूम कि पिछले जन्म के कौन-से पाप आम आ गए कि हम धूनीसिंह के लड़के का तरे लिए लना पडा और उसकी लड़की को तेरे भाई के लिए । कितना पतन है हमारा ! हमने कभी सरकार के मामने मिर नहीं भुनाया और अब इस धूसासिंह से नीचा देगना पडा—वह धूनीसिंह का अछूत हो है ।

रुकमणी ने एक सज्ज में कहा । वह बाहर की रमाई के घरामदे । मुकड़ी-मी बठा रहा । माँ के ये वाक्य उसे अविश्वसनाय लगने थे । उसकी साँस रुक गई और उसे लगा जैसे सारी मृत्ति एक तेजी में घूमने वाला चक्कर हा जिसके बाव में वह लटकी है । उसका निर्णय जमी हुई दृष्टि के सामने दानान में रखी हुई चारपाइयाँ तरल लगी ।

'मा बिहमत की मारी ! अपने हाथ हिला । कुछ काम कर

पालक तो काट ल । —माँ न कहा ।

फौरन हा रकमणी ने दरतीनुमा चाकू को उठाया जा नकही के पायदान पर गगा था और पालक का साग काटने लगी और जस वह एक मणी की तरह चाकू के पने सिरे पर बार-बार हर पालक का लाती थी धन सोचता जा रही थी । उसे अपनी माँ समझ में न आती थी । कल तक तो घर में किमा कनह का चिह्न न था । आपस में इधर उधर की बातचीत होती थी पमला की रुपय की । हमगा की तरह सजनु उनकी साथ घर में पाम में गुजरा था । उसने उह चारी से देख ही लिया था । उनकी आंखा में उनकी नजर टकरा गई थी पर अब उनकी माँ के गाने में उसका चेहरे पर ऐसा पर्दा डरवा लिया कि वह दानान की गार देवन का भी साहम न कर सकता थी । मूय भाकाग में ऊचा चन्ता जा रहा था और उसकी उष्णतापूर्ण धकारों से टकरा कर रकमणी की नूय दृष्टि नीचे आती थी ।

चार

प्रायना की पहनी घड़ी व बाद पंडित मूरजमनी को आभाम हुआ कि आज उसे जमीनार ठाकुरसिंह जैसे महान व्यक्तित्व की प्रवहेलना करनी पड़ी जब कि व मंदिर में आए थे इसलिए उसने अपनी मफें दानी व उचित वभवपूर्ण व्यवस्था में किया और दायें हाथ में छड़ी और बायें में माला नवन मंदिर में बाहर चले गिया ।

मूय सन्सार पर अग्नि उगन रहा था—जस-जस वह समतल भूमि से उन पहाड़ियों की ओर गुस्म में साल होकर जा रहा था जो पंजाब की राजस्थान में अलग करती हैं । पन्निन मूरजमनी ने मूय को एक क्षण देना फिर अपनी दृष्टि जल्दी से पृथ्वी की ओर लौटा ली और मूयत्व में त्या की प्रायना की । लेकिन जमे हो मूय की लपलपाती हुई गर्मी ने उसका चेहरे को झुलमाया उन्हें पान हा गया कि इस श्वेता के हृदय में दया न थी । इसका रोष तो मदा में अधिक था । इस दवता के मन की बड़बाहट तो इस पाप में भरे सन्सार को बस निगनना ही चाहती थी ।

निश्चय ही पौराणिक पवित्र पुस्तकों में लिखा था कि बलिपुत्र में मूय का ताप बहुत बढ़ जाएगा और सन्सार का जनाकर राख कर देगा क्योंकि सब पाप-धर्मों का पन तो मिलगा ही । पंडितजी ने जो प्रफवाहें मूय की लकिन व विस्फोटक और उमम विपाकत होने वाले समुद्र के पानी के बारे में सुनी थी उनसे उनका विनवास इस भविष्यवाणी में और जम गया और ऐसा क्या न हो ? तबरेदार धूसीसिंह और उसके

तलवाचट्टो द्वारा धम का खडग इस अधियारे युग क फलते पाप का एक चिह्न ही तो था । पुरोहित का चहरा ताप की चिंगारिया से जल उठा और पाप में डूबे मानव क प्रति धृणा का भावना से उसका भीए तन गई ।

जमीदार ठाकुरसिंह और उसका लडका सजनु पीपल क पड के नीचे बठे थे—कुछ एस जस कि उह कुछ पूव आत्मिक ज्ञान हो कि देवता उनकी हो और हो । वे दया कृपा क दूत पंडित सूरजमना की बाट जोह रहे थे ।

पंडितजी —सजनु ने जोर से चिल्लाकर बात शुरू करनी चाही—
पेड के नीचे फडफडाती हुई चिड़िया की पत्थर से मारकर भगात हुए ।

सूरजमनी ने अपना हाथ उठाने हए लडक को गान करत हुए कहा बेटा और वह पीपल क नाचे पत्थर की चौकी पर बठ गए ।

मुझे सारा भगडा पता है । मैंन इसक बारे में थाडा सोचा भी है । अब तू जा लडक मुभ तर पिता से बातें करना है ।

लेकिन ? सजनु ने अपमानित-सा होकर विरोध किया । वह खड़ा हो गया और आंधा में हिनन बान बग की तरह कापने लगा । फिर यह कहता हुआ वहाँ से चला गया खुद तो तुम डबोग ही औरों को भी न डूबागे ।

जमीदार ठाकुरसिंह ने अपने बेटे क उत्तजनात्मक व्यवहार को रोकने का प्रयत्न अपने दाँयें हाथ का घुमाकर किया और उसकी ओर से बान काटकर पुरोहित में बाना यह लडका तो हिनहिनाते बाना घोस है—बगमिजाज । थोड़ी दूर की चुप्पी क बाद फिर बोना पंडितजी उम धूनीसिंह का हकवा-पाना बग किया जा सकता है । जहाँ तक उन चमारा का सबब है वे उन भीपडिया में रहने हैं जो उम जमीन पर बना हैं जिस हमारे घर ने उह इस गाँव में दी है । उनसे बनी में निकल जान क लिए कहा जा सकता है । धूलीसिंह धार सरकार उनक लिए गाँव से बाहर घरा का प्रबध कर सें न ।

निश्चय ही यह लोग पापी हैं और उस सबके पात्र हैं जा आप कहते हैं। मूरजमली न कहा। पर य तो अपना कम हो कर रहे हैं। उसका फल चलेगा। करने दो इह जा चाह—वर्णों सब तुम्हारे साथ हा—भूलीसिंह और वह अपना दीवान रूपवृष्ण।

जमींदार ठाकुरसिंहने उत्तर दिया। धूनीसिंह तो कभी हमारी तरफ न होगा। और तो तो मैं समझ सकता हूँ पर वह तो अपने सरकारी घोड़े के गुमान में है—अपनी लबरदारों के। और भूत जाता है कि मैं पचायत का सरपंच हूँ—जनता द्वारा चुना हुआ। दीवान रूप वृष्ण उसकी सहायता कर रहा है और उस सब का डेरा दिला रहा है जा गाँव और मुहगावें के बीच बना करेगा। तभी तो वह सड़क को बनाना चाहता है।

यह ही क्यों उमना बेठा लक्ष्मण भी हमारा विरोधी है। सज्जन ने अपने मित्र की मानसिद्धि अनिश्चितता का नकारात्मक दृष्टिकोण का रंग बढाकर प्रस्तुत किया।

तुम्हारा भोलापन हा तुम्हारे और उस सब बीच में खाई बन रहा है बेठा। पुरोहित न सबकारी से कहा। जा और उसके सबके का महा बुना ना।

जमींदार पण्डित मूरजमली का बुद्धिमत्ता से बड़ा प्रभावित हुआ और अपने उठे हुए हाथ से इंगाराकर सज्जन का धूलीसिंह के घर जान को कहा।

पुरोहित और जमींदार ठाकुरसिंह फिर एक बार दर तक चुप बैठे रहे, और इतने समय में दोनों अपने मन में सोच रहे थे कि क्या धूली सिंह और पण्डित को चकमा दिया जाय और साथ-साथ दीवान रूप वृष्ण से टकरा भी न हो—जो सबक बनवान पर तुना था। कुछ देर बाद ठाकुरसिंह ने यह धारणा सहन न हुई। यह भूमतापूर्ण जन्म में वह गया चाहे वसा उसका ध्यान न था—

हम बहुत कुछ कर सकते हैं—अगर चाहें तो। जिस भूमि पर

चमार रहत हैं वह मेरी है। थोड़ा सा भाग घूनिस्सिह का है पर जमा उनके कहन है कुछ तो करना ही है।

सरपंच ठाकुरसिंह। पुरोहित ने सुनामदी नहज से कहा। पचायतका प्रधान होन क नाते तुम्हें बुद्धिमानी से नाम लना होगा। य लोग ता अपन कर्मों स ही अपन अगिष्ट की ओर जा रहे हैं—अपनी भाप जिया की, मविषया और घल म लथपथ। उनकी फम वाली छता म निक नता हुआ धुआ और दम घोटन वाली गर्मी उनके लिए पर्याप्त दण है। और मरा विचार ता यह है कि हमारे योगी की गती थी कि उन्होंने हरिजन क हण हण पतरा का तोड़ने म इकार कर लिया। तुम्हारे लिए श्राग म म बचकर निकन जाना अधिक आसान है—इनक अपने दुःखमें से बचन की अप ता। य योग तो अपन पिछन कर्मों स दूषित रहग पर तुम ता अठ-कुन क हो। अर ता एक गुड़ बग्ने वाली पूजा की आवश्यकता है और तुम्हारे बुटुव पर तो बरे नभना का जो छाया है उमका तो एक विगिष्ट पूजा म ही टाना जा सकता है।

जमींदार न पुरोहित क चहरे को एकटक देखा जम उम बिश्वास न आ रहा हा कि सूरजमनी एमी परिस्थिति को भी अपन हिन क लिए प्रयाग कर सकता है। वह पुरोहित की चतुराई तो जानता था पर यह गुड़ करन वाली पूजा का प्रस्ताव तो किसी नरक क देवता क मुख म आया लगता था। पश्चिम सूरजमनी न जमींदार के गान मुख पर एक छोटा साई हुई निर्दोष छाया देखी। स्मरण उमन करणा और सम्भावना का पाठ पढ़ने का प्रयत्न किया और कहा माद रखो कि हर पुण्य और स्त्री म दमी याति होनी है—चाह वह कितना गी छोटा हो और योग अपन पिछन पापा का पर्याप्त नड मागत है। निश्चय हा उन्हें दण भोगन चाहिए कयाकि इसम ही तो व भगन जम म उच्च जाति का पाएंगे या ईश्वर का पहचानेंगे। मरि उहें धम सिखाना है। पर व ईश्वर के निवास-स्थान क भीतर नहीं जा सकते। मैं उन्हें कमा नहीं जान दूगा। लेकिन य धम की

रक्षा के हेतु जो उह धयना से छुटाएगा मूखी भेंट बिना मंदिर की पूजा किए बड़ा मकत है। इनकी स्त्रियाँ बड़ी घम निष्ठ होती हैं और जो कुछ द मकता है देती है। भावि की प्राप्ति और सारी आत्माभा की उन्नति इस पर निर्भर है। कोई भी मूखतापूर्ण काम कत्रियुग का भक्त और समाप ला सकता है। और उभसे उन सबका अनिष्ट होगा जिनके ग्रह आपस में टकराएंगे।

जमीनार ठाकुरसिंह पुरोहित के मस चतुर तर की मुनवर और भी गुमसुम-सा हो गया। पर वह मूरजमनी की यह न कह सकना था कि वह धन कर रहा है।

अच्छा पणित जा जमीनार न कहा। दखें आप धूरीमिह के हटो नडक में कम निवृत्त है। वह छा गया आगो बंटा।

नद्धमन ने जानो बुजुर्गों का हाथ जान और दुबका-सा भाग का भा गया।

रयो बंटा। पणित मूरजमना न कहना आरभ किया। तरा 'रेहरा पाता है क्या बात है?' कुछ दर रक्कर फिर कहा 'मार पाठ घम न मारे निदात जो मैंने तरे पिता को मिलाए वह भूल चुका है। वह अब धन ओहद और मरवाग या दीवाना है। तेरा पिता लगरगर हो तो हो पर उस ईश्वर के बाप और धार्मिक धनिया के पापा का तो डर होना चाहिए था।

नद्धमन ने पणित जी के आश्रमण से बचत हुए स्वीकार किया— पणित जी बूढ़े का निमाग कराव हो गया है।

यह नडका ता अपनी धाद्य का हो सट्टा बना मकता है। — मूरजमनी ने कहा।

सजगू जो लद्धमन ने भा जान पर वही भा गया था बात में बात जाहकर मोना 'जबिन नवरदार तो दूसरी की बद्धि से काम लेता है।'

पुरोहित ने जार मगर कहा 'यदि वह बम के माग में मटक रहा है तो लद्धमन और उमकी माँ को उसके घर में कोई स्थान न रहेगा।'

पंडित जी मैं तो घर छोड़ दूंगा। —लक्ष्मन ने सहमति से कहा।
'क्या कहता है' जब मैंने समझाया तब क्या कहा माना ?

जमादार ने सज्जनों का गात करते हुए कहा—

'बेटा—इसे मत छेड़।'

पंडित सूरजमनी ने कहा मैं तुम्हें एक या दूसरी बात करने की सलाह नहीं दे रहा हूँ। हमसे हर एक अपने भाग्य का अपने कर्मों द्वारा बना रहा है। तुम अपना भविष्य चुन सकते हो और अपना भाग नियम कर सकते हो। निश्चय ही तुम्हें चमारा का दिखाना पड़ेगा कि व सब तो अपने कर्मों द्वारा ही अभिगप्त हैं और हमारे बराबर नहीं हैं। मैं जानता हूँ तब माँ तो ईश्वर की सच्चा भक्त है और वह तुम्हारे पिता को ठीक राह पर न आएगी।

और हम तो अपने दाना घराना में होने वाले जगन की प्रतीक्षा में हैं। —जमींदार ठाकुरमिह ने बात में ऐड लगाते हुए कहा।

दाना लड़का ने यह सुनकर कुछ कृत्रिम नम्रता और कुछ विवाह के अप्रत्यक्ष बंधन का विचारकर अपने सर झका दिए। यही—एक की बहन का दूसरे से गठजाड ही तो एक मूक सूत्र था जो उन दोनों को आपस में बांधता था।

वह घर भर दिए नहीं है। लक्ष्मन ने कहा और सिवा माँ के मुझे वहाँ रात कौन सबता है ? मैंने उसमें बातचीत की है वह भी मानता है कि पिताजी हम सबका मुमाबत में डाल रहे हैं।

'अब तू अपने का बात कर रहा है। सज्जनों ने कहा।

मुमाबतें किसके लिए अच्छी हैं ? पुराहित ने कहा। तुम और तुम्हारा माँ जब जा चाहें मन्दिर में रहने का आ सकते हैं—यदि घर पर किसी प्रकार का दुरा हा। तुम्हारी माँ मन्दिर के धर्मशास्त्राचार्य का एक और कमरा दान देना चाहता है सा वह दे सकती है।

मैं साबता हूँ कि आप समझते हैं कि मैं बुरा हूँ। पर जसा कि आप कहते हैं कि उन चमारा का तो सबके दाना ही है। सज्जनों ने कहा।

तछमन और मैं दोनों अभी जाकर उनके कुटुंबा से वहा से जाने के लिए वह सकते हैं क्योंकि वह भूमि जहा उनकी आपदियां पड़ी हैं हमारे घरानो की संपत्ति हो तो है ।

पुरोहित न उत्तर दिया पर उनकी औरता की चीख-पुकार तुम्हारे गिर पर अनिष्ट ले आए गाय" । निश्चय ही यदि तुम अपने निणय के औचित्य के बारे में मतुष्ट हो तो तुम जो चाहो वह दंड उन चमारा को दे सकते हो । भगवान् कृष्ण ने भी तो अजुन का युद्ध के लिए अनुमति दी थी—यदि वह याम के लिए हो ।

इसका फसना तो हम ही करना है । जमीदार ठाकुरसिंह ने कहा ।

पण्डित सूरजमनी और ठाकुरसिंह न जाना नौजवानों को रांका नहीं चाहत उन्होंने कोई सीधी कायबाही करने का वचन भी नहीं दिया । मरय तो यह है कि उस समय पंडित जा ने एक क्षण के लिए अपनी आंखें बंद कर ली और भावधान करते हुए कहा "गाति गाति गाति ।

इस पर जमींदार ठाकुरसिंह १ आधे मन और डीन-डान्बर में जरा जोर से कहा— "उहको कोई काम जल्दबाजी में मतकर बठना ।

पीपल के पड में से गुजरने हुए हवा के भाव एक खुनी भट्टी में निकली झुनसाने वाला लपटा के थप" से लग रह थे और पंडित सूरजमनी छाया का और दापहरी में पहन धाराम का महत्व भरी नाति समझते थे । ज गमजी की । पंडितजी न जमींदार से कहा और वहाँ से चल दिए ।

पंडित जी मैं तो घर छोड़ दूंगा । —तद्यमन ने सहमति से कहा ।
क्या कहता है ! जब मैंने समझाया तब क्यों नहीं माना ?

जमींदार न सज्जनू को शांत करत हुए कहा—

बेटा—इसे मत छेड़ ।

पंडित सूरजमनी ने कहा मैं तुम्ह एक या दूसरी बात करने की सलाह नहीं दे रहा हूँ । हमसे हर एक अपने अपने भाग्य को अपने कर्मों द्वारा बना रहा है । तुम अपना भविष्य चुन सकते हो और अपना भाग नियम कर सकते हो । निश्चय ही तुम्हें हमारा को निलाना पड़ेगा कि वे सब तो अपने कर्मों द्वारा ही अभिगम्य हैं और हमारे बराबर नहीं हैं । मैं जानता हूँ तब भी तो ईश्वर की सच्ची भक्ति है और वह तुम्हारे पिता को ठीक राह पर ले आएगी ।

और हम तो अपने दोनों घराना में होने वाले ज्ञान की प्रतीक्षा में हैं । —जमींदार ठाकुरमिह ने बात में ऐंठ लगात हुए कहा ।

दाना बड़ेका न यह मुनवर कुछ कृत्रिम नम्रता और कुछ विवाह के अनुरोध वधन का विचारकर अपने सर झका लिए । यही—एक की बहन का दूसरे में गठजाड़ ही तो एक मूक सूत्र था जो उन दोनों को आपस में बांधता था ।

वह घर भर लिए नहीं है । तद्यमन ने कहा और सिवा भी कि मुझे क्या राह बच सकता है ? मैंने उससे बातचीत की है वह भी मानता है कि पिताजी हम सबको मुमामत में डाल रहे हैं ।

अब तू अपने की बात कर रहा है । सज्जनू ने कहा ।

मुमामतें किसमें लिए आया हैं ? पुराणिक ने कहा । तुम और तुम्हारा मैं जब जा चाहें मन्दिर में रहने का आ सकते हैं—यदि घर पर किसी प्रकार का दुःख हो । तुम्हारा मैं मन्दिर के घमनाला बाल भाग को एक और कमरा दान देना चाहता है सा वह द सकते हैं ।

मैं माचता हूँ कि आप समझते हैं कि मैं बुरा हूँ । पर जसा कि आप कहते हैं कि उन चमारा का तो सबक देना ही है । सज्जनू ने कहा ।

‘सद्यमन और मैं दोनों अभी जाकर उनके कुटुंबा से वहाँ से जाने के लिए कह सकते हैं क्योंकि वह भूमि जहाँ उनकी भापडिया पड़ी है, हमारे घरानों की संपत्ति ही तो है।’

पुरोहित ने उत्तर दिया पर उनकी औरता की चीख-भुकार तुम्हारे सिर पर अनिष्ट ले आए गाय। निश्चय ही यदि तुम अपने निगम के औचित्य के बारे में सतुष्ट हो तो तुम जो चाहो वह सब उन चमारा को दे सकते हो। भगवान् कृष्ण ने भी तो अर्जुन का युद्ध के लिए अनुमति दी थी—यदि वह गाय के लिए हो।

‘इसका फसना तो हम ही करना है। जमींदार ठाकुरसिंह न कहा।’

पण्डित मूरजमनी और ठाकुरसिंह ने दोनों मौजवाजा का रास्ता नहीं छोड़ा उन्होंने कोई भी चीज वायवाही करने का बचन भी नहीं दिया। सत्य तो यह है कि उस समय पण्डित जी ने एक क्षण के लिए अपना आँखें बंद कर लीं और मावधान करने हुए कहा ‘गाति गाति गाति’।

इस पर जमींदार ठाकुरसिंह ने आगे मन और दीन-दान स्वर में जरा जोर से कहा— ‘सड़का काई काम जल्दवाजा में मतकर बट्या।’

पीपल के पड़ में गुजरते हुए हवा के भाँवे एक मत्त नट्टा के निक्ली भुत्तसान वाली सपनों के थपड़ में उग रहे थे और मूरजमनी छाया का और दापहरा में पहल आगम का मन्त्र मन्त्र समझते थे। ज रामजी का। पण्डितजी ने जमींदार के कानों में धल दिए।

पाँच

भिक्षु की माँ नदमा शिव का पत्ना काना की मूर्ति के पास सबसे निचनी सीढ़ी पर बठी थी। उसका चेहरा निश्चिन्त था। उसकी आँखें उन नपकती हुई नपटा का टक्का लगाकर देख रही थी जो फूम के छनो से उठ रहा था। उहा के बाच से उसकी एक कमरे का भापड़ी अछूत धमारो के छ हूमरे टट-फूटे धरो के बाच में कभी खड़ा थी। उसका गरीर पर समीना-सा आ गया जब उसने दा बबूतरा का अपने घासल से उठने हुए दगा—और फिर उनका जनवर गिरने हुए भी। आग अपने आँचन में उसका घर के चौक के अंदर उगे नीम के पेड़ की नपेटन लगा। हर बार नपटो के और ऊँचा उठने के साथ वह उस नान देवा की ओर मुँह जाता—अपने गीत की अपने हाथा पर भकाए पर दबी अपनी बाहर निकलती हुई नान जीभ के साथ सब कुछ बम दगनी रही। कान कोयन के रंग के पत्थर में लदी हुई वह मूर्ति। गायन क्योंकि वह नहू का भेंट का आनी थी—उस कुछ चिन्ता न थी पर नम्मी अन्न भा बिसा बमत्कार की आस में बग रही।

बद्धा नदमा का अन्धाय और आन्धव न मूक-मा बना लिया और वह मुन्न-मा हा गं पर फिर भी उस अपना जाति की औरता की इक्का-टुक्का चाँगे मुनाई न रहा था जो उसमें नाच बठी थी—आपस में गुंथमगुत्था सा। उनके बच्चे डर और प्यास से चिल्ला रहे थे और अपना मोँगा के सिर के पल्ल अगिया और कमोजा का सींच

रहे थे। लक्ष्मी यह सब देख और सुनकर और भा गिड़गिड़ाकर आद-स्वर में प्रायना करती मा हमारी रक्षा करा—माँ। लेकिन ज्यों ही अपने न तौम के पेड़ का जलाना शुरू किया और कबूतर मर कर जमान पर गिर पड़ तो औरता का राना चीत्कारा का एक सामूहिक स्वर बन गया और लक्ष्मी अपने अनुयायियों की भयानक त्रिपत्ति के प्रति जागरूक हो गई। उनकी धम गुरू हाने के कारण उसने दबी के आगे साष्टांग दण्डवत्कर उसने उनकी आग से मुक्ति के लिए प्रायना की आर जम ही औरतो के चीत्कार ने उसकी आवाज के सबसे दुबले भाग को स्पष्ट किया के अर्थबिंदु जो बाहर आने का मना कर रहे थे। उनकी आवाज में छनने पड़। वह मन्दिर में हजार बार आई थी। उस अपना भक्ति की गहगर्भ में पूरे विश्वास या इमनिए उस यह भी भगमा था कि दबी उससे बड़े और उसकी निरादरी की अवश्य रखा करगी।

उसके घेरे ने उसकी इस अधी भक्ति की कई बार हसी उड़ाई पर फिर भी वह अपना श्रद्धापूर्ण स्वप्नित आस का कहीं छाडती था। वह उस त्रिकाल दबी का मिठाई तल और भोजन में जो गाव के आदारा कुत्ते को डाल दिया जाता था प्रसन्न करने का प्रयत्न करती और कभी-कभी काली के लान मुँह में दूध भी डाल देती। पर इस हाना अवस्था में जब उसने अपने आपका दबी के चरणों पर समर्पित कर दिया था दबी यित्कुन निश्चय थी। तपें अब भी भापडिया से आकाश की आर लपक रही थी—चिरमिर करता। चटख और प्रकाश था उनमें और सिरा पर यह काली काली तपें थी। सब कुछ उनसे शरीर से ज़िपटकर राग हुआ जाता था। गाव काली माई इमनिए स्पष्ट था कि सूर्यास्त का यह समय तो वह था जब लक्ष्मी का माई के चरणों में दीप जलाना था और जिस जलान में लक्ष्मी को आज दर हा गई वल्लि पिछले कई दिनों में दर हा रहा थी। इमनिए ही काली ने भापडिया को जलाकर एक विमान दीप मजा दिया था जिसके प्रकाश में वह अपने स्वयं-स्थान का

जा सके !

अपनी भून के इस अतर्जान पर और उस दंड का विचारकर जा उसे इसने कलस्वरूप मिला तदमी कह उठी हाय माँ तू न हम क्या त्याग लिया है ? हम पर दयाकर । इन औरतो और बच्चों को जो रो रहे हैं एक नजर तो देख माँ ! '—

पर कानो मा न जो अब काले घुए व पिगाचो म परिवर्तित हो गई प्रतीत होती थी और नाचती और उबती हुई आकाश से ऊपर चली जा रही थी उत्तर लिया—

मैं तुम सब को भस्म कर दूंगी जमे कि उन पशियों का किया है । तुम्हें श्रेष्ठ कुल बाना का विगेष करने का दंड भगतना पंगा । मैं तुम्हें सब तक जनाती रहूंगी जब तक कि तुम्हारी आत्माएँ राख म म प्रभुओं का आता म न उतर जाए और तुम्हारे पुत्र और दूमरे रक्का व दुप्पमों व पत्र का उचित दण्ड भोग दें और जब तुम काफी दुःख भन चुकाग बिन्दु और साप तुम्हें उस चुकेंग दानव राह का गम सगला का गिरा पर लगाएंगे तब निकानन की भगान म तुम्हें कुचला जा चुदगा तब मैं एक कान परित्त का तरह आऊंगा और तुम्हारी आत्मा का प्रता की तरह जगन व लिए पुकारूंगी । तुम जिन उन जाग्रत और भून अभाव-मनष्ट और अभिगष्ट गांव व वायुमन्त्र म मन्त्रित रहाग ।

रान और आमुग्रा व हम पालित और आनिष्टमय बानावरण म भिक्षु का माँ का एक घात निकन गई— हाय-हाय मेरी बकरा तो बनी रह गई । और मन्त्र कहकर उमन अपना माया पाट लिया । एक मिरे म दूसर मिरे तक उसका गरीर काँप गया और वह बहाना हावर गिर पया । वह पाना पन् गई था और उसका मह स भाग निकन रह म । उसका घोष इनन जार की था कि और औरतो न अपना बरान्ता बन कर लिया और उसको चक्कर खाकर गिरते दीय व सब उसका चारा धार जमा हा गई ।

‘उम्मे पास भीड़ जमाकर, उसका दम न घाटा । मिक्खु न कहा,
 उस कुछ हवा लगन दा । और वहा वह अपनी मा का दल भान क
 लिए स्वन या बकरी का बचान के मानसिक सथप म ग्रस्त खडा था ।
 पणु का मल्य उससे भी अधिक था—उमका मा की दृष्टि म क्याकि उमक
 दूध का बचकर हा तो नम्मा राटिया का गुजारा करती था । फिर वह
 बकरी को बचान के प्रयत्न म जो खतरा था उसक बार म भी मोचना
 था । लपटें घुए के वादना म से बचकर नगाकर उपर उठ रहा था
 और उम चौक म बिल्कुन अथा मा बनकर पर रखना हागा । फिर
 यदि बकरा हाथ स जाती रहा तो मा की नगानार मिक्खन का आवाज
 उमक जाना म गूज उठी । वह सहजभाव स अपनी मा का और ही आ
 गया और उमन उमक सांस क आने-जान की आवाज सुनी । फिर वह
 अपनी मा क भापड क गाँव क चौक बाल सिर का चना गया और
 परिस्थिति का समझन का प्रयत्न किया । धुए क बान्न और गाढ हा
 गए थे और भापडिया क बीच छाट चौक पर मटन रह थ । कवन
 नीम क पत्र की हरी पत्तियाँ लपटा का मगाना क ममदा चमक रहा
 थी—व लपटें जा उना स आकाश की आर जा रहा था । उसन जग
 कान लगाकर सुनना चाहा कि बकरी अभा मैं मैं कर रहा है और जिन्
 है या कि नहा । कोई आवाज सुनाई न दी । उमकी रग रग आप-हा आप
 बाँपन नगा और वह एक और भव गया । वह चौंघ गया जस कि
 अपना इच्छा-गति का नकार रहा हा । उमी क्षण—इमम पहन कि वह
 कमजोर हो जाय—उमन स्वच्छ हवा म एक गन्ग द्वास मरु और कि
 सोम गवनर वह धुएँ म मरा गनी क खुन भाग म घुम गया धुएँ न
 उमक नयना सिर और मन पर आक्रमण किया । वह दम मज ने
 भाग गया हागा । उसन अपना आँखा को बन्द कर लिया । अब वह
 धीव म था । जस हा भापडिया क मूम का मूला घाम चक्कर जती
 और उसन नपन का दसा—पल भर मे लिए चाक म पयाप्त प्रकाश हा
 गया था । उसन न्वा बकरा वहा पापल क नाक, जनी वह साधारणतया

रस्मी से बांधी जाती थी—पड़ी है। वह मत प्रतीत होता था। उसने सोचा मत बकरी को बचाने के लिए उसने व्यय यहाँ भ्रान्त का कष्ट किया। अपने जीवन के प्रति प्राकृतिक प्रेम ने उसका ध्यान दबाया और उसे अपने पर गम-सी आई कि क्या वह अपनी माँ की भिक्षा का डर से यहाँ आ गया। तबिन क्याकि अतः वह यहाँ आ गया था उसने सोचा कि क्या न बकरी जिन्ना हो या मरी उस बाहर ल चलू। वह तजी से रस्मी की तरफ चला और अपनी पुर्नीनी उगनिया से उस गाँव को खाना जिसमें बकरी का गला रस्मी से बंधा था। फिर उसने पशु का उठा लिया। उसकी अगली टाँगें एक हाथ में और पिछला दूसरे में और बकरी का अपने कंधे पर डाल लिया। आत्म बल लिए सैन्य में घटन दिए और जब सिर चकरा रहा था वह मत गरीर का नेकर जिम भाग से आया था उसी आर भाग पड़ा। हर ओर धुम्राँ और भी गाँव हा चुका था और उसमें गर्मी भी पहले से अधिक थी।

भिक्षु ने निश्चय किया कि वह चिनगारिया की चमन और धुएँ की आवाज करती हुई और ऊँचमान बास दुग्ध का सहेगा—धन्य और आत्म-बल के उन अवलोक कोष की सहायता से जिमने उसने आज तक अपने नश्य को प्राप्त किया है। पर हृदय के किसी कोने में वह जावन के लिए और मृत्यु के विरुद्ध मिश्रित भाव रहा था और यह विश्वास कर कि उसकी प्रायनामा न हा उन बचाया है उसने फिर स्वच्छ वायु में साँस लिया। जैसे ही वह गाँव के चौक में दोबारा निश्वास लिया बाबू गिराम और बापू उसका इन्तजार कर रहे थे। नटखट बच्चों उनका भाव था। हा-हा बकरी। बच्चों चिन्ताएँ। बुनिया इम भूत गई था।

बाबू ने भिक्षु का बाधा में जकड़ लिया।

चल हट। भिक्षु ने कहा मैं यह मयवान बकरी माँ का नेत्र जा रहा हूँ—वह तो बकरी का लना चाहता चाह मरा जान चली जाय।

उपर बुनिया उम्मा अपने नहक के खतर को जान गई थी जब

उमें श्रीरत्नों से पता चला कि वह बकरी को बचान चल दिया है ।

वह अपने बेट की ओर चल दी । भिक्षु ने अपनी घुघली आँखों का मोला और मत बकरी का अपना माँ के आगे पटक दिया । उसन कहा यह ते अपनी अनाखा बकरा—इसन अपने बोझ से मुझे ही मार लिया होता और यन्ि पाश ढेर और हो जाती तो मैं वापिस भी नहीं आता ।

मरे बट—मरे सास—तू मुझस पूछ बिना क्यों चला गया ? मैं तो तुम पर हजारों बकरिया योछावर कर दती । नदमी ने भावावेश म कहा—चाहे कहत-कहत वह उस मृत बकरी को प्यार कर रही था । भिक्षु तो इस कठिन परीक्षा से सहम गया था । वह बबकर खाकर गिर पडा ।

मैं मरा नहा हूँ माँ—मुझे बस एक घूट पानी दे दे ।' भिक्षु ने बेसब्री से कहा ।

मैं धूलीसिंह व घर से अभी ले आता हूँ । बाबू बाला ।

नक्षी के गरीर के सारे तल अप्रत्यक्ष पीढाभा से काँप रहे थे । अपने और अपनी साधिना व अभिगप्त विजातीय होने व नाते के काली माँ का निगम स्वीकार कर रहे थ ।

ईश्वर दया कर । —धूलीसिंह न कहा । भगवान उन पर कृपा कर ।

'तू घूटा ही हमारे अनिष्ट का कारण है । भिक्षु की माँ न लबर दार पर अपराध लगाया । माँ का राखने का प्रयत्न करते हुए भिक्षु न कहा— माँ !

नहीं-नहीं । धूलीसिंह न भिक्षु का हाथ उठाकर सात करते हुए कहा । 'यह सत्य कह रहा है । पर ऐसा किया किसन ? भाग किसन लगाई ?

जो श्रीरत्नों सामन सग थीं उन्हने ठाकुरसिंह व घर की ओर

अस्पष्ट इंगारे किए। वे अब नहीं रो रही थीं क्योंकि जो उनकी समझ में न आता था वह वे भाव्य पर छोड़ देती थी। मुर्गे की घाँस वाले दयाराम का लड़का किशोर चटपट बोल उठा चाचा—लछमन और सजनू ने भिक्षु वं घर वं पीछे भूम के ढर लगाए और उन्हें भाग लगा दी। लछमन और सजनू ने मुझे पीटने की भी धमकी दी थी अगर मैं यह भेद खोल दू तो।

हैं! —धूलीसिंह छोटे में बच्चे की बक्वास को मभीरता से न ल सका। किमने किया? वह जोर से चिल्लाया।

छोटे नन्हेन दाहराया लछमन और सजनू ने।

धूलीसिंह गडा-खड़ा अपनी मोटी नाक में धुआँ सूँघ रहा था— उसकी आँखों में आसू छनक पड़े और भावानिरेक में वह भिक्षु की माँ के चरणों पर झक पड़ा—महकहत हुए— मा भुभे क्षमाकर दो—यह सब मरा ही दोष है।

छ

थप्ट जाति हिंदू के इस भाव प्रमाण पर भिक्षु की माँ की आँखों से आँसू बूलक पड़ और उसने गल में सिमकियाँ बघ गयीं। बड़ा मरी सारी प्राथनाएँ गरी खेत के काँटा में मरकर रह गई हैं।”

भिक्षु गमीर खड़ा था बोलने की इच्छा नहीं थी पर अब वह उस कोमल दृश्य को घुघनाई आँखों में देख मुह मोट चुका था और लपटा पर से उठने वाला धुएँ के बारे में सोच रहा था। वह भजवृत्त ईमानदार पर पात व्यक्ति था और आत्मा में इतना पवित्र कि किसी का धृणा न कर सके। वह उच्च जाति वाला द्वारा बना गई हिन्मा और अयाय सहन का बहुत आदमी हुआ था—बिना विरोध के। उस वक्त वह आँगा थी कि परिश्रम और अधिक परिश्रम से उस मुक्ति मिल जाएगी पर कम यह यह न जानता था।

जो गिरे हुआ के सिरा पर चढ़ेगा वह अवश्य ही गिरगा’ उमन बड़बाहट से कहा।

वह हरामजाँ मरा बड़ा लक्ष्मण ! धूलोसिंह दहाडा। ‘बह’ पर मैं अभी काम न रख सकगा। चला जाय वह ठाकुरसिंह के घर। धूल चाट यहाँ की। अपना माँगी मजदूर के पास जिनकी गुलामी का जहन्नियत है। गुस्ताख लड़का वहीं का। मैं इन लड़कों को सबक सिगाऊँगा।

“सबराबर तुम्हारा भी घर वहाँ है ? भिक्षु की माँ ने कहा।
‘तुम्हारी घरवानी घर से चली गई है और उसने पंडित सूरजमना के

मंदिर में गरण ले ली है—और नछमन अपनी होने वाली दुल्हन को तुमसे अपने अधिक निकट समझता है ।

गिबजी का कोप गिरे इन पर । धूलीसिंह न कहा । मैं वहाँ स्वयं ही नहा जाऊंगा । और वह वही खड़ा रहा । गस्से से उसका चहरा और लाल होना जा रहा था ।

‘आओ—मेरे सारे बेटे आओ । हम सब यज्ञा रहेंगे और काम करेंगे । आओ और जो मेरे घर में है सब उठा लो । हम रात को फूम पर सोएंगे और कल मैं गुडगाँव जाऊंगा और सरकार से नतीला रपवा ले जाऊंगा जिससे यहाँ की भोपड़ियाँ बन सकें ।

बन—बन । बाबू ने हलक से कहा—अपना विरोध मन हा—मन दवाने हुए । उसका चहरा लाल था ।

उन अछूतों की जितनी घर-बार को उसके बन्ने और सज्जनों ने जमा दिया था सहायता की प्रतिज्ञा करने के बाद भी उन अभिमान आत्माओं की पीड़ा का बोझ उसका सर पर था । साथ-साथ हिंदू धर्म का बोझ भी जो उसने जन्म का धर्म था ।

उसने कभी न सोचा था कि जाति-पाति के नियम जिनका पालन वह करता आया था एक दिन यह विपत्ति आएगी क्योंकि रीति या रिवाज का यह एम मानता आया था जस कि अछूत अपनी गिरी हुई अवस्था का और यद्यपि वह अपना उच्च जाति में जा उसका स्थान था उसको न छाड़ सकता था उसका हृदय में अपने बन्ने के द्वारा धरो में भाग लगाने का अपराध को स्वीकार करने की भावना थी । साथ साथ ही अपना शपथ कि वह अछूतों को मदक पर काम करने के लिए नकरा बन पंगा था जिससे वह निकट अवस्था पहुँची थी । वह दख रहा था—बाबू का बाना समझना हुआ चहरा जो उसा की निगा में देख रहा था ।

उमरा घर लानी था जमे ही यह वहाँ पहुँचा । बग—पटुपा की डकार मुनाइ दनी था । उस अपने अकलपन में और भी उनाट-भा

मालूम हुआ क्योंकि वह जानता था कि वह पचायत या विरादरी के पास सहानुभूति के लिए न जा सकता था। उसने दारान व पास लटो चारपाई का बिछाया और उम पर बैठ गया। फिर उसने अपने आपको मूख-सा मनभव किया। बहा बट बठ और अचतन अवस्था में वह हुक्का तलाश करने लगा जो कि उसकी पत्नी राज ने आता थी जब वह घर बापिन आता था। पर तुरत ही अपने घर से बाहर गला में अपने पीछे चलन वाला की उपस्थिति का उस विचार आया—अद्वैत औरता व रान कराहन और बीसन का। व मव उमका नक के वामी मातूम हुए जिन्हें उनके पिछन पापा की सजा दा जा रहा हो।

उसकी मानसिक प्रतिक्रिया पहलू ता चिड़न की हुई क्योंकि उस निमी का दुख में राना अच्छा न लगता था। वम अब चुप करा। वह दरवाज पर आकर चिल्लाया। पर जमे हा उसने उनको अपनी इयात पर रेंगन हुए दवा उसने हृदय में अपने प्रति हा रानि भर गई। क्योंकि व सब वही ता थ जिनका वह दनदार था। जिनका घर घर नुं जान की क्षति उस पूरी करना थी।

औरता ने नम्रता से अपनी निगाह नाचा कर सी और जल्दी से अपने चहरे पूछत स डक लिए। व उमम टू फूट गंगा में प्रायनाकर गनी थी और वक्के दूध के लिए चोगर रह थे जब कि लडक लडक थ या गाक में पीछे बटे थे।

स्त्रिया का रान की आवाज में वमी कथना और उनके मुख की समस्त अवस्था न उसे पागन-भा बना दिया और उसने चिन्तन के लिए अपना मुह मोला। तब उमने देखा कि भिक्षु न उम सार दुःख में मुह पर लिया है और अचानक उम उम लडक पर दया-सी आ गई जिसकी दगा उमस भा बुरी होगी। उमने आवाज में कहा—

अब मव था जाओ—घर में चने भाओ।

वह भगवान का चली ता अपने उचित स्थान की चला गई—मन्दिर की। वह दुःख सम्मन मेरा लडका हा नहीं है। मैं भी हमारा व

लिए जाति से निवृत्त गया। इसलिए यह घर तुम्हारा है भागो मेरे बेटे बटियो। यह कन्कर उसने घर का दरवाजा पूरा खोल दिया। उमन एक विगतवश्या देव की तरह लवे-लवे डग भरे और अपनी अनाज की मुख्य कोठरी की ओर आया जैसे कि कोई हृदय के भीतर रोप का ज्वालामुखी फटना चाहता ॥। एक क्षण उसने कोठरी के अधिपति से धर धर देखा—उसकी आँखें अंधेरे में देखने की आशी थी। उमन अपना घरवाना की कमीज और सर का कपड़ा एक लट्टी पर टंगा नजर आ गया—उसने उन कपड़ा को भपटकर उठा लिया और वह काफी तेजी से दौड़कर दरवाजे पर पहुँचा क्योंकि झटूत घर में न आए थे। आधो—और इन्हें ले ना। उसने पुकारकर कहा और उमन कपड़ औरतों की ओर उछाल दिए। अब उसका मन का गति हुई। उमन अपना सड़क लाता और अपने मोना हाथों से कपड़ों को उठाकर वह कोठरी में से बाहर भागा—जिस रास्ते में खोरी करने वाला कोई टुटता है।

वह फिर वापिस आया। कपड़े जिस तसे उठाए और गोली में भर भरकर गोली में उछाल दिए। उसका दिल डोल की तरह बजने लगा पर वह कपड़ फेंकता गया जब तक कि सड़क खाली न हो गया। आधा आधा मेरे बेटे बटिया—आधा सब कुछ तुम्हारा है—अब मुझे अपने पाप धान के लिए गया जान की आवश्यकता नहीं। आधा—जो जा तुम्हारा साथ है वह यही न ना। नडका के लिए तो कुछ नहा पर औरतों के लिए काफी है। वह कह रहा था और उसका सास फूटना था। वह चिन्ताया तुम मुझे ला नो—मैं सजा के योग्य अपराधी हूँ। मैं अपने जन्म के घम से दूषित हूँ। तुम चाहो तो मेरा भोजन बना ला। और जिस हवा उसने में गंध के उसकी आँखा से आँसू लुढ़क कर चट्टर का रेखाधा पर आ गिर उसका मोनी नाक की भरिया का नाचियो में वह गए और वह फिर लटकाए चारपाई पर बैठ गया।

सात

सूर्य डूब चुका था और गाम का अधियारा खता पर फलता जा रहा था। भिक्खू धूसीसिंह को जमीन की ओर अपने साथिया सहित चुपके चुपके जा रहा था। वह और लहका स थाड़ा और असग हा गया और उन पर्यरा व डेर पर बठ गया जो उसन उम दिन तोडे थे। वह गाँव के बाहर था। उसन अनुभव किया कि यह जमीन उसकी भी उतनी ही थी जितनी कि हिंदुओं में स किमी की भी क्याकि वह उसका बिना दूपिन किए हुए बठ मवता था।

यह वही पृथ्वी थी जिस पर वह बचपन में खेला काम किया और जिस पर वह युवावस्था तक पहुँचा। ऐसी पृथ्वी स सपक-मात्र बड़ा बिन्वासोत्पाक था। पर फिर उसे यह काटन वाला विचार आया कि इस सबण हिंदुओं द्वारा अश्रुता पर भादी गई नडाई में उसका इस पृथ्वी स सबध टूट गया। इस विचार से उसका मन लान हो गए और उसकी नसों ऐसी उत्तजित सना की पकितयाँ उन गद्ग जो बिनाह की भावना स उत्तजित हा।

उन लज्जा और हार व अथ-पनन का भावना से सिर झुका लिया। वह अपने साथियों की आँख स आँख न मिला सकना था पर फिर उसकी दृष्टि अपनी नाक से परे चली ही गई और भाड़ी पर टिक गई। भूरे रँग की छिपकली वहाँ तक में बठी थी—मृगत हुए गोबर पर बठी हुई मकियाँ व मृण्ड को खान के लिए। छिपकली ने अपना सिर ऊपर उठा लिया था और अपने मुँह की नीच से आक्रमण करन

को बिल्कुल तयारकर रखा था। बस एक बार एक भक्ती एक क्षण के लिए बठ भर जाय। वह छिपकली बार करेगी और मक्का का निगल जाएगी। पर भिनभिनाता हुई मक्खिया सतरे में घनभिन्न थी।

भिक्षु की विचार-व्यवस्था गठबड थी। उस इस समय के मंत्र प्रपन्न के क्षण याद आ गए जो उसने आज से पहले जब तक उन्होंने उनकी भापडिया में आग भी न लगाई—बिनाए थे। हमारा सज्जन और नछमन ने उससे तरह-तरह के नाच काम कराए चाहें वे मंत्र साध साध सनत थे। वह तो उनका एक भूमि रहित चमार नौकर था। पंडित सूरजमना ने एक बार उसे बचन दिया था कि वह उसको मंत्र के स्कूल में दाखिल कर लेगा यदि वह आए और उसे पवित्र आंगन के बाहर ही बठा-बठा पाठ दाहराता रहे। हमनिष्ठ उसे पढ़ना निलना सीखने के लिए दो मील दूर गिरानपुर गांव जाना पड़ा। वहाँ उसका प्रकृत भाई डंडाराम जो स्वयं भी एक छाटा माटा कवि था उसे पता था। वास्तव में डंडाराम ने भिक्षु का भी एक कवि बना लिया था जब कि जमींदार और नवरदार के लक्ष्मी वीस तक गिनती भी न गिन सकते थे। पर वे सज्जन तो अपने घर के इतने समीप थे जितना कि अब वे कभी न हा सक्ता था। उसका घर ही वहाँ था अब? स्वयं की का मूर्ति उसका आत्मा के सामने हमारा एक घूमती हुई फिरकी की तरह धधकी-भा नज़र आता क्योंकि वह उसका अपने हृदय के क्षण में दमन का भा मात्तम न कर सका था—हम आता में कि वह उसे नहीं ए सकता है। डंडाराम ने भिक्षु का बताया था कि रामायण और महाभारत के मुगं में बहुत पहले आ यहाँ एक युद्ध हुआ था जिसमें उच्च जाति हा जाता था और अब कोई धाम न थी—मिवाय इमक कि घूली मित्र उनका मनाया करने पर तुला था—इस गत पर कि वे भी कुछ करने का तयार था।

ता । वह आ रहा है पकीना नाक बाबा—अब कुछ नष्ट शान के बाबा राजा हुआ । —बाद ने कहा—म कहा । १

चल सुधर' — शरय न बाबू को फटकारा ।

एक ग्राम वाल गिवराम न नबरलार की ओर अपनी नजर डाली,
जम वह उसे एक पाप-पूण राचकता से देखना चाह रहा हा ।

बूढ़ा बापू और गराबी गकर उकड़ू और सहम-स बठे रह और
उहोने अपनी भादत के अनुसार हा तवरदार का हाथ जाड लिए ।

लडका अब चल आया — धूनीमिह न कहा । हमारे पाम और
अधिक समय नहीं है । रात की गरण लन क लिए हम कुछ-न-कुछ तो
बनाना हा है । मैं औरतों की एक पुराना कनात द दा है जा व अपने
माप ला रही हैं । गिवराम गकर—तुम जाकर चार वास ता ल
आया । वे मेरे घर क बाहर गरी म पडे हैं ।

भिक्षु न धूलीसिंह का वृत्तपना मे दखा । फिर उमन अपनी आखों
म भर आमुआ से अपना ध्यान हटाकर उन दा सडका की ओर नेवा
जा गांव की ओर चल जा रह थे ।

धूनीमिह समम गया कि हट्टा-कट्टा भिक्षु भा विपत्ति से भूव गया
है । उमने कहा—

इन मुख नागा क कम दखकर भवन कबीरा रा दिए ?

जो जी चाह कहा — बाबू ने ताना दन दुण कहा । नकिन तुम
ता उन्हीं म म हो ।

उनक पाप तो धुन जाएंगे हमारे ही पादिया तब चने हैं ।
भिक्षु न कहा ।

धूलीमिह न अपने मह म भागा का विगजन हुए और अपना मूछा
क नीच दागा की पामन हुए कहा—

यह तुम क्या कहन हा ? उमके ओर हमारे की बात कमी ?
जम य गडक न चाहते हा और हम चाहन हैं । व भी सडक बनाना
चाहत थ । बस व य नही चाहत कि तुम काम क्या-ओर रोडा कमाया ।
ओर मारी बातें भूठ हैं । मैं उनमें से जतना ही अधिक या कम है
जितना कि तुम । जब घन का प्रन्न धाना है हम इतना अवय्य कमाना

पड़ता है कि भूख और अकाल से अपनी जीवन रक्षा कर सकें। मैं तो नए धर्म का अर्थ यह ही समझा हूँ। प्रायनाए बनार हैं। सोचो तो एक मेर जसा किसान जिसके पास दस एकड़ भूमि है कितना कमाता है ? यह जमीन पर काम करता कितना कठिन कार्य है। हम नगपन को अपनी धन रहित अवस्था की नग्न सत्यता का देखना चाहिए। हमारे देश में तो भगवान को भी रोटी के रूप में ही साकार अवतरित होना चाहिए।

जमीन्दार ठाकुर सिंह ने पास तुमसे अधिक संपत्ति है — बाबू ने कहा।

यही कारण है कि उसका और मेरे बेटे ने तुम्हारे घरों को आग लगा दी। — घुलीसिंह ने उत्तर दिया।

निश्चय ही। — बाबू बोला।

घुलीसिंह चुपचाप बठा रहा उस आगा में कि भिक्षु जान जाएगा कि वह क्या करना चाहता है। पर अज्ञता का नेता भिक्षु तो बिना ध्वनि किए सोम में रहा था। वह उस दूबत मूरज के बारे में सोच रहा था जो ताल और नारंगी रंग की पृष्ठभूमि से उभर रहा था—जम आकाश के मिरे पर किसी करन के बाद।

आखिर तबलार उठा और उसने धीमी आवाज में कहा—

हम कुछ गरण-स्थान टहनिया और चटाइयाँ बनाए हैं। हम लिए हम यहां बस साबन आए न बैठे रह।

अच्छा — भिक्षु अपने कंधे मांजत हुए बोला। फिर उमन अपनी बांहें फना और उठ गया।

उमन कहा— सब कुछ जनकर रख हा गया। सब कुछ सिवाय इन हाथों के।

घुलीसिंह ने अपनी माटी नाक हिलाकर सहमति प्रकट की और अपना हाथ भिक्षु के कंधे पर हल्के से रख दिया।

आठ

धूनीसिंह की घरवाली सप्ति और उमकी सड़की माला मंदिर के भीतर मूर्ति के चारा ओर अघेरे में परिक्रमा कर चुकी थीं। फिर उन्होंने विष्णु भगवान की प्रतिमा को हाथ जोड़ पंडित सूरजमनी को नमस्कार किया और वापिस लौटने लगी।

मेरा सिर तो बार-बार परिक्रमा करने से चकरान लगता है — सप्ति ने कहा।

‘लेकिन तुम यहाँ आना जो चाहती थी। — माना न अपनी माँ का हाथ पकड़कर बाहर की ओर से जाते हुए कहा।

सफ़ा धुआँ घरा की छत्ता पर से उड़ रहा था और छोटी छोटी नपटें बिगाड़ो की तरह चीक में से रह रहकर ऊपर की उड़ रही थी।

‘गाँव ही हम घर पहुँच जाएँगे’ — माला की माँ ने आराम की साँस लेकर कहा। मुझे आशा है कि नियो ने लिप मीठा तल तो बाँपी है। तब तो मैं एक और भरदासकर सकती हूँ कि तेरे पिता अपने घम माग पर फिर आ जाए।

पर लम्बी की आँखें तो धुएँ और आग से उठनी हुई सपिल कुँड लियो पर जमी थीं। उमने अपनी माँ की पवित्र कामना की कोई परवाह नहीं की।

अचानक माना को चमारा की मापडिया की ओर से आती हुई लगातार रान चिल्लाव की आवाज़ें सुनाई दीं।

उने पूरा पता था कि यह धुआँ किस ओर से आ रहा है। वह तो

उन गतियों में अछूत बच्चों के साथ खेल चुकी थी। वह उस पूरे दृश्य की अच्छी तरह कल्पना कर सकती थी जो घुए के जगमगाते हुए बाग़ानों में—जो उस समय उमक सिर पर से गुजर रहे थे—रचा था।

मा उद्यमन और सजनु न चमारो क धरो को आग लगा दा है। —उसने चिल्लाकर कहा।

है। —क्या बजती है पगली ?

व कह रहे थे कि व ऐसा करे और बापु—वह क्या कहगा ?

सति पीपन क पंड क नाच एस बठ गई जम वह वहां डर हा गई हो। उसने अपने माथे को अपने हाथ से पोट किया और हाथ हाथ कर के रोने लगी।

माला का भी जो भर आया पर वह रो न सका।

वह गूमी-सी खड़ी रही और उसका मह साल मा हां आया। वह उस सनतान की कल्पना कर रही थी जो उसके घर को अपने में समा लगा क्योंकि उसका बड़े पिता अपने खानदान को अछूतों के विरुद्ध ठाकुरमिह के खानदान से मिल जाने पर कभी क्षमा नहीं करेगा। वह जानती थी कि उमक हाथ सजनु के हाथ में दिए जाने का वचन दिया जा चुका है और उमक बाल में लक्ष्मन को स्वामी मिलनी है। यह विचार इस समय जो आया तो उसकी अन्तरात्मा बिना आवाज किए चिल्लाने लगी। उसका रों कण्ठने लगा। उसकी नाक कान और धीर्धै जनन लग और तबचा बजने लगी। उस यह भी आभास हुआ कि क्या अवसर तो था कि वह हम अन्त-वन्त के व्यवधान से मुक्ति पाए और वह सजनु को न भोंपी जाए—सजनु जिसको वह उसके घमण और उद्वेगन के कारण घृणा करता था। उमक हृदय अछूत औरता के प्रति महानुभूति में भर गया चाहे वह हनप्रभ-मा लड़ी थी और यह न जानता था कि वह अपनी हमर्नी का कम प्रतीति कर।

अब आजा माँ। उमन अपना माँ सति का देखते हुए कहा। हम

चनकर दखना चाहिए कि कहीं आग हमारा घर तक तो नहीं फन रही है।

मन्ति व बान चहर पर झुरिया की मख्या और बन् गइ। वह बोला—यह हमारे बुरे कर्मों के फन हैं और अपनी आँखा का दुपट्टे व एक सिर म पाछने हुए वह वहीं बठ गइ। उम चक्कर आ गया।

माला का हृन्त तेजी म घट्कन गगा और वह अपनी माँ सन्ति पर नट गई। एमा लगना था कि वह बूना औरत माना का माँ मन्ति—चिरकान म एम हो नटी हा—माना का हाय अपन मिर पर रखे थाडा दर बाद वह उठा। नड्कडाता दुइ गिरता दुइ और आह भरती दुइ। फिर उमन अपना हाय अपना बंटी के कवे पर रख लिया और उमक पीछे-पीछे चन दी।

अष्टत औरतें माला के पिता व घर व बाहर गली म एम धिच पिच बग थीं जस कि व मरा हुआ का मानम कर रहा हा।

हम तो तबाह हा गए। भिकनु की माँ ने चीखकर कहा। बस तुम्हारा पिता ही हमारा रक्षक है। म्बो न उमन हम बरन लिए हैं। उमन बांटे हुए कपड़े म्बान का गां खीन दी। फिर कहा—

मा बाना माई। हमारी इम विपत्ति का रात्रि म सहायता कर। माना हमारा सब कुछ जाता रहा। बस तुम्हारे उच्च-चरित्र वाल पिता की उन्नता का सहारा है।

बहिन हम तुम्हारे पाँव पकत हैं। दूसरी चमार औरतों न माला का हाथ जोडन हुए बन्।

माना अपन कपडा की क्षति पर अपन मन का ममभान का प्रयत्न करने लगी। उमको आगा थी कि उमक व्याह व कपड हा बांटे गए हागे। उमक गरीर के किसी रहस्यमय भाग मे यन् मन्ता-मा आना लगा कि मजनू अब कमा भी उम न पा मकेगा। पर फिर भा उम यह विचार आया कि यह उन कपडा को पहनकर खग जम्र हाना।

यह अपनी माँ का आर भुडा जा अब गना ठक पच चुका था।

लकिन अपनी मा तक पहुँचने में पहले ही उमने देखा कि भिक्षु की माँ और दूसरी चमार औरतें मृत्ति के सामने दौड़कर उसके चरणों पर लट गई हैं।

न—न ! मृत्ति में चित्नाकर कहा । मैं अभी-अभी मंदिर से आई हूँ ।

औरतें पीछे हट गई—पर उकड़ू बठ गई । हाथ जोड़कर गान मन्त्रतापूण और झेड़ की तरह मिमियाई हुई ।

माँ—हम क्षमा कर दो । उनमें से एक ने कहा ।

तुम्हारे पति ने हमारे साथ बहुत अनाइ की । लक्ष्मी ने जोर देकर कहा । हमारे घर जन गए पर वे तो स्यादू स्त्रियों-सा बनकर आगयी ।

उनमें कितना दान लिया हम । बाबू की माँ मजबूतता में कहा ।

मृत्ति पत्थर की मूर्ति बनी लड़ी रही । उसके सारे अधिकार-बोधक भाव उसमें बेहतर पर उठ आए और उसकी गर्बिली ताल रंग मरग लिया ।

फिर उनमें कहा— इन सब लुटेरा की घरती निगल जाए । इनके सारे पाप कम कर्तव्य की अग्नि में भस्म हो जाए ।

माना ने विरोध करत हुए कहा— लेकिन माँ ! हमारे पदमन ने हाँ तो इनके घरा में आग लगाई है । बाबू ने इनको जो कुछ बाँटा है वह स्मरण कि वे इनके मर्नों का मंडक बनाने के लिए सता का ल गया था । मृत्ति चकित और स्फट-मा लड़ी रहा ।

फिर उनका आत्मा के अधिकार में से एक दर्शनी की चीज निगल पत्थर । एसा चाख जा खाए हुए कपड़ा खाए हुए घम खाए हुए पति खाए हुए पुत्र और खाइ हुई बच्चा पर मानस का चाख की ओर स्त्री चीख ने उसमें स्त्रियों का लुब्धा—उम स्त्रियों का जा आमुखा में तनादन भरा था । मृत्ति का हिलका उधर्ग । माना ने अपनी माँ का धामा पर उसका मिर एक तरफ का मिर गया और उसमें माना में कहा—

मा—क्यों चले जहाँ तर पिता है । हम वहाँ एक पत्थर का नहा टहर मकान जहाँ घर का काई पानि न हो ।

नौ

गाँव का वह भाग जो उस पवित्र कुएँ से जगता था जो ठाकुरसिंह के पूजार्थ के जमाने के किनारे था—बिजकुल गाँव था। ऐसा गाँव जहाँ कि वे मूल गाँव से जिनकी राख छोटे-छोटे गुफों की समाधि के नाच देता था। नीम के हर पत्ता का मुरमुँर जो मकस पुराना समाधि के ऊपर खड़ा था—वह भी गोधूला के मपावली प्रकार से स्थापित था। जलमन मोच रहा था कि वही जमाना ठाकुरसिंह के मृत पूजार्थ की प्रजात्माएँ वहाँ विवरण करती हुई उसे देख न रहा हों। अब उसका यह मोचन का मन किया कि वह मकसू का साथ छोड़कर न जाता और नम भी वहाँ ल जाता ना अच्छा था। पर वह तो एकांत चाहता था और तब तक चरत रहना जब तक कि वह थक न जाय। यह न हुआ बल्कि जैसे-जैसे वह चान्छित स्थान के पास आने लगा उसका रों बमुर स्वर में बजने लगी। उसका गरीर कांपने लगा और उसका श्वास जल-जलना बनने लगा जहाँ कि वह कोई गूँथ को भरने का प्रयत्न कर रहा तो। एक क्षण वह स्थान के पार पहाड़ियों को देखने के लिए रुक गया। उसका हाँकी से बुने श्वास का तरङ्ग कुछ भ्रमर गन्ध निकल गए। तुम क्या सोच रहे हो। तुमने उनसे अपने आपका क्यों छुपा जान लिया? क्या? आखिर क्यों? पर पयरा न कोई उत्तर न दिया। वह महानता जो उसने भ्रष्टा के घरा का भाग जमाने के समय अनुभव का भी पहने हा कम हा चुका था और अब उसका गरीर और आत्मा में कोई जीवन-युक्त शक्ति न था जसी कि तब था जब कि वह]

गाव से बाहर गया था। वह अपने में कोई और विचार न लाना चाहता था—इस डर से कि कहीं उसमें कोई अपराधी ठहराने वाला विचार न आ जाय। पर उसका शरीर की गतिता नष्ट हो चुकी थी। वह कबल सड़ा रह सकता था और शून्य में देख सकता था। उसका आगे बटन में खाड़ा-थोड़ा डर भी गमता था और उसका जितना उस अनुभूति के बोझ से बठता जा रहा था जो कि प्रायः के स्वयं का क्षय करने के पश्चान होती है।

मुझे क्या हो गया ? मेरे भाग्य में क्या बदला है ?

जब ही उसका मह से ये गान निकल उम ऐसा लगा जस वह प्रकृति न हो और उलक शक्ति की प्रतिध्वनि न उमरी प्राकृति का छाया का रूप ल लिया हो।

वह एकदम तेजी से पाछे मुड़ा कि कहा कोई भूत तो नहीं है।

‘नहीं’ वह मन मन में बड़बड़ाया पर फिर भी वह इस स्थान पर आत पर अपने आपका कोस रहा था। वह गाँव के कुएँ पर नहीं नहा सकता था क्योंकि कोई उसे ऐसा करते दण्ड देता—जो वह नहीं चाहता था।

अब वह गराब के मे नौ में झुमन लगा और आग धन लिया।

मैं बहुत कुछ कर सकता हूँ। उसने अपने मन में कहा। गायद में पिता के। इच्छा के विरुद्ध कार्य कर के भूलता की। लेकिन वह तो धम भ्रष्ट हो चुका है। जब कि मैं

ये नाटकीय रूप में कहते हुए गाने वातावरण में ला गए। मैं गाने में उसका धृष्टा में भर लिया। उस समय बान का चलना था कि उसने कहा भा अपना माँ के धार्मिक विचारों या पवित्र मूरजमन के प्रति काट घात नाव न रखा था। जो मर वह बान चुका था उसका कान बान विचार न एकदम उसका मानसिक उद्यम-पुष्टि का बन्दर लिया और उस क्षण की गति में उम लगा कि यह सब तो स्वमशा के लिए दृष्टा है—क्योंकि मजनु न उमकी मर्गा तोन्न का धमका ले थी यदि

नेछमन उसके साथ न हुआ तो ।

वह एक बन् पत्थर से टकरा गया जसे वह अपना मतुलन खो चका हा ।

वह अपने आपको मचाकर खड़ा रहने का प्रयत्न करते-करते यह माचन लगा कि भव सज्जन क्या करेगा ? उसका पिता ता जो कुछ उसने किया है उसीसे मराहता ही करेगा । इसलिए उसने किए सब कुछ ग्रामान्त होता । पर रक्षमणी तो हमेशा अपने पिता से सहमत न होती थी । क्या वह भव उससे धृष्टा करने लग जाएगी ? और फिर उसकी अपनी माँ ? क्या वह उसका साथ दगा या पिताजी के पास चली जाएगी ? पर वे सब तो बहुत दूर हैं फिर चिन्ता करने का क्या लाभ ? यह नीजता से सोचिया जाने कुछ के पानी में अपने गरीर को नहलाकर पवित्रकर लेगा ।

प्रजातप उस लगा जैसे कि उसने अपने बन् का विरोध ही । हवा बोझिन थी और मध्या का अदृश्य बौम उसको कुचलता-मा मानूम हाता था । मृत पूवजा की प्रेतात्माएँ उसका माँ के मित्र में श्राद्ध के समय पीछा का कारण बन जाती थी इसलिए उसने साचा कि ठाकुरमिह के पूवजा का प्रतात्माएँ आज उसका मतान आई है । लेकिन वे पूवज ता मध उच्च जाति के अच्छे हिंदू थे जिनका आत्माआ का उसके श्रम पर प्रगप्त होना चाहिए था ।

बन् आग बन् गया और बहवन्मा— मैं तो सिद्धांत में क्या भा सहो गिया ।

जग हा वह आम और नीम के पेड़ का घना हरा छाया के नीचे पड़ा उमा गोवा कि इसी स्थान पर बपन् उतार गया और फिर गीदिया में होकर कुल पर पंच जाणगा । पर उस बड़ा ममाधि की मयावत निवन्ता न जितम ठाकुरमिह के समय पट्ट पूवजा का राग दबी भी उस डरा लिया ।

वह घाटे धीरे धीरे बढ़ा—मभावित प्रतामाओं के विरुद्ध माहम

का प्रदर्शन करता हुआ जिससे वह अपनी दृष्टि में ही कायर प्रतीत न हो।

कुए के मुह के पास पहुँचकर वह फिर रुक गया। कुए का मुह बाया प्रवण स्थान जिसके दोनों ओर दीवारें थी और सीढ़िया जमीन के पेट के अंदर चनी गई थी। उसे ऐसा लगा जैसे कि नरक का भया नक द्वार हो।

एकलम उसको एक घबराहट ने आ दबोचा जस वह डब रहा था— मर रहा था। क्या न वह इस सबका अंत कर दे? मोघा पानी में भागना चना जाय और उसमें अपने आपको डबा दे। लेकिन उस पता था कि वहतर सकता है।

कुछ चींटियाँ कुए की पहली सीढ़ी पर कामकाज करता हुईं जावन क दाना तक पहुँचना चाह रही थी। ये चावल पवित्र कुए के सामने गाँव की औरता न बिखेरे थे। उसने अपने दाए पाव से चींटियाँ की एक पूरी लाइन को कुचन लिया। पर हत्या की गई चींटियाँ क कुच नन की आवाज से जो उसके जून क तल क नीच हुई उसका मन घुणा में भर गया। बम—और वह काफी तेजी से नीच की ओर दीण। बस अब तो वह अपने आपको कुए के पानी में भिगाएगा। उसमें उसका दाप धुँगे में गति आएगा और अपने पिता को अबहना करन क अपराध क लिए वह अपने आपको क्षमाकर सकता। उसका यह भी विचार आया कि गाय चमार घरा की ओरतें अब भी राखीत रहा हैं और काना नवी का सहायता क लिए पुकार रही हैं। उसने एक गानागार की सी दगता क अनुरूप अपने कपड उतार फेंके। वह नगा हा गया। उसने अपने बानानार पट को घुणा-पूण विरूप दृष्टि से दमा अजीब उयन-पुयन था वहाँ—जम कोई पाण भातर भातर उवन रहाहा। वह अपने हाथ वग पर न गया और दता कि उसका दृश्य दाए हाथ का हथना क नाच जार स घटक रहा है।

उसके माथ पर पसीना आ गया । वह उत्तजित हो उठा यहा तक कि अपनी छाया से भी उसे डर लगने लगा । फिर वह कुएँ की सीढ़ियों से नाचे उतर गया जो पाना भर डबा थी और वही बैठकर पानी को छाट देता हुआ भगवान का नाम स्मरण करने लगा ।— ईश्वर ! ईश्वर !

पर ईश्वर तो आकाश से उतरता दिखाई न दिया । सिर्फ एक मत्क पहला सीढ़ा के एक सिरे पर टरा रहा था जिससे उसका रागटे लड़ हो गए और उस ऐसा लगा जैसे कोई साँप पानी में से निकलने वाला हो । वह साँप उस डबा लगा और उसके पाप-कर्मों का दण्ड उसे मारकर देगा ।

परमेश्वर ! — उसने फिर उल्लास किया और अपने मिर और सीने पर पाना डाला । फिर उसने मुह का दोना हाथा से ढक लिया । वह भावने लगा । 'यदि भिक्षु यहाँ आ जाय और मरी हत्या कर दे तब ही मेरे पाप का प्रायश्चित्त हो सकता है—मरे खुद से ही—न कि इस पानी से ।

दस

अगले दिन मूय निक्कनन स पहल दीवान रूपवृष्ण गाव क चौक तक अपना जीप-गाड़ी चनाता हुआ पहुँच गया। वह गठील गरीर का मजबूत व्यक्ति अपना की जती हुई भापड़िया की आर चढ़ा दिया— भारी भारों तिल में चेहरे पर परगामा की गाँठ बांधे। चाहे धूर्तासह पिछला रात का बरबानी का हान बता चुका था फिर भी जब तक उसने अपना आगमन में नही देखा लिया तब तक उसे उच्च-जाति वाला गरीब लड़का के सवनाम का विश्वास न आया। उसने भारी बरबानी के दृश्य को बना जमा में दृष्टि में रखा। पर वह दृष्टि भावगुण थी और उसने कोय निष्पत्ति या क्याकि वह गाव की हठि बढ़ता के मामने अपने आपकी शक्ती चाहता था—स विचार में कि उस आभा सव बनवाता है और उस अपना गाम-काय बनाए रखता है। उस उस घणा का भावना का आ उसके हृदय में जमीदार ठाकुरसिंह के लिए उठ रहा था कुछ नियंत्रण में रखना पना और यह वह कर सका— अपने आप की यह मान जिताकर कि स्वयं उसका मार्ग जा अमनसर में था हिंदू महामभा के राजनतिन देव का आर भरा था। अयाप के पाणिपन के उत्तर में घणा नही हानी चाहिए वह जानता था। फिर भी उसने टाँका कोय का कवाहट मन्मूस की। नाम के पना का हरियाना जा आग के चहुन में न समा दी उसका टाँक दे रही था और वह पानन के गाव चबूतर पर जा बिष्णु के मन्दिर के पास था पहुँच गया।

जमींदार ठाकुरसिंह जिसकी अफमर के आने की खबर बच्चों से लगी थी उसके पास पाखंडी भाव से नमस्कार करता हुआ आ गया।

जस ही शीवान रूपकृष्ण के चेहरे की चमक जमींदार की आंखों में घुसकर जलने लगी उसने चेहरे का रंग उतर गया और वह सरपंच के भाग भुग-सा गया।

ठाकुर सिंह —अफसर ने आपरवाही जताने हुए कहा।

फिर उसने मिगरेट जना तो—अपने आपकी वह आवश्यक समय देने के लिए जिसमें वह उस भाव-वृत्ति का पकड़ सब जिसकी सहायता से वह और लोगो से सफलतापूर्वक व्यवहार करता था। वह सहज पान उसका मानसिक धरातल पर एकत्र आ गया और उसने कहा—

क्या तुमने मरा भी हुक्का-पानी बन करा लिया है या घर में विलम भरने के लिए कह दिया है ?

जमींदार की प्रतिधि-सन्कार की भावना को जैसे तैस लगी हो उसने कहा—

गरीब-पर—निश्चय हो तुम्हारे लिए हुक्का तयार किया जा रहा है।

—और उस गरीब की आर मुहवर जो उसका घर की ओर जाती थी, वह रिलनाया।

'मो मजनु' दीवाना माहुर के लिए हुक्का ता ल आ।

मजनु ता सतो को गया है। उडका में से एक ने उत्तर दिया।

इस पर जमींदार ठाकुरसिंह अपने घर की ओर एस भागा जस कोई घसीटा जाने वाला मुग हो जा बिल्ली से डर गया हो।

शीवान रूपकृष्ण ने कुछ बच्चों को जा जोष में चले रहे थे और हों के छेड़ रहे थे तात मारकर भगा दिया। फिर वह चारपाई पर बैठ गया या पूं बहो उम पर गिर पड़ा। अपने भीतर उसे खोसनापन सा लगता था क्योंकि उसे पता था कि वह उच्च-जाति वाला को

दस

अपन तिन मूय तिनन स पहन दावान हपकृष्ण गात्र व चीक तक अपना जीप-गाडा चराता हुआ पहुँच गया। वह गंगानगर का मजदूर व्यक्ति अठ्ठा का नती हूँ भापडिया की आर धन लिया— भारी भार तिन स चेहरे पर पगाना की गाठ बांधे। बाह धनामिह पिठना राग की बरवादी का हान बता चुका था फिर भा जब तक उसन अपनी आत्मा न नहा दल लिया तब तक उम उच्च जाति वारा द्वारा अठ्ठा व सबनाग का विचार न आया। उसन मारा बरगान व दूय का बजा जमा हूँ नष्टि स नखा। पर वह दृष्टि भावगूय था और उसका शोध निष्प्रिय था क्याकि वह गाव का हस्ति-बद्धता व मामन अपन आपकी रावना चाहता था— स विचार स कि उस अभी सक् बनवाना है और उस अपना धाम-काय चनाए रखना है। उस उम घणा की भावना का जो उमक हूय म जमादार ठाकुरमिह व लिए उठ रहा थी कुछ नियंत्रण न रखना पडा और यह कह कर मका— अपन आप को यह याद तिनकर कि स्वय उसका भाई जो अमनमर म था हिंदू महामभा व राजनतिन दन की ओर भुका था। अयाय व पागलपन क उत्तर म घना नहा हानी चाहिए वह जानता था। फिर भा उसन ठठठ आंच की कच्चाहट महसूस की। नीम के पत्र का हरियाला जा आग व चमूत न न पसी थी उसका ठठक द रही था और वह पीपन व नाच चबूतरे पर जो विष्णु व मन्दिर के पास था पहुँच गया।

जमींदार ठाकुरसिंह, जिसका अप्सर के आन की खबर बच्चा स लगी थी उसने पाम पाखंडा भाव से नमस्कार करता हुआ आ गया।

जस ही शिवान रूपवृष्ण के चेहरे की चमक जमींदार की आवा में पमकर जतने लगी उसने चहरे का रंग उतर गया और वह सरपंच के आगे झुक-झा गया।

ठाकुर सिंह —अपसर ने लापरवाही जताते हुए कहा।

फिर उसने मिगरेट जला ली—अपन आपको वह आवश्यक समय देने के लिए जिसमें वह उस भाव-बला को पकड़ सक जिसकी सहायता से वह और लोगो से सफलतापूर्वक व्यवहार करता था। वह सहज जान उसने मानसिक ध्यानन पर एकत्रित आ गया और उसने कहा—

क्या तुमने भरा भी हुक्का-पानी बद करा लिया है या घर में चित्रम भरने के लिए वह लिया है ?

जमींदार की अतिथि मत्कार की भावना को जम डेस लगी ही उसने कहा—

गरीब-पन—निश्चय ही तुम्हारे लिए तबका तयार किया जा रहा है।

—घोरे उस गला की आर मुड़कर जो उसने घर की आर जानी थी वह चिल्लाया।

‘ओ सजनू ! दीवान गाहव के लिए हुक्का तो ल आ !’

मन्नू तो येता का गया है। लडका मैं स एक न उत्तर दिया।

इस पर जमींदार ठाकुरसिंह अपने घर की ओर ऐम भागा जम कोई समीप जाने वाला मुगा हा आ बिल्ली में डर गया हो।

शिवान रूपवृष्ण ने कुछ बच्चा को जो जीप में चढ़ रहे थे और हॉन को छेड़ रहे थे जान भारकर भगा दिया। फिर वह चारपाई पर बैठ गया या यूँ कहो उस पर गिर पड़ा। अपने मातर उमे सोमलापन से लगता था क्योंकि उने पता था कि वह उच्च-जाति वाला का

गव-पूण महानता की भावना को किन्हीं गल्लों से भी जो वह प्रयोग कर सकता है, नष्ट न कर सकता था। कुछ भी हो उसे कोई बलिदान के बकर का खोज नहीं करनी थी। न ही वह एक विरक्त दगाबू का तरह अपन आपको नियंत्रण में रख एक सुरक्षित दूरी में सब कुछ देखता रहे सकता था प्रणसा और निदाता किसी चतुर दम सवर्गानी थी।

जैसे ही वह बठा और सिर को पीछेकर अपना बाँहा का अपन पीछे फलाया उस अधानक तबरदार धूतीसिंह के लडक लक्ष्मन का उपस्थिति का आभास हुआ। लक्ष्मन हाथ में बही हुक्का लिए था जो वह दीवान साहब के लिए जब वह पिछनी बार आए थे—चाया गया था।

तू बहुत दिन लिए बठा। अफसर ने कहा। य सिगरेट तो गाबर से भरी मातम होती हैं और फिर सबेरे-सबेर सब से पहले हुक्क की गुडगुहाहट से अच्छा संगीत क्या हो सकता है? वह तो भरवी राग से भी अच्छा है।

नडका मुस्करा दिया और उसे इस बात से सतोष हुआ कि उसको स्वीकार कर लिया गया है। उसने हुक्का नीचे रख दिया और बड़ी मानसिक खिचाव की अवस्था में प्रतीक्षा करने लगा। उसे अब भी आता था कि दीवान रूपकृष्ण के भारी गरीर में से जोध का बाहरी गोला थोड़ी देर में अवश्य फटेगा।

पर अफसर उठकर बैठ गया। उसने हुक्के के धुएँ की आस से हवा में उड़ाना आरम्भ कर दिया। वह उस समय एक प्राकृतिक आतावरण में काय करन वाले व्यक्ति जैसी मानसिक मुर्तों का परिचय दे रहा था—एस स्थान पर भी जहाँ बिना अयाह कठिनाइयाँ के कुछ न हो सकता हो। वास्तव में उस अपनी स्थिरता पर स्वयं आश्चर्य था।

इस समय जमींदार ठाकुरसिंह यह बहता हुआ वापिस आ गया—
'हज़ूर—हुक्का आ रहा है। पर यह लडका तो मुझसे भी तब निक्का।'

‘वह तो दानव है।’—दीवान रूपकृष्ण ने कहा।

अब नछभन और जमींदार दोना अपसर द्वारा बात आरंभ करने का प्रतीक्षा करने लगे।

वस अपसर न यहा कहा—

अच्छा ! तुम लोग न होनी का खौहार इम वष दोवाग मनाया है ?

दोना गाँव वाला एक पल ता असम-जस म आ गण और निदा-भूण वाला का इतजार करने लग—इम असवधित वाक्य के बाद।

उहान चारो स एक-दूमरे पर नजर डाली और दीवान रूपकृष्ण का हाली के बारे म जिम करन का अय समझ गए। वह हाली जिमम उत्तास-मय लापरवाही से दूसरा पर रग फँकन का अतिरिक्त कुछ भी कहा या भी किया जा सकता है।

जनाब ! हानी ता कमी की बात चुकी। जमींदार ठाकुर सिंह ने कहना आरंभ किया। अब तो हम सब वर्षा के आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। कितनी तज गर्मी है और ।

दीवान रूपकृष्ण को जमींदार के बात करने के ढंग से अपने लिए एक खुना माग मिल गया। उसने कहा—

कुछ दिनों की बात है कि गुडगाँवे जिले के एक गाँव म एक तारा दूमरे तारे की दुम म दिखाई दिया और अगले दिन औरता का एक समूह मरी स्त्री से पूछने आया कि कौन भी तिथि प्रधान-मन्त्री की जावित सभापि बनाने के लिए निश्चित हुई है क्योंकि वे तो इन मज्जन और दयालु हैं कि स्वयं उनका मृत्यु कभी न आएगी। इसलिए स्वयं जाने का प्रबंध करने के लिए उन्होंने आप ही आगे बढ़ा दिया है। मैं उन्हें ठीक तारीख ता नहीं बताई पर विश्वास दिलाया कि प्रधान-मन्त्री अमर हैं।

दोना प्रौढ़-व्यक्तिता के अस्तित्व इस वया का सुनकर चक्कर म

वन कहा ? मेरी आँख का दाप मरी पटना व सामन है । यदि मजनु जिसन यह भव मेरे साथ मिनवर किया है मान जाता तो हम दोनों इकट्ठा बापू व पास जाते और उसक साथ मिनवर काम करने का वायदा करते । पर सानू का हुंय तो अभा तब चमारों का भवनाग करने पर तुना है । बस एक मैं ही मानसिक पीडा म हूँ ।

जमादार ने काफी देर तक कोर् उत्तर न लिया । बस उसका चहुरा पीना आर लान हाता जा रहा था । उसने गम स सिर झकाए रखा और दीवान रूपकृष्ण से अपनी नजरें मितान न दी ।

दीवान रूपकृष्ण उठा और धूनीसि के खेत की ओर यह कहता हुआ चला गया—

मुझे काम पर चलना है । यदि मनुष्य काम न करे तो वह नष्ट हो जाय ।

‘वह तो दानव है।’—दीवान रूपकृष्ण ने कहा।

अब लछमन और जमींदार दोनों अफसर द्वारा बात प्रारंभ करने की प्रतीक्षा करने लगे।

बस अफसर ने यही कहा—

अच्छा ! तुम सामा ने होली का स्थोहार इस वष दावारा मनाया है ?

दोना गाँव वाले एक पल तो असमंजस में आ गए और निंदा-मूक वाता का इतजार करने लगे—इस असंबधित वाक्य के बाद।

उहान चोरी से एक दूसरे पर नजर डाली और दीवान रूपकृष्ण का होनी के बारे में चिन्तित करने का अर्थ समझ गए। वह हाली ज़िम्मेर उल्लास-अर्थ सापरवाही से दूसरे पर रग रगें बने के प्रतिरिक्त कुछ भी कहा या भी बिभा जा सकता है।

जनाब ! होली तो कभी की बीस चुकी। जमींदार ठाकुर सिंह ने कहना प्रारंभ किया। अब तो हम सब वर्षा के आन की प्रतीक्षा कर रहे हैं। कितनी मेज गमी है और ।

दीवान रूपकृष्ण को जमींदार के बात करने के ढंग में अपने लिए एक गुला मारा मिल गया। उसने कहा—

कुछ गिनो की बात है कि गुहगाँवे जिन के एक गाँव में एक तारा हमरे तारे की दुम में दिग्गई दिया और अगने गिन औरता का एक समूह मरी स्त्री से पूछने आया कि कौन भी तियि प्रधान मंत्री की जोषित समाधि बनाने के लिए निदिचत हुई है, कपोवि के तो इतन गंजन और दयालू हैं कि स्वयं उनकी मृत्यु कभी न आएगी। इसलिए स्वयं जाने का प्रवण करने के लिए उन्होंने आप ही आदेश दिया है। मैं उह ठीक तारीख तो नहीं बताई पर विन्वाग दिसाया कि प्रधान-मंत्री मर रहे हैं।

दोना प्रौढ़-व्यक्तियों के अस्तित्व इस कथा की, मुनकर चक्कर में

आ गए। उनका विचार था कि अवश्य इस कथा में कोई नतिक शिक्षा छिपा है।

दीवान रूपकृष्ण ने लछमन वं चेहरे वं जस्मी पीतपत्र का दस्ता और उसका मन किया कि अपने अफमरी पद का गान छोड़कर लछमन को गल लगा दे। पर उसका मह ऊपर उठा रहा था कि अफमरी रंग और हाठ कापते रहे जसे उस गडक से कुछ कहना चाहत हा। कहा उसको ईमानदारी का यह क्षण यू ही न बीत जाय। अफमर न सहन यता से कता—

वता—तू अपन पिता वं पास चला जा और जा कुछ बात गया है उस भल जा। तूने उपनिषद् वं इस सत्य को सिद्धकर दिखाया कि घोर वं भी आत्मा होती है।

बटा। तू मेरी गडका का उसका विवाह होने से पहले ही विधवा नहीं बना सकता। जमीदार न लछमन से करारी आवाज में कहा। 'हमारा जाति और कुल तो अष्ट हैं। चाहे दीवान माह्य कुछ भी कह हम अदता में नहीं मिल सकते।

लकिन लछमन ने जमीदार वं गन्दा नी आर बिलकुल ध्यान न दिया। वह उठा और बच्चों से अपनी आँखों के आसू छिपात हुए वहाँ से दौट पडा। जात हुए उसने धीरे से कहा— मैं वहाँ जा रहा हूँ जहाँ मेरा कुटुंब है।'

जमीदार ठाकुरसिंह ने कड़वे तान के स्वर में कहा—

मेरा बेटा। आसू ता मसार की सारी वस्तुओं से पहने सूख जात हैं। यह उसने ऐसे कहा जम भूमणी पास हा वह उससे बात कह रहा हा और उसका वर वं छूट जान पर उस गात्वना दे रहा हा। दीवान रूपकृष्ण ने हुक्क में तनिक प्रदग्गन करते हुए घूट मारा। फिर उसने खाँसा और अपना बाया हाथ जमीदार ठाकुरसिंह वं कंधे की तरफ फनात हुए कहा—

सत्र से काम लो सरपच ठाकुरसिंह। तुम अपने मन से तो पूछो

कि क्या तुम मुगल-शाह-गाह आनमगीर की तरह मरना चाहते हो ? मरने के बाद न भापड़ी हो न चूल्हा हो न घड़े में एक बंद पाना । या तुम बर्षा आरंभ होने में पहन हो लडका में भन्क बनवाकर तयार करा सकाये ?

‘हज़ूर ! निश्चय ही । ज़मादार न इरसा-मक भाव से कहना आरंभ किया । हमारी बिरादरा तो गमा है जो पञ्च में कुछ नश्वरों के जाह के अनुसार ही जीवन बिता रही है । मरने एक जवान बेटा है जिसका मगाइ लछमन से हा चुका है । दूसरा आर धुनासिंह उसका स्त्रा और उसकी बटी अछूता के साथ रहने चले लिए और हम सबके का भग कर गए । बहुत दिन पहन मैं अपना घरबारी में स्वमणा और इस लडके का विवाह रचान के लिए क्या था क्याकि नश्वर उस समय उचित मयाग में थे । यदि वह विवाह हो जाता तो आज जमी अवस्था क्या होती ?

लछमन का चहरे में आर अपन किए हुए पाप का भावना में गहरा तान हो आया । वह जानना था कि पिता की गत जब में उसकी मौ और अग्नि उमर पिता के पास रहने चले गए थे उसके और ठाकुरसिंह के कुन्ध के बीच स्थापित मगन्त्या का मन्त्र तत्पर में पढ़ गया है । वह स्वयं मागी गत नश्वर मोया था और चमाग की भाप दिया का धाग लगाता-मगाता बहुत बच चुका था । उसका ममम में यह न आया था कि क्या उसका सारे शाय-बरा में तुम्हारे का-मा दूँ ना रहा है जिसने प्राण बचने गुद हाकर और ईमानदारी का जीवन बिताकर ही मिन सबता था न कि चार की मोत मरकर—एक एम इमान की मोत जिसने दूगम के घरों में आग लगाई हो ।

फिर तीना व्यक्ति दर दर आपस में कुछ न बोल । लछमन ने गानि भग करत हुए दू-दू गला में कहा— हज़ूर मैं क्या कहूँ ? क्या जो कुछ मैंने किया है उसके करने के बारे में आपने करण छूत का साहमकर सबता है ? इस अग्नि कांड का पाप मुझ पर है । मुझे

वन कहा ? मेरी आँख का दोष मेरी पनका व सामन है । यदि सज्जन् जिमने यह सब मेरे साथ मिलकर किया है मान जाता तो हम दाना इकट्ठे बापू व पास जात और उसव साथ मिलकर काम करने का ब्रायदा करते । पर सज्जन् का हृदय तो अभी तक चमार का सवनाग करन पर तुता है । बस एव मैं ही मानसिक पीना म हूँ ।

जमीन्दार ने काफी देर तक कोई उत्तर न दिया । बस उसका चहुरा पीला और सान होना जा रहा था । उसन गम से सिर झुकाए रखा और दीवान रूपकृष्ण से अपनी नजरें मिलन न दीं ।

दीवान रूपकृष्ण उठा और धूनीसिंह के खत की ओर यह कहता हुआ चला गया—

मुझे काम पर चलना है । यदि मनुष्य काम न कर तो वह नष्ट हो जाय ।

ग्यारह

रक्मणी ने अपने पिता की आँखा में विपाद देखा और वह जान गई कि जो अफसर बाहर से आया था उसने उसकी पिता का भला पुरा कहा है। उसका यह भी अनुमान था कि इसके अतिरिक्त भी कुछ हुआ है—पर वास्तव में क्या हुआ है यह वह न जानती थी। आमार औरसो के रोने और चीखने के गार में वह ममम्भ गई था कि उन पर तो सारा सन्सार ही टूट पड़ा है। उस यह भी आभास था कि उसका भाई मजनु और उसके दो बिसी-न बिसी लैम से इस जुम को दान के उत्तरायी थे। उसने अपने कुन्ब का ही पग लिया—उस धूलीमिह के विरुद्ध जो अछूता के साथ हो लिया था। बल्कि वह तो अपनी हानि वाली भास और नतक के भी विराध में हा गई क्योंकि वे दोनों घर छोड़कर नबरदार के साथ सेत पर मिल गई और उस मन ही-मन इस बात पर बड़ा उल्लास था कि उसके दो तो घर पर ही रहे। गायद उसके ही कारण। अछूत तो हमेशा से रात-चीखत आण हैं और वह अपने ऊँचे घर की पवित्रता में रहकर सतुष्ट थी। लेकिन अब अपने पिता को सर लटकाए दब उसके गरीर की कठोर और हीरे जमी गीतवता उत्तजना की गर्मी के रस की मन्त्रक दन लगी।

उसकी माँ ने उसे छाछ में भरा पीतल का गिलास पकड़ा दिया इसलिए कि वह उसे अपने पिता जमादार ठाकुरसिंह को दे दे। रक्मणी जहाँ उसका पिता खड़ा था गिलास ले गई। वह उस दूबक में घूँट भर रहा था जो दीवान रुपकृष्ण के लिए तयार किया गया था—पर देर से।

मुझे प्यास नहीं है। —उमके पिता ने कहा और स्वमणी को हाथ हिलाकर चला जान क लिए आग करता हुआ वह वरामद म चारपाई पर बैठ गया।

स्वमणी की मा न विरोध करते हुए कहा—

गर्मी तुम्हारे दिमाग का चल् जाएगी। इसलिए छाछ पी तो और बाहर जाने से पहले थोड़ा ठंडा हो।

यह अपने बेटे को बो। जमींदार ने उत्तर दिया। यही ता एक बार है जा यह सब बना मर मिर पर ले आया है।

घरे! हुआ क्या? वो तुम्हारे सिर पर क्या ने आया है? स्वमणी की मा न पूछा।

जैसे ही उसकी मा ने चिल्लाकर य गल कछे छाछ का गिलास स्वमणी के हाथ से छूट गया।

ठाकुरसिंह ने गरजकर कहा—

‘उन्हीसे पूछो—और उसका साथी नछमन स। जहाँ तक उसके मित्र और जुम म भागीदार होने का सवाल है उसका दिमाग ता फिर गया है। अपने दगाबाज खानान के और आदमिया की तरह वह भी सटक पर काम करने चल दिया है।

उसकी यह मजाज कैसे हो सकती है? सारे समय मेरे साथ रहते हुए भी। सज्जनू चिल्लाया।

तो तुम्ही न आग सुनवाई थी? ठाकुरसिंह न पूछा।

निश्चय ही बाप लेकिन सज्जनू न उत्तर दिया।

मूम तुम उनकी और प्यान न देत ता अच्छा था। उनकी भाप दिया बरवान न करत। उनही ही नगाट पर उनकी अपना ही पय उह मिलाना—हम गोभा न देना था।

अच्छा—पर बापू! क्या तुमने नहीं कहा था एमा करने को? सज्जनू बोला।

जमींदार ठाकुरसिंह को हम जुम म अपने याग की पूरी चेतना

थी। वम वह स्वयं भ्रातृ लयाने वाना न बनना चाहता था। फिर भी उसने नदक की आँखा में जो उँगनी उठान वाली दृष्टि थी उसमें वह झुक गया। बाप और बेटे के मध्य याही देर के लिए एक मयानक गति छा गई।

एक मिनमिनाने हुए वह काल बरों के गोर न वरामने की नूयता क भार को और अधिककर दिया और वह खाइ जा पिता और पुत्र का एक दूसरे से अनग करती थी और चौड़ी हो गई।

रवमणी अपने घर के दानों आदिमिया का चोरी में रखती हुई माँ के पास बठी अपने आपकी गति करन के लिए जोर-जोर से साँस लेने लगी क्योंकि पिता और माई के प्रति उसकी जी में जितना प्रीति था उसमें उसका हम घुट रहा था। इन दोनों में ही ता इन मुसी बत का डामा था, और उनका अपने पिता के पास जान के लिए विषय दिया था।

अपने पिता और माई में कहा अधिक उसने भाव उनकी कपना में महीनों तक मननेमें बंधे रहे—जो जो किसी दिन उसको गने लगाएंगे। उसका जीवन में इसमें मयूर कल्पना क्या हा सकती थी कि नीग्र ही एक पुरख उसको अपने हम घर से ले जाएगा। किन्तु वह जिस का उमका गालान चाहता था खुद हा चला गया। अब उस वह अपनी कपना में धता पर काम करना देख सकती थी—अपने अटन माग पर चलन हुए—उममें दूर—अपने अभिप्राय पिता के साथ चमारा में बड़े हुए। उम लगा वह धक्की है निस्महाय और अभावपूर्ण। एक एमी रशी जा विवाह में पहुँच ही विधवा हो गई।

मान ने चीखकर कहा—

वह गूँग लछमन !

हम दोनों साथ थे। अब भी मैं कुछ साथ ही भुगत लत। गगर पहाँ का !

उम बुरा बना मत कहा। हम मूलना-गूँग साथ में यह धक्का

बहवा ? कभी वह धारापी था उमन दावन सहन क सानन
 लीक र कि । तुम्हें मत मर बिष्कु ही नहीं कन्या चाहिए था । —
 मरुतुन बोला ।

मरुतुन को धने ने गोले हूँ कहा—

‘वह तो धेरे धेरे को गताता बन करो ।’

‘तुम ने विष्णुवर उतार लिये—’

तुम्हारा धारा बेग तो अत्यधिक पवित्र है ना ?

धने धने गान्गा की बमजोरी रक्मणी को धक्का देती प्रतीत
 हुई । जो धन्याय उगरे नाई धीर ‘उहोने किया था उसका अवगनीय
 ५२ उहोने माँ की अपने पुत्र के प्रति पार्थिव भावना के साथ उम
 पर लगे था । उमे लगा जसे हमेशा लडका की ही हिमायत की जाता
 रही हो । मरिन जो कुछ हो गया है वह उसको अब सब मदों से दूर
 रखा । उमका भाग्य ही ऐसा था । अपने पिता की ऊँची हवेली की
 पत्थर की दीवारों के पीछे रहने के पीछा-युक्त विचार की अग्नि उस
 भस्म करने लगी । उसकी आँखों से चमकती हुई चिन्मारियाँ-सी निक
 लन लगा—बिष्कुन वसी ही जमी कि बमारो की ओपडिया से उठा
 थी । उसने अपने दुख के ज्वालामुखी को फटने से बचाने के लिए
 अपना सिर तनिक हिनाया । पर जसे ही उसका मुह उसकी माँ के
 शोकपूर्ण पीने चहरे की तरफ हुआ उसकी आँखें अश्रुधारा से भर गई
 और उसने उसकी गोद में सिसकियाँ भरते हुए अपना सिर छिपा लिया ।

मेरी बच्ची ! रो मत —माँ ने तसल्ली दी । ‘तू तो हमारा
 बच्ची है—नन्ही-सी । जान दे उसे चमार बिराहो मे धीर कर लन
 दे शादी उन्ही की किसी लडकी से । हम तरे लिए धीर उचित कर
 लीज लगे । भाजा मेरी मुन्नी । ’

धीर उसने रक्मणी के सिर को धने ने न धीर रहता डाल
 लिया । उसके दायाँ को बना मरुतुन को धने ने धीर तनिक लाज
 से उसका एक चुबन से धने ।

बारह

तबी मन्त्र का आर जान हुए मजन् न अपन आप का अचना अनुभव लिया । यम बचन भुनमान वान और मिर पर चमकन वान मूय क प्रकाश म उसका छाया ही उसक पीछ गिर जाता थी ।

वह अपन घर स बाहर निकल आया था क्याकि उस समय म आ गया कि उसक पिता पहन ता उस अपना जाति पर टिक रहन क निष्प्रतिबन्ध रहे थे तैविन आज क उसम घृणा करत थे । दूसरी आर उसरी भी तन्मणी के मंगत नछमन क साथ छात्र जान का नापी उस हा ठहरानी थी ।

गता म म गुजरते हुए उस लगा जस बच्चे भी उसस कतरा रह हा । औरतें अपना घण्ट एस खीच तता तमे वह काइ अजनबी हा और खुजलाए कुत्त भा एस भागत जम वह उन् पीटन जा रहा ही ।

उमर आग आग गर्मी और धुंध के छात्र छात्र बक्कर उठन और बितर जान । बन् जार म सौम सता और धाडा हाफ जाता ।

कया उसक परा के नीचे का धरता फट जाएगा और उस निगल गया ? पर धरता न ऐसा नहा किया । धरती का बडोरला की अनुभूति मात्र म ही उसन अपन आप का मुरभिन अनुभव लिया ।

तन्निन उसक भीतर एक भावना का प्रनात्मा जिमका काइ आकार न था उसरी हँसी उडा रही था । यह भावना उस तन्म म पर था जो उसन पूवजा क उच्च जाति म मबर रखन क कारण था । यन् उस दुःखम पर झूठे आभिमान म आ पर थी जो कि उसन नछमन क

साथ मिलकर किया था। आत्मा में एक फीम की तरह इस भावना ने उसे धूनीसिंह के खेत की जान मंदिर की ओर जान के लिए उकसाया। मंदिर में वेबस मूरजमना अपनी नाक में कठिनता से भजन गान श्रृंग। यह गान इतना उबान वाला होगा कि वह भगवान की मूर्ति के पास प्रार्थना के लिए भी न जा सकेगा। और फिर उस समय उसकी चाह यह नहीं थी कि यह प्रार्थना करे बल्कि यह कि वह किसी ने न जान करे। लेकिन सारे मन्सार में कौन था जिससे वह एक गान भा कह सकना था ?

उस रात ही आया कि एक दिन वह कुछ का ओर जाता हुआ गाव की नडकियों के पीछे हो लिया था। वह उनसे दूर छुना चाहता था लेकिन वह भाग उठा था और वह अकेला रह गया था। और वहां चट्टान पर बं वं उसने अपने आप को यह स्वाकार करने के लिए मजबूर कर लिया था कि वह उनके साथ बराबरी करना चाहता था।

उस रात जब वह आज भी ऐसी ही मानसिक अवस्था में था। एक बहुत बड़ी खाइ उसने और गान के हर एक व्यक्ति के बीच में थी। जैसे ही अपने एकाकीपन की वीरानी का भावना उस पर पूरी तरह छा गई उस रात कि मृत्यु को छोड़कर और सब धड़-धुरे में उसका भाव्य गाव के माथ ही बघा है।

एकदम उसने निश्चय किया कि वह अपने मित्र के पास जाएगा। उसमें साथ छाड़ देने की गिफायत करेगा और उसे अपनी आर नान का प्रयत्न करेगा। या फिर अगर नछमन ने उसमें विनय की तो वह भी उसके हाथ हा नगा।

जब ही उसने यह साचा उसका स्वाभिमान लौट आया और वह चिल्ला पड़ा— मान्तर गद्दार। —और धूनीसिंह के खेत से सी गज का दूरा पर बड एक बं पथर पर बठ गया।

वहा वह हथौटा से पथर तोन्न की सपा आवाज तो मुन सनता

था, पर उस आत्मी निन्दाई न देन थे ।

धूर्तासिंह का काम की दख रेख करत हुए सज्जनू का एक भक्त निन्दाइ द गर्व और यह कल्पनाकर कि यह लडका अपन मित्र का खाज म आया है उसन अपना मिर एकत्र नाच कर लिया और मननू की आकृति को भांडी की भानी भीनी पतिया म म दगा ।

अभी वहा वह कुठ पन ही बग था कि सज्जनू का प्रतीत हुआ कि भूय ता उसका एक पवत की तरह दवाण बन जा रहा है और उसकी निया का पमाना बनानेर धुता रहा है । यहा तक कि उसना गगर बिल्कुल हल्का-फुल्का-सा हा गया और दघर उघर भमन लगा । और तब तब गर्मी क प्रभाव म उस नगा माना उसक अपराध का त्वर उस दड द रहा है । इमतिण इस कष्ट किया ता उसन एक व्याधि म मुक्त करने वाली तपस्या क रूप म स्वाकार किया और वायु का अपन गगर म स एम जान दिया जस कि तब म यम क दूता तारा बलाए जान वाला आग उसक दा दुकडकर रहा हा ।

यग यनी टन्व है । —धूर्तासिंह कह रहा था । आता सज्जनू । तग तान् नछमन यही है ।

सज्जनू का मुख उतर गया । एक क्षण वह दुःखता से पथर पर बटा रहा । उसका मन किया कि वह वही म भाग जाय ।

उसने देखा कि वन का पार करता हुआ नछमन उसका हा आर आ रहा है । सज्जनू ने माचा क्या न बन् सछमन पर धुक द । तबिन उसक पाग बग यहा अवसर था जो फिर कभी न आण्गा । धूर्तासिंह का वाली क नम नहज न क्षमा की उस आणा पहन हा बधा दा था । वह चुपचाप बटा रहा—बहर का साने पर नत्काए हुए । नछमन आया और पीछे म जगन गिनवाह करत हुए बाहिं डान दा और उस जगन उग लिया । फिर अधिक म अधिक घमम्य भाषा म मवाधितकर कहने लगा—

आजा ! सज्जनू क वचन । सान ! इपर आ ! भरा वापू तुझे

हमारी ओर आने के लिए कह रहा है ।

सज्जन ने अपने आप की बचाव हुए कहा—

तुम्हारा बापू क्या भाव के सर्वाधिकार रखता है ?

लेकिन यह तो मेरे या तब बाप की बात नही—मरा और तब
संघात है ।

मैं अपने आप को तेरे नए मित्र में मिलाकर पितृत्व का दायित्व लूँगा ।

सज्जन बोला

वृद्धमन ने कहा—

तू तो पहले ही दूषित हो चुका है क्योंकि तू तो मुझ से बड़ा है
और मैं तुझ से छोटा हूँ—तब इनामा उतारता तो मेरे साथ बहुत
अच्छाई की है ।

अच्छाई तो हर जगह है । अपनी कही कही । क्या तुम तुम्हारे
पिता और बच्चे में अच्छाई नहीं देखते ?

पर पुत्रिस्तान में अच्छे आत्मी नही हैं । यदि उन्हें पता चल
जाय कि हम दाना न बच्चे की भाँपड़ियाँ में आग लगाई थी तो
हम दाना ही को जल की हवा खानी पड़ेगी । —वृद्धमन बोला

सज्जन ने अपने मित्र की ओर नाममभी से देखा और आत्म
समर्पण कर दिया ।

तेरह

कुए की सांठिया पर खड़े हाकर भूरजमनी ने अपन सिंग पर वह पानी की बालटी उड़ें दी जो उसन खीची थी और प्रत्येक स्वर क साथ ईश्वर क विभिन्न नाम उच्चारण किए —

हरि ओम् परमेश्वर परमात्मन् ।

फिर बिना अपना गरीर पाछे हुए उसने बालटी का लकड़ी की चरखा पर पड़ी रस्सी में कुए में नटवा दिया। पानी उनक पवित्र गरीर से भ्रमृत और पसीने का मम्मिध्रण बनकर बूद-बूद नीचे कुए में गिर रहा था और चाहे यह तज गर्मी का एक प्रभात था वह कांपता जा रहा था। उसकी गतिमय आवाज सड़सड़ा रही थी क्योंकि वह जानता था कि पवित्र पत्त ता यम उमा प्रकार आमाती से उच्चारित किए जा सकते हैं। मन्ना ने उसे स्तनी गवित प्रदान की कि वह अपना निर्जीव हाथ-परा से बालटी कुए से खींच ले। और वह पानी को अपना गरीर पर डालता हुआ साथ साथ भजन गाता जाता था।

जब कि वह काफी ठंडा हो चुका तो उसने साचा कि यह स्नान अब समाप्त होना चाहिए। लेकिन उस आगा थी कि एक या दो गांव की औरतें पानी लाने जरूर आएंगी और उस नहाता हुआ देखेंगी क्योंकि उसका शरीर तो मनुष्य की लगानी में पारदर्शी भाग की तरह चमक रहा था। लेकिन औरतें गली में वहाँ से पचाम गज दूर घापस में पिच पिच खड़ी थी और उन हाथ-परा का दमकर हम रही थी जो गीनी घोनी की चिपटती हुई तहा में से साफ नजर आता

थे। व भैंसी भैंसी सी खिसिया रहो थी और कुए तक जान के लिए एक दूसरे को धक्का रही थी। उन्हें लाज भी आ रही थी चाहे वह बहू नाराज भी बठी थी—क्याकि बूढ़े आत्मी के दर सगान के कारण उन को कुए से पानी नान के काम में दर हो रहा थी।

यह एक ऐसा मजाक था जो राज हा दोहराया जाता। पर राज रोज हान पर भी उसका आनंद नहीं गया। और आम तौर पर उमका अत यह हाता कि औरतें एक बच्चे को भेजकर पण्डित मूरजमनी को याद दिलाती कि वह नौट आय क्योंकि चाची कुए पर आना चाहती हैं। वह अडियन ब्राह्मण उस समय इगारे को साफ समझ जाता और कुए से चन देता।

पर आज सबर तो वह औरा के कष्ट का एक दूसरे ही कारण से बता रहा था न कि अपन गरीर का प्रदर्शन करने के निमित्त।

वह जानता चाहता था कि धूलिसिंह के रात में क्या हो रहा है। वह जानता था कि नज्मन और सजनू न प्रायश्चित्तकर दिया है और वे दावान रूपकृष्ण के गाव में आने के बाद चमार नडका के साथ काम करने चन दिए हैं। और यह भी कि लखरदार की जमीनार ठाकुर सिंह के ऊपर जिसका उसने सहायता की थी विजय हुई। अब यह आवश्यक था कि किसी प्रकार गाव में दोनों दान में समझौता कराया जाय। निश्चय ही जमीनार ठाकुरसिंह तो आसानी से न मानगा—अपना बच्चा गारा नाद गए अपमान के कारण। लेकिन मूरजमनी ने मन में सोचा कि सौभाग्य से उसने स्वयं दाना नडको को अछूता के घरा में आग नगाने की सीधी कायवाहा की सनाह नहीं दी थी। बल्कि उमन जान-बूझ कर एस गत्ता के प्रयोग से अपन आपको बचाया जो उन दोना पत्नी का समर्थक दर्शाए। इसलिए गायन वह बीच-बचाव करा सके।

उमन अपन बाए हाथ की हथेली के ऊपर उठाकर घाँटो पर दबाया करते हुए बगुन की तरह गन्ध उधकार और देवन का प्रयत्न

किया कि क्या हो रहा है। उसे बस यहाँ लिखाई दिया कि धूलोसिंह व ऊपर उठे हाथ आम व पड़ा की छाया से उलझ हैं और पल खींच रहे हैं। अब उसे एक काम करना था—वह जाएगा और सबरदार स मंदिर व लिए कुछ आमा की भेट मागकर बातचीत शुरू करेगा। सब ता यह है कि उस धूलोसिंह की पिछले जिना की उगारता व आघार पर यह विश्वास था कि यह भेंट तो बिना माँग ही मिल जाणगी।

आमा की प्राप्ति व आकषण-वगैरे पटित मूर्जमना कुछ गज की दूरा पर नाम व पड़ के नीचे रखी हुई अपना भूमी जगाने पहनने के लिए चले दिया। उसने इस वस्त्र-परिवर्तन में समय न लिया—हर दिन की तरह जब वह अपनी एक जगान बड़ी देर में बाधता था जिसमें औरतें उससे नंग गारार व दान कर सकें। आज उसने भीघ ही गरीर पाठा धाना पहना गीली जगानों का निचाला और अपना सामान लेकर आगे चले पड़ा।

जब तक पटित मूर्जमना भाड़ा तक न पहुँचा था वह निश्चित था पर वहाँ पहुँचा नहा। व उसका हृदय घटकर गया।

किमी का उसका आगमन का पता न चला क्योंकि धूलोसिंह की उसकी छान पीठ था। जब आगे आगे दूरा पर पत्थर तो रहे थे, और औरतें आम व पल व भुरमुट्ट व नीचे अपने स्तन-मूख चरह का आग मुतगा रही था।

पटित मूर्जमना का अग्रपूण होंग में खोला पड़ा।

महज पान में धूलोसिंह का निर मुटा। उसने पुरोहित व रगड़कर चमकाए हुए गरीर का दया और फिर मुस्कराता हुआ उसका और दगल गया।

आमो ! आमा ! पटित मूर्जमनी जा आपकी ही तो कभी थी।

न राम जी की भाई ! पुरोहित ने उत्तर दिया।

उसका बात था दर तक गति रहा। इन क्षणों में दाना ऊपरी पात्रमगन व अलाया समझौते की-सी बातचीत शुरू करने के लिए

अबसर टटोलन गये ।

आइय—हम आपको मन्दिर के लिए कुछ आम अवश्य लाने चाहिए । —धलीसिंह क कन । वह प्रकृति से उदार था इसलिए उसने निश्चय किया था कि विराधा देव के प्रत्येक व्यक्ति का अपना हृदय का विमानता दिखाकर अपनी ओर जीत लेगा ।

लबरनार धनीसिंह के वंश का फल तो भाग ही होगा । — सूरजमनी ने उत्तर दिया ।

‘सच्चा ! तो आगो और देवताओं के लिए बनवाता लत जाया । —धनीसिंह ने कहा ।

पुरोहित के पाव रंगन का जमीन तयार हो गई था ।

निश्चय ही तुम तो यहाँ सारे गांव का जीवित किए हुए हो । भगवान् दरिन्दारायण मावार हो गया है—इन चमारों में ।

धनीसिंह ने कवन मिर हिना दिया ।

आज्ञा न कृतिमता में कहा— हर एक को यहाँ काम करने लगे कितनी प्रसन्नता हानी है ।

अब धलीसिंह बाना— तुम्हारी दया से नटक बनाई जा काम कर रहे हैं । भिन्न बाव छविराम और गकर—यों तक कि कालिन् दसरथ ने भी काम करने की आदत मील ली है । और सजनु और लछमन भी वे गृह । यह बीमारी तो छून से फैलती है । बाना गजराज भी आ गया है । मामराज खपरामा जा देहना से छट्टा पर आया है वह भी काम पर लगा है । और मिला बन्दी नरसिंह का भी बहो भूत सकत है ।

अचानक पत्नी सूरजमना ने भुजातीय हिंसा और विजातीय अदृष्टता के एक साथ काम करने के अदभुत दृश्य की गारु की मांगी देकर मराहना आरम्भ कर दी ।

तुम वास्तव में धन्य हो नवरदार धनीसिंह । जस गोता में श्रीकृष्ण ने कहा है— जो भी भरे पास आत है उन सब का मैं ग्रहण

कर लेता है। तुमने भी इन लडका का अपने में समावेश कर लिया है और काम के प्रति अपने अनुराग के द्वारा तुमने सिद्ध कर लिया है कि तुम सच्चे कम-धोषी हो। तुम्हारी घरवानी नियम से मंदिर आती है और अपने कमों के फलस्वरूप उसने परमेश्वर का आशीर्वाद पाया है। आज सब में अधिक आवश्यकता इसी बात की है कि हम अपनी सरकार को अपना जीवन निर्माण करने में सहायता करें। हम दीवान् रूपकृष्ण के साथ बड़े में बंधा मिलाकर बनना चाहिए।

पूजा के लिए भेंट लेकर फिर आऊँगी — मति ने थोड़ी दूर से कहा। वह उन आमा में से जो उसके पति ने अभी इकट्ठे किए थे और जिन्हें उसने और भिक्षु का माने एक ढेर में जमा कर रखा था—एक टाकरी भरकर ले आई।

पंडित मूरजमनी का आमा में कमका था नहीं। उसने टाकरी का घामते हुए कहा—

ईश्वर कर तुम चिरजीवा हो। तुम्हें भगवान् राजी रखें सति।

यह कहकर वह भुज्ज ही चला गया कि घनासिंह ने उस जान से रोना—

नहीं-नहीं। वह टाकरी तो तुम अपने साथ ले जा सकते हो पर कुछ दिन हमारे साथ यहाँ बसकर भा जाँना। आमा लडका। हथौड़ा बनाना बनकर न। पहन आम घाना।

तब के पेट में बहुत दर्द से वह लाट-पोट हा रहा था पर वह काम में छान्त था क्योंकि हथौड़ा की चोट की लय और तान ने उनको बड़ी भूतकर रखा था। लेकिन भिक्षु ने बगल के भुज्ज का घब समझ बिनाकर बोला—

अरे! आ जाओ। कुछ लाग तो पान के पान प्रायनाकर मुन पान है और कुछ भाग्य से—मास तौर पर यदि कोई धर्मात्मा उनका तरफ में निबसे तो।

व सब भी आ गए—पुरोहित का कृत्रिम आनर से हाथ जोड़न हुए और एक-दूसरे की ओर मुह छिपाकर मंदिर में पूजा करने वाले पुजारी की हसी उड़ान हुए ।

धूरीसिंह ने नवनगरन हुए कहा—

आओ नडका ! दूट पंगा !

और यह कहकर वह अपने वं बड़ हाथा से आमा व पचायता ठर पर पिन पंगा ।

आ जाआ—आग वं आआ पन्ति मूरजमनी बरता नन सबस थनिया आम हम से परत हन्प नये ।

चाहे पुरोहित न डर में हाथ तो नहा जाना फिर भी उस लबरदार न हाथा से पन स्वाकार करना पडा । कुछ भी हो छुआछूत का प्रति बंध ता टट ना गया कयाकि अछूत व स्पन किए हुए आम ग्राहण की खान पड गए ।

धूनासिंह स्वयं भी उस छुआछूत व बंधन की ताडन व निए इसी प्रकार की धार्मिक अनमति चाहता था ।

आह भिक्षु ! काम करने में रागस !—आजा ! य नडक तर निए कुछ न छानेंगे । —वह चिल्लाया ।

उमका सहन्य भिक्षु अब भी हथौटा चला रहा था ।

आर दोतन मिन जाय ता यह सर व बन भागा चला आएगा । —बाबू न यम्य निमा ।

भिक्षु न उत्तर निया—

यह ता पक्का बात है जि में पान में तुझे मात दे सकता हू ।

फिर उमन हथौटा पक निया पन्ति जी का हाथ जोड और हाथ धान व लिए उम पाना का प्रार चन निया जिम उसका मौ गन्वा में निए खना थी ।

बाबू न व्यम्य बरत हुए पन्ति मूरजमनी व कहे हुए बाबमाना का दाहराया—

उबरदार धूसीसिंह के खेत के आम मोठे हैं ।

निश्चय ही । —दसरथ ने कहा ।

भग गिवराम न टिप्पणी की—

दुमुहा साप कही का ।

नहा—साप नहीं मडक । तभी तो कुण मे भाडी पर फुटता हुआ यहाँ तक आ गया । —बाबू न कहा ।

आश्चर्य की बात है—चींटिया के भी पर निकल आए हैं । —
यूँ गबर न अपनी लाठी पर गिर आम के पील रंगे का हाथ से साफ
कट हुए कहा ।

बाबू न हल्के से कहा—

अब तो तू चिड़िया की तरह ची चीर रहा है । पहले कभी
उमके सामने एक गान्भी न बान सकता था ।

जा जा बुद्ध ! तूने अपना मुह सिवाय ईश्वर से एक और नडका
भागन के कभी और भी खाना है ?—चाह नर पहले हा छ बट हैं ।

भिकानु न गबर का खुन करने लिए कहा—

अरे ! गान्भी परिश्रम से धन मिलता है ।

निश्चय हा । नछमन न कहा । धूसीसिंह का बटा भ्रष्ट नडको
से ब्राह्मण का निरादर करने की भावना का भोत्साहन न देना चाहना था ।

हाँ-हाँ ! ठीक ता है । मजनू न भी रक्षात्मक ढंग से कहा ।

सन्धि भी बान उठा— आखिर ता कह बुजुर्ग है ।

भिकानु की माँ गम्भी न परामर्श देने हुए कहा—

यह आशान चौकटा बुढाप का वह आदर कहीं करती है नम कि
हमारे जमाने में योग करने थे ।

पूनीसिंह न चटकारा नन हुए कहा—

बावई—मेरी पाठ पीछे थ मुझे पक्कीनी नाक वाला कहते हैं । और
मैं तो नडकपन दाग आपू का पूरा सम्मान करने के पण में हूँ । बस
मत्त ध्य का बिजान हा एक एमा पाठ है जा हम भोगना है । निठरले

व सब भी आ गए—पुरोहित का कृत्रिम आनंद से हाथ जाड़त हुए और एक-दूसरे की ओर मुह छिपाकर मन्दिर में पूजा करने वाले पुनारा की हसी उड़ात हुए ।

धूलोसिंह न तबबारत हुए कहा—

आओ लडका ! टट पने !

और यह कहकर वह अपने बच्चे बड़हाया में आमा के पचायना डर पर पिन पड़ा ।

आ जाया—आग बर आमा पन्ति मूरजमनी करना नडक सबसे धनिया आम हम से पहल हडप गे ।

चाह पुरोहित ने दर में हाथ तो नहीं डाला फिर भी उसे लबरदार के हाथों से फतेह स्वीकार करना पड़ा । कुछ भा हा टुम्राटन का प्रतिबंध तो टूट-सा गया क्योंकि अट्ट के स्पष्ट किए हुए आम ब्राह्मण को मान पड़ गए ।

धूलोसिंह स्वयं भी आम टुम्राटन के बचन का तात्पर्य के लिए इसी प्रकार की धार्मिक अनुमति चाहता था ।

आह भिक्खु ! काम करने में रात । —आजा ! ये नडक तने लिए कुछ न छाड़ेंगे । —वह चिल्लाया ।

उमन सहज भिक्खु अब भी हथौड़ा बना रहा था ।

आगे बातें मिन जाय ता यह सर के बच भागा बना आएगा । —बाबू ने योग्य किया ।

भिक्खु ने उत्तर दिया—

यह ता पचना बात है जि मैं पान में तुम्हें मात दे सकता हूँ ।

फिर उमन हथौड़ा फेंक दिया पन्ति जी का हाथ जाड़ और हाथ धोने के लिए उम पानी का आगे चन दिया जिस उमरी मा गड़वा में लिए लाया थी ।

बाबू ने व्यग्न करने हुए पन्ति मूरजमनी के कह दिए वाक्यांशों की दाहराया—

‘लबरदार धूलीसिंह के खेत के आम मीठे हैं ।’

निश्चय ही ।’—दसरथ ने कहा ।

भगे गिरराम न टिप्पणी की—

दुमुहा साप बहा का ।

नही—साप नहीं मरूँ । तभी तो कुएँ से भागी पर फुटका हुआ यहाँ तक आ गया । —बाबू ने कहा ।

आश्चर्य की बात है—चीटिया के भी पर निकल आए हैं । —
यूँ गकर ने अपनी दाढ़ी पर गिरे आम के पीन रंग को हाथ से माप
कात हुए कहा ।

बाबू ने हल्के से कहा—

अब तो तू चीटिया की तरह ची चीकर रहा है । पहन क्या
उमर सामन एक गज भी न जान सकता था ।

जा-जा बुढ़े ! तूने अपना मुह सिबाय ईश्वर से एक और उड़का
माँगने के बभी और भा खाना है ?—बाहू तरे पहल ही छ गइ ।

भिवन्तु ने गकर का खुश करने के लिए कहा—

अरे ! गात । परिश्रम से धन मिलता है ।

निश्चय हा । सद्य मन ने कहा । धूलीसिंह का बग अगल सज्ज
में आत्मगर्वा निराश्रित करने की भावना को प्रात्याम्न न बना जाना था ।

हाँ हाँ ! ठाक ता है । मजनू ने भी रमात्मक बेंग म कहा ।

सलि भी बान उठी— आगिर तो यह बुजग है ।

भिवन्तु की माँ लक्ष्मी ने परामर्श देने हुए कहा—

यह चाटान चीरढी बुढ़ाप का यह आग बनी बगना है, १५ नि
हमार जमाने में लोग करते थे ।

धूलीसिंह ने चटखारा सन हुआ बग—

बाबू—मरी पाठ पीछे से मुझे पचीसी नाक काता कत है । गज
में तो उड़कपन द्वारा आयु का पूरा सम्मान कर के दे दिया है । क
कत धन का विना ही एक गंगा पात है या हमें म मगा है । शिख

हाथ वैसे बड़ी-बड़ी भाव भगिमाकर संवत हैं पर हथौड वाल हाथ पूरे क पूरे पवता को ताड सकत है ।

इन अतिम गंगा को सुन चक्क अपन काम पर चोट मारए ।

लवरदार उनकी स्फूर्ति से भरी हरकता को दख रहा था और साथ साथ वह गकिन भा जिसस व हथौडा चला रह थ ।

उसन उनकी गकिन पर हा ध्यान केंद्रित रखा । उसा ढग स जस उसने उनकी जागरकता का अपन म समो जिया था । उन अद्वैत नवयुवका को बस एक बार प्रोत्साहित करना होता है फिर ता उनम कभी न समाप्त हान वाली गकिन का गुप्त स्रोत खुल जाता है । अपने अर्धे गगरा को दख लवरदार को उनस इर्ष्या होन लगी ।

वह उनको सुनावर कहना चाहता था—

भा ! मर बढिया साधिया ! भा मरे बहादुर दोम्ना !

निश्चय ही तुम पुरुष हा और पुरुष भा हम कठोर मिट्टी क ।

चौदह

मिरनु की छाँया में प्रकाश की भनक आई—जैसे ही वह वाम पर घाकर जुड़ा। किसी नई चिंता से उत्पन्न हुए मानसिक तनाव की वह छाया थी। हथौड़ा चनात हुए नहका और उसमें मध्य अक्षरणा का भाव गवा भूम रही थी चाह दूसरी ओर यह बात भी सहा थी कि कुछ भा नकार सकने की पराजित भावना को भी वहाँ कोई स्थान न था। उस क्षण चाहिए वह न जानता था। उसकी तनी हुई भीड़ों से केवल पसीने और शक्ति का जन्म होता था। उसकी आत्मा में उल्लाम था—कि वह जतने ही जाग से सड़क पर भी वाम कर सका जिस जाग में उसने अकस्मिक अपने आपका शराव में डूबाया था या जिस जलून में वह गाँव में एक मिर में दूसरे मिर तक निरन्तर घूमता फिरता था।

शक्ति उस यह भी पता था कि उसकी नई उम्र की स्वच्छदता और नापसवाहा ताकती की लो चुकी है और गाँव का नई पाठ शाना—मदक में उसका पौष्टिक की शिक्षा और परीक्षा हो रही है। कुछ समय तक वह यूँ ही तनाव में और अवधारण परेगान-ता बठा रहा। फिर उस पारदर्शी जाग की तरह माफ़ दिगाई दिया कि मुट्ठी भर आश्रमिया व पथर ताटन में लो मदक अपना निश्चित समय में न बिल्कुल बन गंगी। भविष्य का यह रूप उसकी आँखा में एक पत्ता हटान का समान था और इस गाय में सामान्यतर उगने अपने आपका स्वस्थ-ता महसूस किया, जग कि वह बड़ा दर में किमो दोरे में नूयचित हो गया हा, और सब गग हाँवा था। वह अपनी आँखा में भवर में डूबा रहा और उनका माँ पत्तों व पाँध टटानन लगा—पनवा की घगतल में उसका जो कि

आने वाला समय ही बता सकता था। भिक्षु ने कहा—

लबरदार ! अगर औरतें हमारे साथ मिल जाएं तो गांव के बाहर के रास्ते पर कच्चा बिछाए जा सकते हैं और साथ साथ पत्थर भी टूटते रहेंगे।

धनीसिंह बहुत दूर तक स्तब्धता की गयी अवस्था में बड़ा रहा। उस अवस्था में जिसमें स्वयं उसका आत्म बच रहता हुआ पत्थरों की धल की तरह धरागायी हो गया था। वह और मानसिक उपलब्धि नहीं सह सकता था।

सत्ति ने भिक्षु के गान सुन लिए थे और उसका हाठ हिला जस कि वह बुद्ध कहगा। पर पकीये नाम वाला धूनीसिंह का उनमन का गाठ में बंधे दस्त वह अपने आपकी ध्यान में रोक गई। अपने स्वामी और कणधार के सामने वह और क्या करती ?

अपने अविश्वास की घाट में बिलबिलाता धूनीसिंह स्वयं ही सत्ति की ओर मुड़ा। उसने उस ऐसे देखा जस अपनी पूरी यथा का उसका राम राम में समावण करना चाहता हो।

इस पर वह एक हताश भूना में उसका आर दान नगा और कहा— एक और एक दो होता है और दो और दो चार हाथ। हम ठाक रियाँ दो दो और हम सबके के बिस्तर पर सबको द्वारा तोड़ दिए पत्थर बिछा देंगे।

निश्चय ही ! तक्षमी ने कहा— लेकिन हम तो ठोकरियाँ भी बना सकते हैं। आखिर हम चमार मांग उभार करत क्या ही रहे हैं ? और यह कहकर वह अन्त औरतों का एक-दूसरे से शरीर आकृतियों का और दान नगा जो ग्राम के झुरमुट के नीचे अपनी भाषणियाँ के बाहर बटा थी।

उन राजा के वाक्य में दवा म्रिया ने अपनी सहमति देने के लिए भारी घूँघटा के नीचे अपने मिरा का हिलाया और अपने चेहरे को पड से बंधे झुका में चारियाँ देकर सुनायी रहा।

पन्डह

मजनु का नगा कि मूय का जलाने वाला पाप उसका खापड़ी से उत्तरकर उसको मुग्री जाभ पर आ गया है। उस और दिना के मूय की अग्नि की प्रच टता की पूण आभति थी क्योंकि वह अपने पिता की पसना का माफ करने और पन्कने के समय कई बार सता पर गया था। गड गडा करता हुआ पानी का घूट उसके मुह की रगार का दूर कर देता पर अपने मुह की स्वाच्छानता के कारण वहाँ कड़वाहट के चिह्न थे—जैसे घूलीसिंह ने उस धून गान को विवश किया है। पट के पानी-पानी हान की चतना के अतिरिक्त उसके गले में कुछ ततुषा का सिचाव महसूस होता था। पंडित मूर्जमनी के जान के बहुत समय बाद तक उसने अपनी पीडा को नचाकर रखा था। अपने गराग के बुगार का उसने जोर-जोर से साँस लेकर भागत किया था जिससे कि उसके हाथ का हथौटा अपना काम करता रहे और वह पसीने में एम ताटता रहा नभ कि वह नरक की वाला नदी के अमल जल में नहा रहा है जिससे कि वह धुनकर पवित्र हो जाय।

और तब ही उस नगा कि जैसे यम के दूत उसके प्राण देवाच रहे हैं। वह महारा मारन नगा उस मधुर और विचित्र भाव का जा माना के लिए उसकी कामना का रण था। वह माना जा सद्यमन के बहिन और उसकी मनेतर थी। केवल माना हुआ था जिगन अपना पीठ माँगे रखा जब तक कि वह वहाँ रहा। एव क्षण का भी उसने अपने निश्चय गान का आचन न छोड़ा, जब कि पहले मुनहरी निना में अपना धूपट

ढावन स पहुँच उस अपना चहरा आधा ढिँधाकर इस गानानता की लाहे की दीवार में छेदकर देता थी ।

हथौड़े से ऊपर और ऊपर और उठकर उमकी आँखें शिनिज का टटोवन लगी । वहाँ की चक्काचौध न उम हग मा लिया ।

और उस आभास हुआ कि अदृष्ट काम करने के साथ-साथ एक गीत भी गान जा रहे है । वे अपने आप में मस्त और बाह्य जगत के प्रति अचेत हैं और अपना इच्छा के विरुद्ध उमने अपने मन में हथौड़े का गतिन माँगी और उनकी आवाज का मराहना की ।

वह सोचने लगा कि काग । सारा पिता भी इतना उठार हाना जितना कि उसके मित्र नखमन का पिता घनीमिह था । स्वयं उमना वहिन उमके मित्र की आर अधिक अनुराग रखनी थी—जिनना कि माना के हृदय में उमके प्रति नह था । फिर उमकी मा भी उनका विगान हट्या कहाँ थी जितनी कि सप्लि । जम-जस मजनु अपने भावा निरव के भाग पर बटता जाता सगाय उमने भस्तिज पर अपनी कानी चारर डानता चल रहा था ।

वह साव रहा था—जावन ने मुझ कगार बनाया है—इसलिए कि गाव के जमीनार का नडका हाने के नाम मुझ औरों पर गानन करना है और यह काम कठारता से ही हो सकता है । विनाय तीर पर न्न नागा पर गानन करना जो मख मन हा पर काम करना और अपनी रोजी कमाना जानन हैं ।

एस ही कुद्व न्धर उधर की बाता के मिवाय उम चमारा के विरुद्ध अपने दष्टिवाण में कवन स्वास्त्रापन मजर आया । क्या नहीं ! उन सबका धूलामिह के नाच गरण मिना और आज मा के जावित के चाह उनके घर ननकर रास हा गए और मरकार उनका पाठ पर थी । उनका सारा मपत्ति नष्ट हा गई पर फिर भी कुद्व बच गया । वह था उनका बाहु-बन ।

मजनु का यवायक एमा लगा जम जावन के उसका तत्व उसमें

पाम से ही गुजर जाएगा और वह उसक स्पष्ट मात्र व लिए तड़पता रह जाएगा। उसको इसकी पूव सूचना जब मिला जब कि दूसर पुष्प अपने रहस्य उसको इस ढर से न मौपते कि वहा उनका सम्मान नष्ट न हो जाय।

आम सम्मान व इस मन्त्रानिवाज म वह भाता की प्रतिष्ठापा की और कातर या भुका अपने मन म यह जादु नस्वा दाहराता ओ पण्डित सूरजमनी ने उसे किसी भी स्त्री का म औत्तन व लिए बताया था। मजनु न पुरोहित को नहीं बताया था कि वह किस व लिए यह प्रम वनीकरण मन्त्र माग रहा है पर वह जान गया था कि यह भाता की अपनी ओर आर्वापित करने के लिए था। उसने बिना श उच्चारण किया व चमत्कारिक मन्त्र दाहराया—

मैं तुम तक युगा को पार करता चलता जाऊंगा।

और वह अपनी आत्मा म उस गति व संचार की प्रतीक्षा करने लगा जो माला का अपना मह या अपनी आहुति ही उसका आर फल व लिए बाध्यकर द। एक क्षण ता उस अपना हृदय मन्त्र व एक एक गन्ध व माय ऊपर उठता दिखाई दिया।

तकिन भाता न मुड़ी और सपनि व पाम बठा रही। वह घाता म कबरा की समूर का दास स अनगवर रहा थी।

भाता उमकी है। इस विचार म जितना भावावग था उसका प्रभाव म मजनु की आत्मा उतनी ही भूला तड़प रहा था। उसने अपने हृदय व एक-एक अक्षय व बारे म साक्षा और उमका मन चाहा कि वह विह्वलात गए। पर यह हास्यास्पद हाथा—उसका उमका म्माभिमान न विश्वास निलाया। वह आह भरकर रह गया। उसने मिन उद्यमन ने कहा—

यदि मैंने तेन म कुछ मुक्ति हा ता अपनी पगला का तिरा अपने मुर पर बांध ला और अपना दम घाट ना।

मजनु न विरोध किया—'ता तुम्ह भरा मरना पमद है ?

जीजा जी—तुम तो अपने पिता की जूता की मार से उरते हो ।
सज्जन न अपने आपकी बचाते हुए कहा ।

बकी मत ! तुम्हारी सातिर मैंने अपना सब कुछ खा लिया । व
दूसरे लोग हम पर हस रहे हाग और

और क्या ? नछमन ने पूछा ।

और यह हमारा नैन नैन का सबध समाप्त—यदि माना सुभम
रह ही रही । तू उस भिक्षु को सोप दना ।

अगर तू न मरी बहिन को एम गानो दो तो मैं तुझे यहा और
अभी कलन कर नगा । —नछमन चिल्लाया ।

बस ! बस ! बस ! धनीमिह की आवाज पग पर चरना हर्
बोभिन बाधु पर तरती हुई आई । उस समय माना समूर म स बकरा
को धीनता हुई ऐसी मुग म बठी रही जस कि वह सिद्धाय हा ना
पिछना रान व बुर सपन व बार म चितित है ।

कभी-कभी वह ऊपर दग नेती और अपना बडी बनी आखा स
पडा व नीच काम करन पुरप और स्त्रिया का अपना कल्पना म उता
रती । उन धानी थोडी समझ आती कि यह सब उसके पिता की गक्ति
और उदारता का परिणाम है फिर भी उस गूय म जो उह और
नछमन का हरिजना म अलग करता था उस सगा जसे नछमन और
व शाना ही बुरे हैं और उस भरमुट की गति म उमे यह भी आभास
हाना कि आग नगान बाधा और मन्क के निण पत्थर तोडन वाना की
पछा-गकिनया म कितना विराध है । यही कारण है कि उसका पिता
चिल्ला पडे य—बस ! बस ! बस ! —उमके माई और उनके बीच म ।

बापू की आवाज स उगका अतरात्मा कांप उठी थी और उमकी
गनियों का अस्तित्व अजित विचारा स गट गया । उमन मन म आता
का कि नकिप्य म वार् आग वने चिल्लाना गानी-गनोज और धम
रिया न गगा ।

श्रीर अपने हाथ व काम स भटककर उसने सोचा कि वह 'उनकी ओर कभी भी न दख सकेगी क्याकि वे तो जोध श्रीर मिय्याभिमान स बढोरतय हा गए हैं ।

वह अपने माथ पर धूधन ठीक करन के लिए रकी और फिर अपनी शान बीजन म लग गई । उमने सोचा कि धूधन गिराकर उमन अपने श्रीर उस आदमी के बीच जिसम उमका विवाह होना था एक दीवार रख दी है ।

अपन पिता की सराहना की भावना से उसन मन-ही मन म बस ! बस ! बस ! कहा और फिर उसन अपनी आँखो स परे उस अभय को देखा जो उसन अपने श्रीर उनका बीच म डाल दिया था ।

अचानक एन स्वप्न न जा उसन पिछली रात का दशा या मताना शुरू कर लिया । उस याद आया कि स्वप्न म वह पाना माग रही थी—एन ही जस कि वह जब बच्ची थी प्यास होने व समय माँगती थी । माँ दूर तक भी गिवाइ न देता थी । बस वा बाँहें फलाए उस गले लगाने का सह हुए थे । उसन अपने हाथ पानी व निर फनाए पर उन्नि पानी न दिया बल्कि चुबन की कामता की और वह प्यास म मर नी गई—एक और पानी के लिए मुह व नीच हाथ लगाए जब कि वो आए और उन्होंने उमका मिर स दुपट्टा हटा लिया ।

पिता की महज भावना म स्वप्न के बीतने के इतनी दर बाँह थी उसने मुह पर धूधन फिर शान दिया अने वह कह रहा था—तहा ! तहा !

उम यह भी याद आया कि स्वप्न म बिजनी न आकाश को चीर लिया था । उसन किसी भी वस्तु स चिपटन व लिए अपना हाथ फना लिया था और आगिर एन पड को पकड़ लिया था ।

सोलह

गण्धर्वसिंह व गरीर का तापमान ग्रीष्म ऋतु व मध्यकाल और गाव का तनाव की स्थिति से भी ऊपर उठ गया। उस तज बुझार हा गया।

अपन वन के माथ द्वाक जान पर उमे सङ्ग हुआ कि गायक वह स्वय ही बड़ा जिही रहा है। पर इन्वर न जो जसा ह उस वमा ही बनाया था इसलिए वह कम स्नाकारकर न कि नाच जानि वान धमार मुजातीय ग्निमा क समान है। वह चिरकान म अपन विन्वस्त सत्य को पकडे था। उसन अपनी आ मा को उत्तर निया कि पीनियो म उसक पूजक कम म विन्वाम करते चने आण है—कम वह वो पिछन जमा के कर्मों के फन व अनुसार इस जम का निणायक है। वह काप उठा जम वह वफ की तरह ठग है। चाहे उमका गरीर न्तना गम था जितना कि गण्धर्वसिंह लुहार व कारमान की कार्ज जयता हुई नान की सनाय। यह सब पस कारण स था कि दश्वर के काप का भय उमकी एन साम को आ दवोचता ता सरकार का आतक दूसरी को। पर जा तराजू उसने अपनी कल्पना की आवा के सामन गटका रखी थी उनम यह पाग उस चिता व वाम स हस्वी थी जा उमको मरपच था पाच आन्मिया का सभा का प्रमान पन दिन जान स थी। उमक सामन दो माग थ। उनम स एन सही माग चुनन की समस्या उन सब पनाडियो म भूत हा उनी जिनम धमार गडक पथर ना रह थ और दूर क्षितिज व पार दहना गनर को जान वाली मन्क फना निखार् देना था। फिर यदि यह बात सच था जस कि बच्चे न उस बनाया कि पडित मूरजमना नवरत्नार म मिनन गए थ ता कार्ज भी मनुष्य बिना प्राणामग किए ता म धम गटन का घटना का सुन नही मजता और यदि उमकी स्त्री का खबर कि पुराहित न धमार गडका म आम लेकर लाए मच

है तो पृथ्वी का फटकर पूरे गाँव का निगल जाना चाहिए क्योंकि हमारा श्रम तो यह हुआ कि कस्बियुग आ हा गया। इन सब विचारों ने ठाकुर सिंह का चकरा दिया जम कि वह उहाना हान वाता हा।

उमन कपकपाहट में बचने के लिए बज्ज आ लिया। उम पसना आन लगा। वह हैगन था कि एक हा क्षण उमरा गर्मी और ठण क्या लगता है।

उमकी स्त्री ने श्रमणा के हाथ छाछ का गिलास मग का तरह भज दिया।

उमने हाथ जिताकर उस स्पष्ट भाव में दूर हटाया और मूख के प्रकाश का भ्रम में अपने आप का बचान के लिए आँखें बंद कर ली।

बापू! तुम्हारा गिर दवा दू क्या? — बह्वी ने पिता पर भजन हुए कहा।

नहीं नहीं! जा अपना कामकर। — उमने बमरा से उत्तर दिया। इन गंगा के हाटों में निक्कन निक्कन उगका बहरा पीना पड़ गया और उमका आँखें बमक उठा जम कि गम-गम आकाश से निजरा की कुरे भवानक फूट पड़ा हा। और उमने आवाज कुन का—बूढ़ा के निराश्रित वासना और घणा रोम और मरिआनान के बिगड़। वह चिल्ला पना—

तुम मगरा मौन आ जाय।

भगवता ने बात काटने हुए कहा—

हाय! ईश्वर के प्रकाश में ठरो! एमा-सभी गालियाँ न रहे हो।

श्रमणा बापू का गिर दमान के लिए जरा ठहरा रहा— उस आगा में कि माँ का चलावनी के बाँट गायन बापू बीला पड़ जाएगा।

सबिन बापू ने बराम के गिर पर सदा अपनी स्त्री के आर दान कर बटुता में कहा—

'उम सतान से जिसका इतने बष्ट मन्कर पाता है और क्या आगा हा मक्नी है? यह भी हम हा एस छोड़ जाएगा जम कि वह

छाड़ गया है ।

भगवता बोली— नटकी तो घर में पाहुनी हानी है ।

उमने कहा— पगनी माता पिता सतान दूमरो के लिए नहीं पानन बल्कि इसलिए कि वह उनकी कुत्ताप में सेवा कर । —और वह एक बीमार घर का तरह पाठा से छूँठ गया और कराहता हुआ पीठ के बल लट गया ।

रक्षमणी बूँठे बापू की उस समय की मरता मनी भाँति समझनी थी और उन उमकी मर्यादा से उत्पन्न हुई भयानक व्याकुलता से घणा था । यहाँ तो उसकी पीड़ा का कारण था ।

अभी उसने लटकर एक क्षण हाथ आराम किया था कि उमके मन में बड़बड़हट की तरह फिर ऊपर आ गई और वह साधन लगा कि यहाँ तक नीचे पड़ गई है कि स्वयं उमकी स्त्रियाँ उसकी बात काट रही हैं । उसने अपने आप का कुहनियाँ पर उठाया सूखे मुँह में से धीरे में बरगम धुका और फिर चिल्लाकर बोला—

ना मरना हुक्का ना । जानवरा का चारा तो जल दिया होगा ?

रक्षमणी बापू के अचानक हिंसक व्यवहार की दृष्टि अनिच्छा से काप उठा और निरास के लिए माँ की ओर दखने लगी ।

भगवता ने निराग स्वर में नटकी से कहा— जब हुक्का की चिता में न आ ।

ठाकुरमिह का इस बात पर क्रोध आ गया कि उमका स्त्रियाँ न उस की भीषा उत्तर न दिया । वह उठकर बहकने लगा—

सारी दुनिया मरे सिनाप में गई है । जा बीज मैं बाँपा था उमसे जहरान पीछे हा फूट है । यह सब इसलिए हुआ कि उनका स्वर का काट भय नहीं । पर उन्हें एक न एक दिन भगवान दण्ड दगा— अवश्य । एक धर्मपरायण मनुष्य का नाप है तुम सब पर । उस ब्राह्मण पर जो एक जगह बटना है और दूसरा जगह मूँतता है । उम मर कर सज्जन पर भा । और काँगा तुम दाना भा बिचवा हो जाओ । कुत्त

सूझर वहीँ क । वहीँ है वे सब मरा विराट्गरी क आदमी—रामनिवाम,
रथागम गजराज और तेज ?

रथ रायपूजा वजन क बाद वह एक हुक्का पान बान का खासी क
तीर प उलक गया जिनक बीच-बीच म उम बजमम शबना पडा ।

फिर वह उठ गया—अपन गरीब का गर्मी और शमान म गयपय ।
मन ही मन गानियाँ और अस्पष्ट गज बोला रहा— मैं शबना हा रह
गया हूँ इन सब म रहन का । शबला—गज गज ! विरहून शबना ।

भागवती न ठानी सोम तरंग कहा—

परमेश्वर ! हम पर क्या कर ।

मक बाद वह पीतल क बनता का राज स साफ करने गगा
जिमन प अपन रागा पति क लिए गल चावन का पनना-मा सिचडा
बनान का तयार हो सकें ।

पनि-पूजा सजनु और रक्मणा क पिता क प्रति कफागरी स
पर उम अपनी अतडिषा म सिचान-मा महमूम हुआ । उम पर म
गजग था जा उसन वजन पर बादन का तरह फिर आ । उमन
गुप का आर दुष्टि डागा पर सब निरधक—क्याकि उम अपन बज की
गवन नजर न आद ।

उम इसम सदह था कि सजनु न गपना छाछ प्रति निम का तरह
पी ली था । बीन उमक लिए गून घन म राटा पराएगा ? म यह भा
पता न था कि उमक पाम एक माफ घानी और कमाउ भा है वा
नग—नहान क वाग पनन क दिग । निचय हा मलि उमका अपन
पुत्र की तरंग हा दम गव करेगा क्योंकि जिनना छन-वपन धूनामिह
की म्ना कर सरनी था वह सजनु और भागा का जोडा बनाए गगना—
भगवता का यही विचार था ।

सजिन उमक मह क अर जोम क ऊपर भावान क नाम की
रठ था और उम गज में थी रक्मणा क अविष्य का चिन्ता—उमका
भातिर क्या होगा ? वह गाब रहा थी कि क्या अभी उमका पति—

जिसके नाक कान आँखें और जवान सबरे आम उभन चक हैं—
कभी भी ठन्ही छाछ पी सकेगा और स्वमणा का हाथ लटमन के हाथ
में देगा ? उद्यमन वह जी अपने पिता से जाकर मिन गया जब कि
उमन सजन के पिता का अत तक माथ दन का वचन लिया था । यही
नहीं सजनू को भी हमरे दन में बहकाकर ल गया ।

भगवता भावनाय दृष्टि से ऐसे मोचती रहा उन वह प्रभा पर
बठी एक मुर्गी हा और उमका चेहरा चित्ता का एक-पर एक जमी परत
के कारण पीना पड गया । उस आन काजी पर अनजान विपत्तिया का
गम खाए जा रहा था । उमके हाथ यात्रिक रूप से बनना पर चन रह
थ और उगनिया से राम घर घर होकर गिर रहा थी । उमकी आँखा
में खार आसुआ की बटकाहट जो घुन गई थी ।

आखिर उमकी त्वचा ने अनमनियम की अतरारमा का स्पष्ट किमा ।
वह मुड़ी और पास में बठी स्वमणी की उपस्थिति के प्रति चेतन हा
गई । स्वमणा खोई स्व-सी थी और छाछ का भरा गिनाम बस का
बसा बरामन के आन में रहा था । मूय की किरणें उमके चेहर पर
गिर रहा थी जिसमें उमका माफ गहुँआ रंग काना पड गया—जम
उम पर लोचन पड गए हा या उन उमके जम के अधिष्ठाना दन मगन
का अनिष्टमय आमा का ध्याया उमके चेहरे पर अपना पूरा प्रभाव डाल
रहा हा ।

जा और जानवरा का रखवानीकर —भगवती ने उमसे चीन
कर कहा । बरना वापू चित्ताण्णा ।

स्वमणी तमार में कपायमान युवा वक्ष का तरह एक तान के
अनूप मा लघर उघर टिन गया । फिर उसने अपना बाँहा को हिना
हुनाकर कमीज को टोक टोक लिया और पगुआ के बटपरे की धार
चन दी । उमका सिर मन का वेरना के भार से झुका था ।

अपना बटी के गम में झुक चेहर का देखकर भगवता की स्वाभा

बिबि भाव मे भगवान का नाम स्मरण हो आया। अब उसे यह सन्देह हुआ कि वही वह पिछले महीना में मंगलवार को तन देना तो नहा भूत गई और तब पण्डित मूरजमना का उमके पति का छोड़ जाने का अधम काय उसी मंगलदेव की आत्मा की प्रणवा होगा। उस उमकी भती का उचित दण्ड दिया गया है गायन ।

इन पूजा सबकी स्मृतियाँ में डूब हुए उसे अचानक याद हा आया कि एकमणा की जन्म पत्नी को अपना कुना से भरी हर्ष की और निश्चय ही यह पत्नी नष्टमन की पत्नी से न भिना थी ।

अनिष्ट की आत्मा का न दबी और अमर्य दर और दावा का अपन मामन मूत होने हुए स्वता हुई भगवती । माचा कि यदि वह एक वकरी की यति चला उसे चमारा में बाँट पाए तो एक बार उसका पति का राप जाता रहेगा और दूसरी ओर गायद न नगा के मध्य जा धम का मानने हैं और जो अपने कमा का पन भोग रहे हैं सम्भावना उत्पन्न हा जाय । निश्चय ही धम ने अनुमार नीची जाति क नगा दरिद्र नारायण हैं—भगवान क निम्नतम अवतार जिनमें नवी तत्व तो हैं पर जिन्हें अनगिनत पात्रिक और मानवीय रूप से चला आन पटल है—इसमें पहन कि ये पूणता का आन भोग सब और सबण और मुजा साथ हिंदु बन मनें । उस अब यह निश्चयना हा गया कि पण्डित मूरजमना भी भद्रता की ओर इगतिण चने गए क्याकि वह भी अपने व्याख्यान में चमारा का ईश्वर का—निम्नस्तर का मछोम—वतार बताते थे—देवात्मा रूपी चत्वर की मरम निम्न काटि की बुनायत । क्या में वह धमा ही चत्वर पर निचड़ी चत्वार मन्त्र चनी गाय ? वकरा की प्रति से पढ़ने की आवश्यक पूजा तो कर सकगी वह ।

वह ध्यान परा के वन जल्दी से गनी हा गई । मिट्टी क वनन को जिनमें दान-बावन से चढ़े पर परा और गाय-गाय ईश्वर ह । ईश्वर परमात्मन् । बहना रही ।

सत्रह

एक स्त्रिया का परा का चाप मुा डकारन लग । तडका न बिगान
काय टिट्टु और मिट्टु बने की पीठ का कोमलता स यपथगाया और उमी
समय गाय पावता को भी गन क नाच स आवाज गगा दी । हम पर
पावता क बछ्छ न रम्मा का सोचा और स्वमणी का आर अपना गिर
जार स उठाया । व बच्च की तरह रा रहा था । स्वमणी बछ्छ क
पाम ग और उसका नाक का हल्क स मरा । उसन दया बड की
आँखे अंदर म दीप गी चमक रही थीं ।

बछ्छ गाय और धन सब भ्रम एक साध रमान रग । व स्वमणी के
प्यार का प्राप्त करन क लिए आपस म हाँकर रहे थ और भत की
आर छिड़ जान का वचन द । हमनि बह उनम स हरणक स गन क
ऊपर जाभ का कुडकुडाटह की आवाज म बाती ।

मन खान का जा न्न मरगिया का बाहर न जाना था मान म
दर हा ग था क्याकि बाहर मूस काफी ब चुका था । उसने साचा नि
मह पगुआ क खालन का और बाहर रहन का अया बहाना है—उम
समय तक जब तक कि बह ढारा का मटन का न सोंप द ।

नकिन ढारा क डकारन और उसका उत्तर स दूर उम पता था कि
उनका जगा का पुनर्जिया खुलता थी और व होता थी । उगर हाठ
फक रह थ और उसका राम राम भजन हान वाल पनि का न्यन की
बद्धा म उन्नित था ।

अंदर म उम मतिभम म जा उसका टकटकी गगावर दस रहा था

उमे नगा जमे 'वो' उसकी आर देव रहें हैं—उस अनाज की बानी पर मे जो कि उसकी आर नहरा रही थी और उसके लिए उनका चाह का गदेग ला रही थी। उस यात्रा आया कि राधा और कृष्ण के युग में वह कवियों ने एक नदवी की कहानी को गोना में कहा है जो अपने प्रेमी में मिलन चाहता है। उन्होंने माग व स्नान का वपन किया। विजली की बटव जिम्मेदार बूझ कर हृदय को टकड़ टकड़ कर दिया और चमकन वाला विद्युत् की धारियाँ जो उसको माया की तरह धार—उन सबका। लेकिन यह भी उद्घाटन कहा कि यदि वह नदी इन सब अग्नि परागाओं में पार उतर जाती तो स्वर्ग में उसकी प्रेम की शक्ति व आग भुव जाना और उसकी अभावात् प्रेमा का दस्ता उमर पाम न आता। गात की प्रणिछाया उस वृष्टि की आर गाव रही थी—जम जादू भरी बौमुरी की पुकार उसकी गरीब का बुला रहा हा।

जमे हा य मराचिका रचित दृश्य उसकी आया में हूँ उसका बायुनीत पशु-ग्रह में होम की मुग्ध झाड़ और वह बहाना हान नगा। यह अपने आपका अंतनाहीन हान से बचाने के लिए नीब व गह। पमीन व मानिया बिंदु उसकी पतला नाव और माथ पर भजन नग और उसने अपने रूप के परन से अपना चेहरा गाफ किया—जोर जोर में मौन बन हुए क्योंकि अपना व पत्नी की उद्घाटन एक बात था और पृथ्वी की यथायथा जिग पर वह यनी थी दूसरी। उसकी सामने था गिडबिया का नाट्य का गाना जिनमें उस लला नगा—जम वह पिजरे में है।

उम ला चोरी में बाहर निकलना होगा यदि वह योना के लिए भी पर का मनहूँमियत में छुटकाग चाहती है। इसके लिए माहम की आवश्यकता है।—उमन मोचा।

गमणी न अपने मौना का बटवटाया और उच्छ्वस वदन की मोची वह जानती थी कि जमे हा वह बनी में हिनी दाग फिर में उबारेंगे और अपनी निनितियाँ दोहराएँगे और उमका माँ उसकी निवायनें मुनगा।

इसलिए वह निश्चय रहा। कवन अपना आखा म गना म उतरन हुए ठारा के उत्सुन बंदमा की कल्पना करती रहा जो महंग व चित्तान की भा परवाह नहा करत जब तज कि सता का निजनता म व म गति से प्रविष्ट न हो जाए और दनन की गीतनता की आर न चन दें। वन उड सींग वान ऊच हिमार् व वन सिर उठाकर कम धाम की चरागाह की आर चन दिए। गाय और बड़ पुगावाकर रह व ग्री आनमिया का धुटी घटी आवाजें आ विसी दिन स दिन की बातचान की सुगंध देती थी सुना द रही था।

रामणी का आत्मा उसका यका जवान व माव्यम म चिना उठी—

क्या ? आगिर क्या—मनों का जाति को स्तन विाप अधिरा प्राप्त है ?

धनक धान फिर वह जाति की चननाहीन धवस्था म जान हा गइ और उनका मिर उसकी गोम म डूब गया।

नहा। नहा। गम-गम धाम का मोन खानू उमक निण न था। वह ता घर व चौक म काम करन व निण न था थी। कवन कुण म पाना जान व निण—वह भा उमी गता म म जहाँ वह स्तन माना स रहनी आ है। पर गायन यि माना दयाराम की बटी सुमिया और किसान रामनिवास को ननन। दवकी आ जाता ता व सब रात हान व बा नना का आर जा सकती था। तब वह कूह मटवानी रु मच नता ह चना जाता या अपनी सनिया व चचन परा की चान स चान मिता एक रमता स भागती। और व हर एक मन्व व टरान को आवाज सुनन व भय स या जमनूआ का बार-बार चमक की दम चांग पडनी। जब एव-दुमर व हाया म बघवर दौडता ता हसा नुटा करता चननी और व सब तब तक स्वनत्र था जब तक कि उनकी माए उट पाछ स न पुकारती और कहना कि व सता म बहुत दूर न भटक जाएं। पर वह जिम समय यह सब साच रहा थी अचानक उस भारी

भारी नदमा की आवाज सुनाई दी। उमन देखा कि भट्ठा एक बिगड़ हुए साज का तरह घट्टा आ गया और उमन बोरा का खान लिया और जस ही वह वापिस जान को मुड़ा उसकी नज़र खमणा पर पड़ गई। उमन बत्ता—

अरी जादूगरना खमणी ! तुझ वाल लटनाए बठ ग्या तो मैं टर गया। खल खिमव यहाँ स। क्या यहा बठकर चाट देवन क मिया तुभ कुछ और बाम नहा है ?

प्रठारह

मैं सुनता हूँ कि बापू बीमार हैं ।

—मजनु न अपना पिता के चौक में पर रखने हुए कहा ।

स्वमणा न मिर हिना दिया ।

सजनु बरामद में अपने पिता का घुराई उत हुए सोन दक्कर पजा पर जनन नगा और चकाचौंध से अधा मा हावर अपना माँ का टटा जन नगा ।

स्वमणा न उमकी मन की बान जानने हुए कहा— वह तो मन्दि गई है ।

जिम दरवाज की मजनु खुला छाया था उसमें हावर गम नू का एक थपेला अन्तर आ गया और स्वमणा न साचा कि उमक भाई का अवश्य प्याम नगी होगा । इसलिए उसने पीतल की थाली में आग गूधना बदलकर अपने हाथ धोए और तबड़ी की रई से उसने दिए दही बिरोना गुरवर लिया ।

सजन कब से घर बापिम लौटना चाहता था । उमने चारा तरफ ग्ला और फिर निराग होकर बैठ गया । कोई उमक मन की बान सुनने का न था चाह उमका अपना जी था कि वह घंटा बस बाने हा करता जाय । हमारा का तरह उमने अपनी बहिन को एक माग्य न समझा क्याकि उमक विचार में वह पुम्पा के सार बारतापूण बायों और साग माहम भना याना का बन्नी समझ सकता था ?

स्वमणा न अपने नाई का अपना आगवा का बारा मग्गा । वह

उस पहन म दुवना दिमा दिया । गायद उस चमि परीक्षा ने जिमम
म बट गुजरा है उस पवित्रक दिया है—रक्मणी न साचा ।

‘क्या बापू का तबियन बहुत खराब है ?’ उसन जरा भारा आवाज
म पूछा ।

उस तुलार चला है । — बढका न उत्तर दिया ।

अन्दा—वह अब पहन म लाव हा जाएगा अगर उस पना वन
जाय कि मैं जगिम आ गया । मैं उन मजका मना क तिरा छा
आया हूँ ।

मजनु की आवाज म गुम्मा या श्रार रक्मणी का जा य साचना
था कि वह चला गया है उस समय का मजनु पहन वान मननु म
झिन न ला । उस मन्सूम ह्या य ला बनी है—बन्ना नहीं है ।

मजनु बाना— गाव म अता विराजत है और नीच जानि क
सना म रक्त है । मैं दगा कि जिनता काम हम करत हैं उसका मज
नूरा बहुत कम है । दूनामिह का ला गया की जन्त है और वह भा
अना मनन माया करन क तिरा ।

उकिन रक्मणी धम मठ जानना चाहता था कि रक्म का म
मा क माय नीर भाग है या नहीं ।

मजनु अपनी वहिन क मन म अ विचारा का पात्रना म समझ
जाता था । उसन क—

व मड क गव मधे और उन्नु हैं । वह बिना किमा ताम क गर
बार की मवा करन र सक्त है पर हमारा मानान महा जिनम
भाज तव किमा क माग मिर नर्ण मचाया ।

मजनु क बाना क बेंग न पिना का अचानक तगा दिया ।

कौन है वही ? ? कौन ?

रक्म न उत्तर दिया— मैं न बापू मजनु । वह रक्म और चार
पा व पाग जाकर नर रगा । उसन पूर जिम क रक्म तान गु
करा ।

भगवान् ! तुझे बड़ी उम्र ने मरा ! — गकुरमिह न बड़ हुए गल स कहा । फिर वह गाँवा बनाम थूका और यन् कहता हुआ पीछे लट गया—

तो तुम नीचे आए ।

बापू व सा छनकर रह हैं । पर्यग व सान्न की मञ्जुरा वन्न थानी है ।

बटा—मैं तो जानता = कि वन् चार घूनामिह तो श्रीरा का दीनत व वन पर राजा बना है । — गकुरमिह न कहना गुन् किया और कहना रहा—

बटा यह सरकार तो नाच गाँवा की है न कि हम जमानरा का । मारा दहती गहर म वे और करत क्या हैं ? विधान पर बहम और कम हरिजना की ऊँची जाति वाला म रक्षा की जाय । पहल जमान म रन म और डावो म बातचात हानी थी—वपा मूल और काम व धार म । पर आज य नाचा जाति व लोग घमण् म फूँने और जम्हाँ पत हुए बन् रहन हैं क्याकि एग बर कियुग म मनुष्य न ई-बर म बिबाम रखत है न अपन स ऊँच गाँवा म । अछा हुआ उनक घर वकी प्रकाप स जनकर राख हा गए । अब एग न्नि सार चमारा और जानि बिहीना पर विजती टूट पन्ना ।

बटा तू न ठाक किया । आग म म बचकर निकल आना आमान है । पर दुष्टता म बचकर भागना मुश्किल है ।

स्तन म भगवती आ गई । घर म घमन हा मजन का दय वन् चित्ता पन्—

हाम ! मरा बटा ! यन् कन्ना एन् वह तजो म कन्म वन्कर मजन की धार भागा ।

वन् न मा व परा का धून नी और उमक चरण पकड़ लिए ।

अब भगवती अपन पनि व पनेंग व किनार बठ गन् और रोने लगी ।

‘बकरा की तरह मैं-मैं भटक-र । यह तो उन दुष्टों से पिछ छुड़ा
कर धाया है । ठाकुरमिह न टाँटते हुए कहा ।

उमन कहा— मैं तो खुशी के आँसू से रहा हूँ । —और वह फिर
रा पड़ी ।

हाँ । —मजनु न दिलासा लिया । माँ-बाप और बच्चे का चम
बहुत हुई हम महानुमति की गंगा की घाटा का दम खमणों की आँखों
भा आँसुओं से भीग गई ।

जस हा खमणों ने अपने आपका समाला उसका माँ ने चिल्लाकर
कहा—

‘इस छाछ दे दे । तुझे क्या हुआ रा ?

‘गाम’ यह लछमन के लिए रो रहा है । सजनु वाला । पर
जब तक मैं जिन्ना हूँ वह हस्तका न ब्याह सरगा ।’

‘ममणा बड़ी सावधानी से आगे आइ उमके शब्दों पर टिठका
और फिर छाछ का गिरास न लिया । नकिन अब उसके पर लहलहा
गए और वह दूध-सी गई । उमने अपने सिर को और अपना निमकिया
का अपनी माँ को गाल में छुसा लिया ।

अंतिम

भिक्षु के दोनो गानो पर गम गम न थपड मार रही थी। बिल्कुल वस हा जस उसकी मा उसका जब वह छोटा बच्चा था भ्रमर मारता थी। लेकिन वह पत्थरों के आगिरी डर को तोड़न पर डटा था। उन पत्थरों का जिनको बड़े पेट का धुआँ छोड़न वाला गज कायी इजन सहक के रूप में बन्द रहा था।

बड़े तो ममतापूर्ण और कुरबानीकर देन बाने होत हैं और उह जसा कहा जाय मान नत हैं। नदमी न अपनी फम की भापडी के पास टोकरो बनाने बनाते अपनी बात को दोहराते हुए कहा।

और फिर तुम तो ऐसा नाम है जिस पर बट्टा नहीं लगना चाहिए। हम जमीनार न सेवक हैं और अब अगर उसन तुम्हे बुतामा है तो तुम्हे जाना चाहिए।

पत्थरों का बड़-बड़ डर पर बठा हुआ भिक्षु हथौड़े को एक त्रम से चला रहा था। उस उद्वग्न बानी छोटी धान ककड़िया की कोई चिन्ता न थी क्योंकि पिछले दिना में उसन सफाई में पत्थर तोड़न की कला में दक्षता प्राप्त कर ली थी। वस वह अपनी माँ के गानों के जहरीले विचित्रता से दूर भागना चाहता था और साथ-साथ मई के मूय की भयानक अग्नि से जो कि उसका खापडी को खान का भस्म कर रही थी—क्याकि कीकर का पद और उमकी पगनी की भीनी छाया उमकी रक्षा न कर सकती थी।

हमारी इज्जत और भनाइ इन ऊँची जाति वाला पर निर्भर है।

माँ न फिर उठसाया। हम केवल घूलीसिंह स हा अन्द्रे सबध नहीं रखन हैं बल्कि जमादार ठाकुरसिंह स भा रखने हैं।

भिक्षु न घूल और बलगम स भरा गम सात अदर मीचा और फिर गस्त व सढे स अपनी भावनाया का विष उपल दिया। फिर भा बड़वाह का वाप बचा रहा और उसन वना—

नाग न हो यह कहें कि तुम न सिफ सबरदार घूलीसिंह का रखन हो बल्कि सरपच ठाकुरसिंह की भी।

भिक्षु भगवान तुम ऐस न कहन पर मौत दे। तू कमा न पनप। भाँ बोली।

भिक्षु उठा अपनी कमीज की घूल भाड़ी और उस बड़ पत्थर को हगन लगा जिम बह ताडना चाह रहा था।

अगन डर स दमरथ न पुकारा—

धरे तू तो सतमकर चुका। मुझे पीछे मन छोड जाना। मैं तरे माय भा रहा हूँ।

ओ भिक्षु!—और मैं भी भा रहा हूँ। बाबू भी चिल्लाया—
मुह स पिचकारी छोडन की भी आवाज वग्त हुए।

भैग गिबानम न बीच स बात बाटी— लेकिन अभी तो दिन सुपन स एक घंटा बाकी है।

जवाहर लाल का नाम ना और काम करत जाओ। भिक्षु न जवाब दिया और इस पवित्र वाक्य स भर जोन व साथ उसन अपने सामने व पत्थर को उठाया और उस वहाँ से दूर फेंक दिया। वह उस स्थान स जरा परे गिरा जहाँ उसको डानना था इसलिए उसने पत्थर का अपने छात्र और गाँठ पड़ी हथेलिया से हिलाकर ठीक किया। फिर वह बठ गया अपने हाथ पर थूका हथोडा उठाया और अपने काम पर लग गया।

एक रात उसन मूष की घनी धुंध स से गुडगवि की घोर देखा। गुडगावा जियम परे भी देहली—लाल मिट्टी की भूमि का यमुना के

किनारे बसा नगर ।

अगर तू अपना धम त्यागेगा तो तुझ पर ईश्वर का प्रकोप गिरेगा । नदमी ने हारकर कहा । एक ऐसी मुर्गी की तरह—जा अपने बच्चे का चोच मारकर विवग करने का प्रयत्न करे कि वह दाना सलाह करे और आस-पास कुछ भी न हो ।

नगी रेतीली मिट्टी पर अपनी माँ से परे बड़े हुए उसने उसके गालों की गूँज अपने कानों में सुनी और वह झभला पड़ा । उस लगा कि क्रोध की चिन्तारियाँ उसके गरीर से उठ रही हैं ।

कहत कबीर सुनो भई साधो —उसने अपने मह में गुनगुनाना शुरू कर दिया पर उसने नय को भागे न बढाया । बस गुनगुनाने से उसमें और जोश आ गया और उसने पत्थर पर और ज्यादा जोर से चोट लगाई ।

वाह वाह ! वह स्वयं ही अपनी अधूरी नय पर हसा ।

वहाँ बड़े-बड़े उसे यह भी महसूस हुआ कि पत्थर उसके गुस्से में अधिक और उसकी श्रद्धा से कम प्रभावित हो रहा है और आत्मसमर्पण कर रहा है । उसी समय इजीनियर गुनसी के इन्जन की सीटी सुनाई दी तो उसका चेहरा गव से चमक उठा । आखिर सड़क बन गई और सस्पेंच ठाकुरसिंह न भी घायद समझ लिया है कि घट्टत भी उतना अच्छा कामकर सकते हैं जितना कि मुजातीय हिंदू । उन लोग का जीवन जिनके घर जना दिए गए थे खेता में—उन्हीं के खेता में—बनाई हुई नई फूस की भोंपड़ियों में अगडवाई ल रहा था । बच्च चीख रहे थे और मामा का खान के लिए राकर बुला रहे थे । दूसरी ओर धीरना के गीता की कोमल लय उन ह्यूडो की खन-खन में खो जाती जो सड़क के लिए पत्थरा की काया पनकर रह थे । और धक धक करती मशीन की चीखें और सीटियाँ एक रेनवे इन्जन के निमंत्रण जसी सुनने वाले का दूर—कही दूर—जाने का मदन देती ।

कहत कबीर । उसने फिर स्वाम में बोलने का प्रयत्न किया

पर उसके गुच्छ मुह से कोई श्वाभ न निकला। उसकी लापडो विचारा की चाट से इतनी तजी से टुकड़े-टुकड़े हो रही थी जितना कि पत्थर की आत्मा भी नहीं।

उमने पत्थर के सिने पर हथौड को हाथियारी से टिकाया उसक किनारा के बटाव का दखा और समझ गया कि इसका प्राकृतिक रूप तो अपने अंतिम क्षणों में है। फिर उसने उसे पसटा और एक घाटी पर बार-बार चोट मारी। कुछ चारों और और पत्थर न हाथियार डाल दिए।

वह लड़ा हो गया हथौड का जमीन पर गल दिया और अपने पाँच फुट छ इंच के बट के फलाव में पल गया। अब वह गोबरधन तक का सौ हाथ का फासला तय करने लगा।

भिक्षु ओ भिक्षु! — यादू न उसके पीछे पुकारा।

लेकिन भिक्षु गम, रेतीली और रगिस्तानी मिट्टी पर जो सता के वर्णित जनत हुए नरक की घरातन की तरह थी—भागा जा रहा था। उमने सोचा यदि यम के राज्य को कोई पारकर सता गाबरधन का मामा पर पहुँचता है। गाबरधन—वह गाँव जा देवताओं में भी सब त्रेष्ठ देवता न बनाया था। उसका लहू रामान्व से बजन गया—सूख खून की कुछ ही बूँदें ही तो बचा थी, जिसके इधन से उसका जीवन का इजन जमीनार के घर तक पहुँचने तक चनाना था। क्याकि सरपन्व न उगे मुनाया है वह भी अपना कृतव्य निमाणा। वह जाएगा और उममें मिलगा और यह उसकी माँ के लिए आश्चय का कारण होगा।

जमे हो वह छोटी गला के पास पहुँचा जिसके किनारा पर बाँट दार आड़ियाँ थीं जो जमीनार के घर की रक्षा बनावई गई थीं उस एक भावस्मिक घत प्ररणा हुई। वह उस बड़ी हवेली में पानी भी माँग लगा क्योंकि वह तो आज इतना प्यासा था जितना पहने कभी न था। अगर उहाने पीन की पानी देनिया ता उस निश्चय हो जाएगा कि

जमींदार ठाकुरसिंह का घर उसने प्रति कसा अनभव करता है—अब जब कि सड़क लगभग पूरी बनकर तयार हो चुकी है। और फिर उस उस खमणों के दान भी हो जाएंगे जिसका गरार सूरजमुखा के फल की भांति था जिसकी उस बन्नी हवेली के पिछले भाग में सावधाना से रखवानी की जा रही थी ।

भिक्षु नक्काशी किए हुए बड़े दरवाजे से जमींदार की हवेली में घस गया । बड़े कमरे में काई न था । उसने माँचा भाग्य उसका साथ है ।

कहत कबोर सुनो । —वह गुगुनाने लगा जैसे कि सन कवि के नाम तन से हो वह हर व्यक्ति में टक्कर लेने में समर्थ हो जाएगा ।

फिर उसने दरवाजे का कुंठा छटखटाया और आवाज लगाई—
ठाकुरसिंह जी ! सरपन्च जी ! मैं हूँ जिससे आप मिलना चाहते थे ।

कौन है वहाँ ? —अन्दर की कोठरी में एक भारी भरकम आवाज आई ।

मैं हूँ भिक्षु—हरिजन ! —उसने उत्तर दिया । मुझ पाने का पानी चाहिए । भिक्षु जान गया था कि खमणों की माँ भगवती अन्दर में बोन रहा थी ।

इस कुछ पाना दे दो । —एक घड़ी पर सहानुभूति से भरा दमरी आवाज ने कहा । अब भिक्षु समझ गया कि यह जमादार ठाकुर सिंह का आवाज थी । फिर भिक्षु ने सुना ठाकुरसिंह कह रहा था—
बेटा ! मैं अभी आया ।

खमणा भातर का रमाई की छाया में रख घड़ा का आर गई और पीतल का एर प्याला पानी से भरकर बड़े कमरे में च आई । पिछले महाना में भिक्षु का कमा साहस ने हुआ था कि जमाने का लम्का के चहर को एक नजर भी देख सके । उसने पीतल का प्याला ल लिया । वह भूत-मा गया कि वह क्या स्वीकारकर रहा है धत्कि उसने खमणों का धोर टक्करी लगाकर दिया । खमणों भिक्षु की

उसस्त्रियि के प्रति सचेत थी। उसका सपाट चेहरा चूहे के पाम बठने व कारण ताप से लाल था। उसने भिक्खु को अपनी बड़ी-बड़ा आवाज में टटोला, और जब ही उसने पहचाना कि यह तो भिक्खु है, वह गमा गई और अपनी आंखों पर दुपट्ट का धूँट खांच लिया।

उसी समय दयाली व मामन वाली कोठरा में से एक और आवाज आई—

कौन है ?

मैं पीन का पानी चाहिए।' —स्वमणा ने उत्तर दिया।

हैं ! —भिक्खु चमार ? —ठाकुरसिंह का लडका सज्जु लौटता था आया और वाला। उसका हाथ में ताग की बाजी थी।

और तूने इस पोतल के प्याले में पानी दे दिया। मुख वहीं की। और उसने तपकर भिक्खु के हाथ में पकड़ प्याल का ठाकर मार दी।

प्याला उछलकर बड़े कमरे में गिरा और उसका पानी अछल भिक्खु के मुँह पर गैस पन गया जब बगान परिश्रम के बाद पसीना।

तू पीतल का प्याला बने छ मक्ता है ? क्या तुम्हें अपनी आँखात का कोई ध्यान नहीं ?

मैं मून गया था। —भिक्खु ने दब स्वर से उत्तर दिया।

सज्जु ने अपनी बहिन का डाँटन हुए कहा— क्या इसकी भाव में पानी नहीं डाल सकती थी तू ? पगला।

इतने में उसकी माँ भी बागरी से निकल आई और कहा— हाथ ! हम घरबाद हो गए।

हम तो मारा घर छुट्ट करना पड़या। —सज्जु भातम करने हुए बोला। उसी समय अन्दर में सज्जु के मित्र दयागाम ने चित्लाकर कहा— मारा माते का जान से मार ला इसको।

थोड़ा गया क्या बसा दिया है इनके लिये आममान पर चढ़ गए हैं। रामनिबाम की आवाज सुनाई दी। पर ठाकुरसिंह बोला— भर ! मैं इस यहाँ बुलाया है। मैं इसने बाल करना चाहता हूँ।

सज्जनू ने फिर कहा— ठहर जाओ—मैं बताता हूँ वापू का कि इसने क्या किया है। इसकी तो गाँव से मारकर भगा दिया जाएगा— पागल कुत्त की तरह। प्याना दूषितकर दिया है।

भिक्षु जो अब तक चुपचाप था उठ खड़ा हुआ। उसने अपने हाथ ऊपर उठा लिए। वह बंद में सज्जनू की ऊँचाई तक उठ गया और उसे लगा कि वह तो जमींदार के सड़के से उच्चतर है।

उसने सज्जनू को संबोधितकर कहा— क्योंकि तूने अपनी जिंदगी में कभी काम नहीं किया—तुझे क्या पता प्याम क्या हाती है ?

उस क्षण भिक्षु का मन किया कि वह सज्जनू पर वरम पड़। पर एक दम उसे याद हो आया कि वह तो एक भ्रष्ट है चमार है। उसने अपने आप को तगाम लगा ली।

देखा तुमने इस बदमाश को ? गुस्ताखी देखी तुमने इसकी ? सज्जनू अपने साथियों को संबोधितकर बोला।

यह सुनना था कि भिक्षु फिर अपने पूरे बंद की ऊँचाई तक फल गया—इतना कि जमींदार का बेटा भय से पीछे की दुबक गया। तब भिक्षु ने मन में उसे नमस्काया कि उस एक हाथ से बार करन से पहले ही पीछे लौट जाना चाहिए।

उसने अपने बड़े हुए होठ पर से नहू का दाग पाखा और स्वच्छा से पीछे मुड़ गया। फिर वह अपना थक निगल गया और बड़ कमरे से बाहर निकल आया। उस समय उसके पाव अपने घर की ओर न थे। वह सहज-बुद्धि से उस सड़क की दिशा में चल गया जिसके बनान में उसका योगदान था। पर उसकी आत्मा की जिज्ञा दूसरी ही थी। वह थी गाँव के बाहर गुडगाँव की ओर जहाँ से देहली जान का रास्ता है। वही देहली जो हिंदुस्तान की राजधानी है। जहाँ कोई नहीं जानना कि वह कौन है और जहाँ कोई न सुजानीय हैं न कोई जाति विहान भ्रष्ट। सब बराबर हैं।

